हिंदी पुस्तक – ९

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਦੁਆਰਾ ਮੁਫ਼ਤ
ਦਿੱਤੀ ਜਾਣੀ ਹੈ ਅਤੇ ਵਿਕਾਊ ਨਹੀਂ ਹੈ।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2021-22 .... 2,16,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation,
reproduction and annotation etc., are reserved with
the Punjab Govt.

लेखन व सम्पादन : डॉ० हरमहेन्द्र सिंह बेदी
: डॉ० सुनील बहल
: डॉ० मीनाक्षी वर्मा
संशोधन : डॉ० नीरू कौड़ा
विषय संयोजन : श्रीमती मनजीत कौर
चित्रांकन : श्री गुरदीप सिंह 'दीप'
: श्री मनजीत सिंह

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का जाली प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत ग़ैरकानूनी है।
(पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ पर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित तथा एच.टी. मीडिया लिमिटेड, ग्रेटर नौएडा द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केंद्रित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन. सी. एफ.), 2005 तथा पंजाब पाठ्यचर्या की रूपरेखा (पी. सी. एफ.), 2013 सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी की आठवीं कक्षा तक की पाठ्य-पुस्तकों का नवीकरण किया जा चुका है।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक 'हिंदी पुस्तक-9' को चार भागों में बाँटा गया है— कविता भाग, कहानी भाग, निबंध भाग तथा एकांकी भाग। विषय वस्तु में विविधता तथा नवीनता है। पाठों का चयन विद्यार्थियों के बौद्धिक व मानसिक स्तरानुकूल किया गया है। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति के साथ-साथ पंजाब के गौरव व संस्कृति को विशेष रूप से स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त पुस्तक में नशामुक्ति, एड्स, उपभोक्ता जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण आदि विषयों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी मानवीय मूल्य को विकसित करता ही है। विद्यार्थियों में सत्य, धर्म, कर्मठता, साहस, परिश्रम, त्याग, चरित्र, न्याय, देशभक्ति आदि गुणों का संचार करने के साथ-साथ वैज्ञानिक व तार्किक दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में पाठ के अभ्यास से पूर्व कठिन शब्दों के अर्थ दिए गए हैं ताकि विद्यार्थी विषय को सरलता से समझ सकें तथा उनका शब्द भंडार बढ़े।

पाठों का चयन जितना महत्वपूर्ण होता है, उनका अभ्यास कार्य भी उतना ही महत्व रखता है। अभ्यासों को निम्नलिखित शीर्षकों से प्रस्तुत किया गया है —

(क) विषय बोध : 'विषय बोध' शीर्षक के अंतर्गत बोधात्मक प्रश्नों को प्रधानता दी गयी है। विद्यार्थियों को एक-दो, तीन-चार तथा छः-सात पंक्तियों में उत्तर लिखने के लिए कहा गया है ताकि वे पाठों के अर्थबोध, आशय आदि को स्पष्ट कर सकें।

(ख) भाषा बोध : इसके अंतर्गत पाठ्यक्रमानुसार व्याकरण की इकाइयों को व्यावहारिक रूप से शामिल किया है। व्याकरण के अंतर्गत पूछे गए प्रश्न पाठों पर आधारित हैं। इसके साथ ही यथोचित स्थान पर मुहावरे, लोकोक्तियों तथा पंजाबी से हिंदी में अनुवाद को भी शामिल किया गया है।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति : विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता व सृजनात्मकता का विकास करने के उद्देश्य से ही रचनात्मक अभिव्यक्ति को अभ्यास का अंग बनाया गया है। इससे विद्यार्थियों को स्वाभाविक रूप से चिंतन व मनन करके अपनी अभिव्यक्ति को सरल व सीधे ढंग से प्रकट करने का अवसर मिलेगा। इससे उनकी लेखन प्रतिभा का विकास होगा।

(घ) पाठेतर सक्रियता : इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को पाठ से जुड़ी गतिविधियाँ करने का सुअवसर मिलेगा। इससे उनका पाठ से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित होगा तथा विषय में रुचि बढ़ेगी। इन क्रियाओं से उनकी रचनात्मकता बढ़ेगी व कल्पनाशक्ति को नई उड़ान मिलेगी।

(ङ) ज्ञान विस्तार : इसके अंतर्गत पाठ्य विषय से सम्बन्धित वाँछित अतिरिक्त जानकारी दी गयी है जिससे विद्यार्थी तथा अध्यापक दोनों वर्ग लाभान्वित होंगे।

परीक्षा में केवल विषय बोध व भाषा बोध से सम्बन्धित प्रश्न ही पूछे जायेंगे । पाठ्येतर सक्रियता, रचनात्मक अभिव्यक्ति व ज्ञान विस्तार का उपयोग विद्यार्थी की प्रतिभा निखार हेतु सी.सी.ई. के अंतर्गत किया जाये ।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में समर्थ सिद्ध होगी एवं विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास करने में सहायक सिद्ध होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अध्यापकों एवं अभिभावकों द्वारा भेजे गए सुझाव बोर्ड द्वारा साभार स्वीकार किए जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

'ਸਮਾਜਿਕ ਨਿਆਂ, ਅਧਿਕਾਰਤਾ ਅਤੇ
ਘੱਟ ਗਿਣਤੀ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ'

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ		पृ.सं.
	कविता भाग		
	पाठ	**रचनाकार**	
1.	कबीर दोहावली	कबीर	1
2.	सूरदास के पद	सूरदास	6
3.	कर्मवीर	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	12
4.	झाँसी की रानी की समाधि पर	सुभद्राकुमारी चौहान	19
5.	मैंने कहा, पेड़	अज्ञेय	28
6.	पाँच मरजीवे	योगेन्द्र बख़्शी	34
	कहानी भाग		
7.	पंच परमेश्वर	मुँशी प्रेमचन्द	42
8.	पाजेब	जैनेंद्र कुमार	61
9.	दो हाथ	डॉ० इन्दु बाली	86
10.	साए	हिमांशु जोशी	98
11.	वह चिड़िया एक अलार्म घड़ी थी....	गोविंद कुमार 'गुंजन'	112
	निबंध भाग		
12.	नींव की ईंट	श्री रामवृक्ष बेनीपुरी	125
13.	हिम्मत और ज़िंदगी	रामधारी सिंह दिनकर	134
14.	महान राष्ट्रभक्त: मदन लाल ढींगरा	प्रो० हरमहेन्द्र सिंह बेदी	145
15.	एक अंतहीन चक्रव्यूह	डॉ० यतीश अग्रवाल	156
16.	बचेंद्री पाल	बचेंद्री पाल	171
17.	कैसे बचें उपभोक्ता धोखाधड़ी से	ललिता गोयल	181
	एकाँकी भाग		
18.	शिवाजी का सच्चा स्वरूप	सेठ गोबिन्द दास	191
19.	प्रकृति का अभिशाप	श्रीपाद विष्णु कानाडे	204

कविताभाग

कबीर

(सन् 1398–1518)

कबीर संत काव्य–धारा के प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। इनके जन्म और मृत्यु को लेकर अलग–अलग मत मिलते हैं। फिर भी अधिकतर विद्वान कबीर का जन्म सन् 1398 में तथा निधन सन् 1518 में स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार इनके परिवार व वंश को लेकर भी कई अटकलें लगायी जाती रही हैं। चर्चित तथ्यों के आधार पर इनके पोषक के रूप में नीरू और नीमा जुलाहा दम्पति का नाम लिया जाता है। इनका अधिकांश जीवन काशी में बीता।

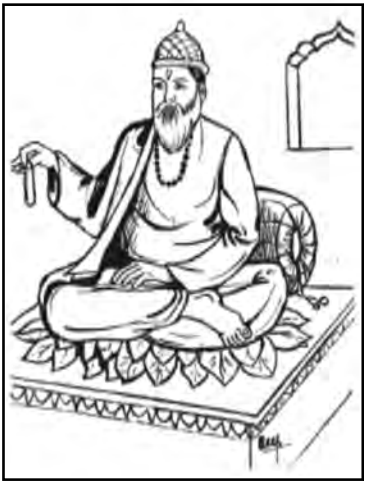

रचनाएँ : कबीर निरक्षर थे। उन्होंने स्वयं कोई रचना नहीं लिखी। उन्होंने जीवन के अपने अनुभवों को ही मौखिक तौर पर कहा। उनके शिष्यों ने उनके निधन के बाद उनके उपदेशों को रचनाओं के रूप में संकलित किया जो कि 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसके तीन भाग हैं— साखी, सबद और रमैनी। साखी दोहों में लिखी गयी है। 'साखी' साक्षी (गवाह) शब्द से बना है। कबीर की भाषा में ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि का मिश्रण मिलता है।

पाठ–परिचय : प्रस्तुत पाठ में कबीर की उन साखियों का संग्रह किया गया है जो हमें धर्मानुसार सही–ग़लत का विवेक देती हैं और जीवन के सत्य को पहचानने की दृष्टि देती हैं।

कबीर दोहावली

साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साच है, ताके हिरदे आप।।

साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।
धन का भूखा जी फिरै, सो तो साधू नाहिं।।

जैसा भोजन खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी वाणी होय।।

संत ना छाड़ै संतई, जो कोटक मिले असंत।
चंदन भुवंगा बैठिया, तऊ सीतलता न तजंत।।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित हुआ न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सु पंडित होय।।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

जाति ना पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

कबीर तन पंछी भया, जहाँ मन तहां उड़ी जाइ।
जो जैसी संगती कर, सो तैसा ही फल पाइ।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांहि।
मनुवा तौ चहुँ दिशि फिरै, यह तो सुमिरन नांहि।।

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब।।

शब्दार्थ

साच = सच

हिरदे = हृदय

कोटक = करोड़

असंत = बुरा व्यक्ति

भुवंगा = साँप

सीतलता = शीतलता, अच्छाई

तजंत = छोड़ना

मुवा = मर गये

आखर = अक्षर

पंडित = विद्वान, ज्ञानी

तरवार = तलवार

म्यान = तलवार रखने का खोल (कवर)

चूप = चुप्पी, मौन

कर = हाथ

मनुवा = मन

चहुँ दिशि = चारों दिशाओं में, चारों ओर

सुमिरन = स्मरण

काल्ह = कल (आने वाला)

अब्ब = अब

परलै = विनाश, मृत्यु

बहुरि = फिर

कब्ब = कब

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) कबीर के अनुसार ईश्वर किसके हृदय में वास करता है ?

(*ii*) कबीर ने सच्चा साधु किसे कहा है ?

(*iii*) संतों के स्वभाव के बारे में कबीर ने क्या कहा है ?

(*iv*) कबीर ने वास्तविक रूप से पंडित/विद्वान किसे कहा है ?

(*v*) धीरज का संदेश देते हुए कबीर ने क्या कहा है ?

(*vi*) कबीर ने सांसारिक व्यक्ति की तुलना पक्षी से क्यों की है ?

(*vii*) कबीर ने समय के सदुपयोग पर क्या संदेश दिया है ?

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(*i*) जैसा भोजन खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी वाणी होय।।

(*ii*) बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

(*iii*) जाति ना पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

(*iv*) अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

(*v*) माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांहि।
मनुवा तौ चहुँ दिशि फिरै, यह तो सुमिरन नांहि।।

(ख) भाषा-बोध

निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए—

शब्द	वर्ण-विच्छेद
बराबर	ब् + अ + र् + आ + ब् + अ + र् + अ
भोजन	______________________
पंडित	______________________
म्यान	______________________
बरसना	______________________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. पुस्तकालय से कबीर के दोहों की पुस्तक लेकर प्रेरणादायक दोहों का संकलन कीजिए।
2. कबीर के दोहों की ऑडियो या वीडियो सी.डी. लेकर अथवा इंटरनेट से प्रातःकाल/संध्या के समय दोहों का श्रवण कर रसास्वादन कीजिए।
3. कैलेण्डर से देखें कि इस बार कबीर-जयंती कब है। स्कूल की प्रातःकालीन सभा में कबीर-जयंती के अवसर पर कबीर साहिब के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा कबीर पर निर्मित फ़िल्म देखिए।
5. 'मेरी नज़र में : सच्ची भक्ति' इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(घ) ज्ञान-विस्तार

कबीर के अतिरिक्त रहीम, बिहारी तथा वृन्द ने भी अनेक दोहों की रचना की है जो कि बहुत ही प्रेरणादायक हैं। इनके द्वारा रचित नीति के दोहे तो विश्व प्रसिद्ध हैं और हमारे लिए मार्गदर्शक का काम करते हैं। इन्हें पढ़ने से एक ओर जहाँ मन को शाँति मिलती है वहीं दूसरी ओर हमारी बुद्धि भी प्रखर होती है।

सूरदास

(सन् 1478-1583)

सूरदास भक्तिकाल की सगुणधारा की कृष्ण-भक्ति-शाखा के प्रमुख भक्त कवि के रूप में जाने जाते हैं। इनके जन्म-स्थान एवं जन्म-काल के बारे में मतभेद हैं। अधिकतर विद्वानों का मत है कि इनका जन्म सन् 1478 ई. में दिल्ली के निकट सीही ग्राम में हुआ था। महाप्रभु वल्लभाचार्य के द्वारा उन्हें वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित किया गया। इनके जन्म से अथवा बाद में अंधे होने के विषय में अलग-अलग मत हैं। हिंदी-साहित्य के इस महान कवि का निधन सन् 1583 ई. में मथुरा के पास पारसौली ग्राम में हुआ।

रचनाएँ : वैसे तो सूरदास की लगभग 25 रचनाएँ मानी जाती हैं किंतु आधुनिक आलोचकों ने पर्याप्त अनुसंधान के बाद इनकी तीन रचनाओं को ही प्रामाणिक माना है। ये तीन रचनाएँ हैं :

1. सूरसागर 2. सूरसारावली 3. साहित्य लहरी

पाठ-परिचय : प्रस्तुत संकलन में महाकवि सूरदास के वात्सल्य भाव से सम्बन्धित पद लिए गये हैं। पहले पद में यशोदा श्रीकृष्ण को पालने में झूला झुलाकर और लोरी देकर सुला रही है। श्रीकृष्ण कभी पलकें मूँद लेते हैं तो कभी व्याकुल हो उठ जाते हैं; तब यशोदा फिर से उन्हें सुलाती है। दूसरे पद में यशोदा श्रीकृष्ण को दूर न खेलने जाने के लिए कहती है। तीसरे पद में माँ यशोदा श्रीकृष्ण को चोटी बढ़ने का लालच देकर बहाने से दूध पिलाती है तो श्रीकृष्ण चोटी न बढ़ने से चिंतित हैं। चौथे पद में श्रीकृष्ण माँ से गायें चराने जाने के लिए हठ करते हैं। इस प्रकार सभी पदों में वात्सल्य रस अपनी चरम सीमा पर दृष्टिगोचर होता है।

सूरदास की भाषा ब्रज है। अवधी और पूर्वी हिंदी के भी शब्द उनकी रचना में मिलते हैं। गीति-तत्व की विशेषता उनके पदों में साफ दृष्टिगोचर होती है।

सूरदास के पद

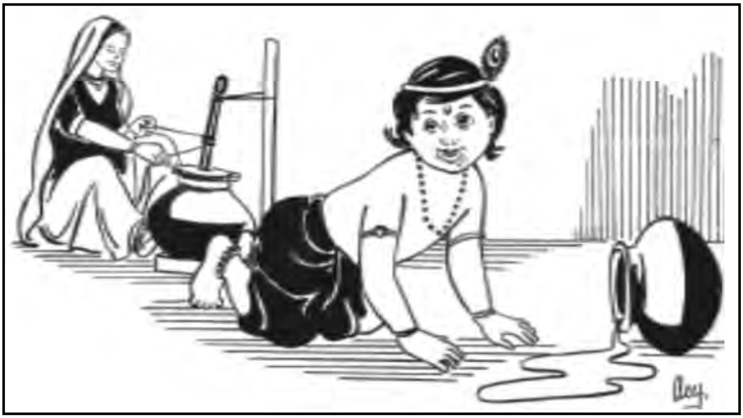

1. जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोइ कछू गावै।
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहै न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकों कान्ह बुलावै।
कबहुँक पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन व्है रहि रहि, करि करि सैन बतावै।
इहिं अंतर अकुलाई उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ, सो नंद भामिनि पावै।।

2. कहन लागे मोहन मैया मैया।
नंद महर सों बाबा बाबा, अरु हलधर सों भैया।
ऊंचे चढ़ि चढ़ि कहति जसोदा, लै लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनि जाहु लला रे, मारैगी काहु की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल, घर घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कों, चरननि की बलि जैया।।

3. मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी।
किती बेर मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूं है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, हवै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन-सी भुईं लोटी।
काचो दूध पियावति पचि पचि, देति न माखन रोटी।
सूरदास चिरजीवौ दोउ भैया, हरि हलधर की जोटी।।

4. आजु मैं गाइ चरावन जैहौं।
बृन्दावन के भांति भांति फल अपने कर मैं खेहौं।
ऐसी बात कहौ जनि बारे, देखौ अपनी भांति।
तनक तनक पग चलिहौ कैसें, आवत ह्वै है अति राति।
प्रात जात गैया लै चारन घर आवत हैं सांझ।
तुम्हारे कमल बदन कुम्हिलैहे, रेंगति घामहिं मांझ।
तेरी सौं मोहिं घाम न लागत, भूख नहीं कछु नेक।
सूरदास प्रभु कहयौ न मानत, पर्‌यौ आपनी टेक।।

शब्दार्थ

हलरावै	= हल्का सा हिलाना
दुलराइ मल्हावै	= प्यार करना
आनि	= आकर
सुवावे	= सुलाना
बेगहिं	= जल्दी
अधर	= ओष्ठ, होंठ
फरकावै	= फड़काना
मौन व्है	= मौन होकर
अंतर	= अंतराल, इसी बीच
अकुलाई	= व्याकुल होकर, परेशान होकर
महर	= पूज्य
काहु की	= किसी की
गैया	= गाय
बधैया	= बधाई देना
बलि	= बलिहारी
किती बेर	= कितनी बार
अजहूं	= अभी भी

बल	= बलराम	**हलधर**	= बलराम
बेनी	= चोटी	**जोटी**	= जोड़ी
लांबी	= लम्बी	**चरावन जैहौं**	= चराने जाना
काढ़त	= (बालों को कंघी से) संवारना	**खेहौं**	= खाऊँगा
		तनक तनक पग	= छोटे-छोटे कदम
गुहत	= गूंथना	**चलिहौ**	= चलकर
न्हवावत	= नहलाकर	**कुम्हिलैहे**	= मुरझाना
नागिन-सी	= नागिन जैसी	**घामहि**	= धूप
काचो दूध	= कच्चा दूध	**टेक**	= ज़िद्द, हठ

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) यशोदा श्रीकृष्ण को किस प्रकार सुला रही है ?

(*ii*) यशोदा श्रीकृष्ण को दूर क्यों नहीं खेलने जाने देती ?

(*iii*) यशोदा श्रीकृष्ण को दूध पीने के लिए क्या प्रलोभन देती है ?

(*iv*) श्रीकृष्ण यशोदा से क्या खाने की माँग करते हैं ?

(*v*) अंतिम पद में श्रीकृष्ण अपनी माँ से क्या हठ कर रहे हैं ?

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(*i*) मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी।
किती बेर मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूं है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, हवै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन-सी भुईं लोटी।
काचो दूध पियावति पचि पचि, देति न माखन रोटी।।
सूरदास चिरजीवौ दोउ भैया, हरि हलधर की जोटी।।

(*ii*) आजु मैं गाइ चरावन जैहौं।
बृन्दावन के भांति भांति फल अपने कर मैं खेहौं।।
ऐसी बात कहौ जनि बारे, देखौ अपनी भांति।
तनक तनक पग चलिहौ कैसें, आवत ह्वै है अति राति।
प्रात जात गैया लै चारन घर आवत हैं सांझ।
तुम्हारे कमल बदन कुम्हिलैहे, रेंगति घामहि मांझ।
तेरी सौं मोहिं घाम न लागत, भूख नहीं कछु नेक।
सूरदास प्रभु कह्यौ न मानत, पर्‌यौ आपनी टेक।।

(ख) भाषा-बोध

1. नीचे दिए गए सूरदास के पदों में प्रयुक्त ब्रज भाषा के शब्दों के लिए खड़ी बोली हिंदी के शब्द लिखिए—

ब्रज भाषा के शब्द	खड़ी बोली हिंदी के शब्द	ब्रज भाषा के शब्द	खड़ी बोली हिंदी के शब्द
कछु	कुछ	निंदरिया	____________
तोको	____________	कान्ह	____________
कबहुँक	____________	इहिं	____________
किति	____________	भुईं	____________
अरु	____________	तुम्हरे	____________

2. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पलक	____________	गोपी	____________
नागिन	____________	चोटी	____________
ग्वाला	____________	रोटी	____________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं के चित्र इकट्ठे करके अपनी कॉपी में चिपकाएँ।
2. जन्माष्टमी के अवसर पर मंदिर में जाकर श्रीकृष्ण की बाल-लीला से सम्बन्धित झाँकियों का अवलोकन कीजिए।
3. जन्माष्टमी के अवसर पर मंदिरों में बच्चों द्वारा श्रीकृष्ण की बाल-लीला से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उनमें भाग लीजिए।
4. जन्माष्टमी के अवसर पर रात को श्रीकृष्ण के जन्म की कथा सुनाई जाती है। वहाँ जाइए और कथा श्रवण कर रसास्वादन कीजिए अथवा टेलीविज़न/इंटरनेट से श्रीकृष्ण की जन्म-कथा को सुनिए/देखिए।
5. आप भी बचपन में दूध आदि किसी पदार्थ को नापसंद करते होंगे। आपके माता-पिता आपको यह पदार्थ खिलाने-पिलाने में कितने लाड-प्यार से यत्न करते होंगे। अपने माता-पिता से पूछिए और लिखिए।

(घ) ज्ञान-विस्तार

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल (सन् 1318—1643 तक) की कृष्ण-भक्ति-शाखा के प्रमुख कवि सूरदास माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त कृष्णदास, नन्ददास, रसखान जैसे प्रसिद्ध कवियों तथा कवयित्री मीराबाई ने भी श्रीकृष्ण को आधार बनाकर उत्कृष्ट काव्य की रचना की है। श्रीकृष्ण की भक्ति से ओत-प्रोत रसखान के सवैयों को तो विद्वानों ने सचमुच रस की खान ही कहा है। मीराबाई का हिंदी की कवयित्रियों में अप्रतिम स्थान है। मीरा द्वारा रचित श्रीकृष्ण-भक्ति के सुंदर व मधुर गीत जगत प्रसिद्ध हैं।

******

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(सन् 1865–1947)

अयोध्यासिंह उपाध्याय का जन्म 15 अप्रैल, 1865 ई० में निज़ामाबाद (ज़िला आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने अपने नाम-क्रम, 'सिंह' (हरि) तथा अयोध्या (औध) को बदलकर 'हरिऔध' उपनाम से साहित्य सृजन का कार्य किया।

रचनाएँ : इनके रचनाकाल के समय खड़ी बोली अपने शैशवकाल में थी, किंतु इन्होंने इस भाषा में रचनाएँ करके कमाल कर दिखाया। इनके काव्य-ग्रंथों में ऋतुमुकुर, पद्य-प्रसून, चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, वैदेही वनवास तथा प्रियप्रवास प्रसिद्ध हैं।

'प्रियप्रवास' इनका सबसे लोकप्रिय महाकाव्य है। यह खड़ी बोली हिन्दी का पहला महाकाव्य है। इसकी कथा श्रीकृष्ण के मथुरा-प्रवास से सम्बन्धित है। दीर्घकाल तक साहित्य सेवा के पश्चात् 16 मार्च, 1947 को इनका निधन हो गया।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत कविता में कवि ने कर्मशील लोगों के गुणों पर प्रकाश डाला है। कर्मशील व्यक्ति अपने मार्ग में आने वाली रुकावटों का निडरता से सामना करते हैं। वे अपने किसी भी काम में टालमटोल नहीं करते अपितु हर काम को समय पर करते हैं। कवि कहते हैं कि कर्मठ व्यक्ति कोरी बातें बनाने की अपेक्षा सचमुच कार्य करके दिखलाते हैं और दूसरों के लिए एक मिसाल पैदा करते हैं। इस तरह पूरी कविता में कवि ने कर्मठ व्यक्तियों की उत्तम विशेषताएँ बताई हैं।

कर्मवीर

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं
काम कितना ही कठिन हो किंतु उबताते नहीं
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही
मानते जो भी है सुनते हैं सदा सबकी कही
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही
भूल कर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं
यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिए
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।।

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर
वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठों पहर
गर्जते जल राशि की उठती हुई ऊँची लहर
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लपट
ये कँपा सकती कभी जिसके कलेजे को नहीं
भूलकर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।

शब्दार्थ

बाधा	= रुकावट, संकट	**दुर्गम**	= कठिन, जहाँ जाना मुश्किल हो
विविध	= विभिन्न प्रकार की	**शिखर**	= चोटी
बहु	= बहुत	**तम**	= अन्धकार
भाग	= भाग्य	**आठों पहर**	= हर वक़्त
उबताते	= उकताते, तंग आना	**भयदायिनी**	= डर पैदा करने वाली
नमूना	= उदाहरण, आदर्श	**नाकाम**	= असफल
व्योम	= आकाश		

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) जीवन में बाधाओं को देखकर वीर पुरुष क्या करते हैं ?

(*ii*) कठिन से कठिन काम के प्रति कर्मवीर व्यक्ति का दृष्टिकोण कैसा होता है ?

(*iii*) सच्चे कर्मवीर व्यक्ति समय का सदुपयोग किस प्रकार करते हैं ?

(*iv*) मुश्किल काम करके वे दूसरों के लिए क्या बन जाते हैं ?

(*v*) कवि ने कर्मवीर व्यक्ति के कौन-कौन से गुण इस कविता में बताए हैं ?

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(*i*) आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही
मानते जो भी है सुनते हैं सदा सबकी कही

जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही
भूल कर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।।

(*ii*) जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं
यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिए
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।।

(ख) भाषा-बोध

1. | **'क' (संस्कृत भाषा के शब्द)** | **'ख' (हिंदी भाषा के शब्द)** |
|---|---|
| **कर्म** | **काम** |
| **मुख** | **मुँह** |

उपर्युक्त 'क' भाग में 'कर्म' और 'मुख' शब्द संस्कृत भाषा के शब्द हैं। इनका हिंदी भाषा में भी ज्यों का त्यों प्रयोग होता है। इन शब्दों को 'तत्सम' शब्द कहते हैं। तत् + सम अर्थात् इसके समान। 'इसके समान' से अभिप्राय है—'स्रोत भाषा के समान'। हिंदी की 'स्रोत भाषा' संस्कृत है, अत: **जो शब्द संस्कृत भाषा से हिंदी में ज्यों के त्यों अर्थात् बिना किसी परिवर्तन के ले लिए गए हैं उन्हें 'तत्सम' शब्द कहते हैं।** जैसे : कर्म, मुख।

उपर्युक्त 'ख' भाग में 'कर्म' के लिए 'काम' व 'मुख' के लिए 'मुँह' शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये शब्द (काम, मुँह) संस्कृत से हिंदी में कुछ परिवर्तन के साथ आए हैं। इन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। तद् + भव अर्थात्

'उससे होने वाले'। 'उससे होने वाले' से अभिप्राय है—**संस्कृत भाषा से विकसित होने वाले। अतः 'वे' संस्कृत शब्द जो हिंदी में कुछ परिवर्तन के साथ आते हैं—उन्हें 'तद्भव' शब्द कहते हैं।** जैसे—काम, मुँह।

1. पाठ में आए निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

तद्भव	–	**तत्सम**
भाग	–	____________
आठ	–	____________
पहर	–	____________
आग	–	____________

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
1. **एक ही आन में**	—तुरंत, शीघ्र ही	____________
2. **फूलना फलना**	—सम्पन्न होना	____________
3. **मुँह ताकना**	—दूसरों पर निर्भर रहना	____________
4. **बातें बनाना**	—गप्पें मारना	____________

5. जी चुराना — काम से बचना

____

____

6. नमूना बनना — आदर्श/उदाहरण बनना ___________________

____

7. कलेजा काँपना —भय से विचलित होना, दिल दहल जाना _______

____

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. आपके अंदर कौन-सी ऐसी खूबियाँ हैं जो आपको दूसरों से अलग करती हैं ? उनकी सूची बनाइए। इन खूबियों को पुष्ट करते रहें तथा जीवन में इनसे कभी न डगमगाएँ।

2. आपके अंदर क्या कमियाँ हैं ? उनकी सूची बनाइए और अपने अध्यापकों/अभिभावकों/बड़ों की मदद से उन्हें दूर करने का प्रयास कीजिए।

3. अपनी दिनचर्या स्वयं बनाएँ जिसमें पढ़ने, खेलने/व्यायाम करने, खाने-पीने व सोने का समय निश्चित हो। (**नोट :** दिनचर्या बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि दिनचर्या कठोर न होकर लचीली हो) छुट्टी वाले दिन/दिनों की विशेष दिनचर्या बनाएँ जिसमें पढ़ने के अधिक घंटे हों।

4. लाल बहादुर शास्त्री तथा अब्दुल कलाम जैसे सच्चे कर्मवीर एवं दृढ़

संकल्पशील नेताओं की जीवनियाँ पढ़ें एवं उनसे प्रेरणा लें।

(घ) ज्ञान-विस्तार

गीता में कर्मयोग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कर्मठ व्यक्ति के लिए यह योग अधिक उपयुक्त है। गीता में स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। 2-47।।

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फल में कभी नहीं। इसलिए कर्मों के फल में तेरी वासना (इच्छा) न हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

अत : कर्मयोग हमें सिखाता है कि कर्म के लिए कर्म करो, आसक्तिरहित होकर कर्म करो। कर्मयोगी इसलिए कर्म करता है कि कर्म करना उसे अच्छा लगता है और इसके परे उसका कोई हेतु नहीं है। कर्मयोगी कर्म का त्याग नहीं करता, वह केवल कर्मफल का त्याग करता है और कर्मजनित दु:खों से मुक्त हो जाता है।

******

सुभद्राकुमारी चौहान

(सन् 1904–1948)

हिंदी कवयित्रियों में सुभद्राकुमारी चौहान का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म सन् 1904 की नाग पंचमी को प्रयाग (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। कहीं कहीं इनका जन्म सन् 1905 में लिखा हुआ भी मिलता है। इनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा–प्रेमी एवं उच्च विचारों के व्यक्ति थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रयाग में सम्पन्न हुई। इन्होंने क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की।

रचनाएँ : सुभद्राकुमारी चौहान को बचपन से ही काव्य से बहुत प्रेम था। इनके हृदय की भाँति इनकी कविताएँ भी सरल और निर्मल भावों से युक्त हैं। इनकी कविताओं के दो काव्य संग्रह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—'मुकुल' और 'त्रिधारा'। इनकी कविताओं में देश–प्रेम की भावना तथा वात्सल्य भाव का चित्रण विशेष रूप से हुआ है। 'झाँसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो बसंत', 'राखी की चुनौती' तथा 'जलियाँवाला बाग़ में बसंत' इनकी अत्यंत लोकप्रिय कविताएँ हैं।

देश के स्वतंत्रता–आंदोलन में भी इन्होंने बढ़चढ़कर भाग लिया। सन् 1948 में एक दुर्घटना में इनका निधन हो गया था।

पाठ–परिचय : प्रस्तुत कविता में 'झाँसी की रानी' की वीरगाथा है। उन्होंने अंग्रेज़ी सेना के साथ साहसपूर्वक मुकाबला करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। वह भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर सेनानी रही हैं। कवयित्री ने रानी की समाधि पर अपने स्नेह और श्रद्धा के पुष्प अर्पित किए हैं और समाधि में छिपी उनकी राख की ढेरी में भारत की स्वतंत्रता की चिंगारी को देखा है। कवयित्री को रानी की समाधि अति प्रिय है क्योंकि इसमें वीरांगना की स्मृतियाँ समाई हुई हैं जो हमें सदा प्रेरणा देती रहेंगी।

झाँसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी।।
यह समाधि यह लघु समाधि है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की।।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न विजय–माला–सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृति शाला–सी।।
सहे वार पर वार अन्त तक, लड़ी वीर बाला–सी।
आहुति–सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला–सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की भस्म, यथा सोने से।।
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतन्त्रता की, आशा की चिनगारी।।

इससे भी सुन्दर समाधियाँ, हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में, क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती, है वीरों की बानी।।

बुंदेले हर बोलों के मुख, हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मरदानी वह थी, झाँसी वाली रानी।।
यह समाधि यह चिर समाधि है, झाँसी की रानी की।
अन्तिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की।

शब्दार्थ

समाधि = चिता पर बनाया जाने वाला एक स्मारक
स्वतंत्रता = आज़ादी
दिव्य = अप्रतिम, अलौकिक
लघु = छोटी
अंतिम = आखिरी
लीला स्थली = जहाँ कार्य किया जाए
भग्न = टूटी-फूटी
विजय-माला = जीत की माला
संचित = इकट्ठी की हुई, जमा
स्मृति = याद
बाला = लड़की, युवती
ज्वाला = आग की लपट
मान = आदर-सत्कार
रण = युद्ध
मूल्यवती = मूल्यवान, कीमती
निहित = छिपी हुई
निशीथ = आधी रात
क्षुद्र = छोटे
गिरा = वाणी
हरबोले = बुंदेलखंड की एक जाति जो राजा-महाराजाओं का यशोगान करती थी।
चिर = सदा रहने वाली

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) समाधि में छिपी राख की ढेरी किसकी है ?

(*ii*) किस महान लक्ष्य के लिए रानी लक्ष्मीबाई ने अपना बलिदान दिया ?

(*iii*) रानी लक्ष्मीबाई को कवयित्री ने 'मरदानी' क्यों कहा है ?

(*iv*) रण में वीरगति को प्राप्त होने से वीर का क्या बढ़ जाता है ?

(*v*) कवयित्री को रानी से भी अधिक रानी की समाधि क्यों प्रिय है ?

(*vi*) रानी लक्ष्मीबाई की समाधि का ही गुणगान कवि क्यों करते हैं ?

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(*i*) यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न विजय–माला–सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृति शाला–सी।।
सहे वार पर वार अन्त तक, लड़ी वीर बाला–सी।
आहुति–सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला–सी।।

(*ii*) बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की भस्म, यथा सोने से।।
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतन्त्रता की, आशा की चिनगारी।।

(*iii*) इससे भी सुन्दर समाधियाँ, हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में, क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती, है वीरों की बानी।।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
रानी	— रानियाँ	माला	– ____________
समाधि	– ____________	शाला	– ____________
ढेरी	– ____________	चिता	– ____________
प्यारी	– ____________	ज्वाला	– ____________
चिनगारी	– ____________	बाला	– ____________
कहानी	– ____________	गाथा	– ____________

2. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सुतंत्रता	— स्वतंत्रता	आरति	– ____________
लघू	– ____________	स्थलि	– ____________
भगन	– ____________	आहूति	– ____________
मुल्यवती	– ____________	भसम	– ____________
कशुद्र	– ____________	कवीयों	– ____________
श्रधा	– ____________	जंतू	– ____________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. रानी लक्ष्मीबाई की पूरी जीवनी पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ें।
2. रानी लक्ष्मीबाई के अतिरिक्त दुर्गाभाभी (क्रांतिकारी भगवतीचरण वोहरा की धर्मपत्नी), झलकारी बाई, सुनीति चौधरी, सुहासिनी

गांगुली, विमल प्रतिभा देवी (भारत नौजवान सभा, बंगाल शाखा की अध्यक्ष) आदि की जीवनियों के बारे में पुस्तकों/इंटरनेट से जानकारी ग्रहण करें।

3. स्वतंत्रता सेनानियों से सम्बन्धित डाक टिकटों/सिक्कों अथवा चित्रों का संग्रह करें।

4. पंजाब के अमर शहीदों जैसे लाला लाजपतराय, भगत सिंह, करतार सिंह सराभा, मदनलाल ढींगरा आदि के बारे में पढ़ें व इनके जीवन से देशभक्ति की प्रेरणा लें।

5. झाँसी की आधिकारिक वेबसाइट (www.jhansi.nic.in) पर झाँसी/ रानी झाँसी से सम्बन्धित दुर्लभ चित्रों का अवलोकन करें।

(घ) ज्ञान-विस्तार

1. **झाँसी :** झाँसी भारत के उत्तर प्रदेश का एक ज़िला है। यह उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित है। यह शहर बुंदेलखंड क्षेत्र में आता है।

2. **झाँसी के दर्शनीय-स्थल :** झाँसी-किला, रानी-महल, झाँसी-संग्रहालय, महालक्ष्मी-मंदिर, गणेश-मंदिर व गंगाधर राव की छतरी।

3. **रानी लक्ष्मीबाई :** लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर, 1828 ई० को काशी (बाद में बनारस और अब वाराणसी) के भदैनी नगर में हुआ। लक्ष्मीबाई की जन्म तिथि के बारे में इतिहासकारों/विद्वानों की एक राय नहीं है। कुछ विद्वान इनका जन्म 19 नवम्बर, 1835 को मानते हैं। इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे व माता का नाम भागीरथी बाई था। लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मणिकर्णिका था किंतु सभी इसे प्यार से मनु कहते थे। मनु का विवाह झाँसी के

महाराज गंगाधर राव से हुआ था। विवाह के बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। इस तरह मनु झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई बन गई। सन् 1851 को रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया किन्तु कुछ ही महीने बाद गंभीर रूप से बीमार होने पर इस बालक की चार महीने की उम्र में ही मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् महाराज बीमार रहने लगे और उन्होंने एक बच्चे को गोद लिया। इस बालक का नाम दामोदर राव रखा गया। किन्तु महाराज का स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था अतः कहते हैं कि पुत्र गोद लेने के दूसरे ही दिन महाराज की भी मृत्यु हो गई। अंग्रेज़ों ने गोद लिए हुए पुत्र को राजा मानने से इन्कार कर दिया। वे झाँसी को अपने अधीन करना चाहते थे किन्तु रानी ने अंग्रेज़ों को घोषणा की कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। तत्पश्चात् रानी और अंग्रेज़ों में भयंकर युद्ध हुआ और 18 जून, 1858 को रानी अंग्रेज़ों से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गई। (कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि रानी 17 जून, 1858 को शहीद हुई थीं अतः जन्म तिथि की ही भाँति इनकी शहादत की तिथि पर भी मतभेद हैं)

4. **रानी लक्ष्मीबाई पर डाक टिकट :** भारत सरकार ने रानी लक्ष्मीबाई पर वर्ष 1957 को पंद्रह पैसे का एक डाक टिकट जारी किया।

   इसके बाद वर्ष 1988 को भारत सरकार ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के प्रमुख सेनानियों के लिखे नामों (रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, नाना साहब, मंगल पांडे, बहादुर शाह ज़फर) का डाक टिकट जारी किया जिसमें रानी लक्ष्मीबाई का नाम सबसे ऊपर दर्ज है।

5. **झलकारी बाई :** रानी लक्ष्मीबाई की सेना की महिला शाखा 'दुर्गा दल' की सेनापति थी—झलकारी बाई। इसकी वीरता के किस्से भी झाँसी में प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि रानी की हमशक्ल होने के कारण इसने कई बार अंग्रेज़ों को धोखा दिया। मैथिलीशरण गुप्त ने झलकारी बाई की बहादुरी पर लिखा है—

"जाकर रण में ललकारी थी,
वह तो झाँसी की झलकारी थी
गोरों से लड़ना सिखा गई, है इतिहास में,
झलक रही वह तो भारत की ही नारी थी।"

भारत सरकार ने 22 जुलाई, 2001 को झलकारी बाई का चार रुपए का डाक टिकट जारी किया।

6. **बुंदेलखंड :** बुंदेलखंड मध्यभारत का एक प्राचीन क्षेत्र है। यूं तो बुंदेलखंड क्षेत्र दो राज्यों—उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश में विभाजित है परन्तु भौगोलिक व सांस्कृतिक दृष्टि से यह एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ा है। रीति-रिवाज़ों, भाषा और विवाह सम्बन्धों के कारण इसकी एकता और भी मज़बूत हुई है। बुंदेली इस क्षेत्र की बोली है। इतिहासकारों के अनुसार बुंदेलखंड में 300 ई० पूर्व मौर्य शासन काल के साक्ष्य उपलब्ध हैं। इसके बाद वाकाटक शासन, गुप्त, कलचुरी, चंदेल, बुंदेल शासन, मराठा शासन व अंग्रेज़ों का शासन रहा।

7. **बुंदेले हरबोले :** 'बुंदेले हरबोले' बुंदेलखंड की एक जाति विशेष है। इस जाति के लोग राजा-महाराजाओं के यश का गुणगान करने के लिए जाने जाते हैं।

8. बुंदेलखंड की अमर विभूतियाँ /विशिष्ट व्यक्तित्व

(*i*) **आल्ह–ऊदल :** आल्ह और ऊदल ये दो भाई थे। ये बुंदेलखंड (महोबा)के वीर योद्धा थे। इनकी वीरता की कहानी उत्तर भारत में गायी जाती रही है।

(*ii*) **कवि पद्माकर :** रीतिकालीन कवि।

(*iii*) **रानी लक्ष्मीबाई :** प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर सेनानी।

(*iv*) **मैथिलीशरण गुप्त :** राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र हैं। इनका जन्म झाँसी (उत्तर प्रदेश) के चिरगांव में हुआ।

(*v*) **डॉ० हरिसिंह गौर :** डॉ० हरिसिंह गौर सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक, शिक्षाशास्त्री, ख्यातिप्राप्त विधिवेत्ता, समाज सुधारक, साहित्यकार, महान दानी व देशभक्त थे। ये दिल्ली तथा नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे हैं।

******

अज्ञेय

(सन् 1911–1987)

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को प्रतिभा सम्पन्न कवि, कथाकार, ललित निबन्धकार, सम्पादक और सफल अध्यापक के रूप में जाना जाता है। इनका जन्म 7 मार्च, 1911 को उत्तरप्रदेश के देवरिया ज़िले के कुशीनगर नामक ऐतिहासिक स्थान में हुआ। बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता।

सन् 1929 में बी. एस. सी. करने के बाद एम. ए. में इन्होंने अंग्रेज़ी विषय रखा पर क्राँतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने के कारण इनकी पढ़ाई पूरी न हो सकी।

अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकू कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के एकांतमुखी प्रखर कवि होने के साथ–साथ ये एक अच्छे फोटोग्राफर और सत्यान्वेषी पर्यटक भी थे।

इन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से लेकर जोधपुर विश्वविद्यालय तक अध्यापन कार्य किया।'दिनमान साप्ताहिक' और 'नवभारत टाइम्स' का सफल सम्पादन भी इन्होंने किया। सन् 1964 में 'आंगन के पार द्वार' पर इन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार और सन् 1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। 4 अप्रैल, 1987 को इनकी मृत्यु हो गई।

रचनाएँ : इनकी प्रमुख कृतियों में भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्रधनुष रौंदे हुए थे, अरी ओ करुणा प्रभामय, सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ आदि कविता-संग्रह उल्लेखनीय हैं। कहानी संग्रहों में विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी आदि प्रसिद्‌ध हैं। अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली इनके यात्रावृत्त हैं। शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप तथा अपने-अपने अजनबी इनके चर्चित उपन्यास हैं। इनके अतिरिक्त अज्ञेय ने निबंध संस्मरण और नाटक जैसी विधाओं में भी लिखा है।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत कविता में कवि ने पेड़ की सहनशीलता और सबलता को प्रस्तुत किया है। पेड़ अनेक मुसीबतें सहता हुआ भी शांत खड़ा रहता है और साथ ही अपने बढ़ने का श्रेय किसी और को देता है।

मैंने कहा, पेड़

मैंने कहा, ''पेड़, तुम इतने बड़े हो,
इतने कड़े हो,
न जाने कितने सौ बरसों के आँधी-पानी में
सिर ऊँचा किये अपनी जगह अड़े हो।
सूरज उगता-डूबता है, चाँद मरता-छीजता है
ऋतुएँ बदलती हैं, मेघ उमड़ता-पसीजता है,
और तुम सब सहते हुए
संतुलित शान्त धीर रहते हुए
विनम्र हरियाली से ढँके, पर भीतर ठोठ कठैठ खड़े हो।
काँपा पेड़, मर्मरित पत्तियाँ
बोली मानो, नहीं, नहीं, नहीं, झूठा
श्रेय मुझे मत दो!

मैं तो बार-बार झुकता, गिरता, उखड़ता
या कि सूखा ठूँठ हो के टूट जाता,
श्रेय है तो मेरे पैरों-तले इस मिट्टी को
जिसमें न जाने कहाँ मेरी जड़ें खोयी हैं :
ऊपर उठा हूँ उतना ही आश में
जितना कि मेरी जड़ें नीचे दूर धरती में समायी हैं।
श्रेय कुछ मेरा नहीं, जो है इस नामहीन मिट्टी का।
और, हाँ, इन सब उगने-डूबने, भरने-छीजने,
बदलने, गलने, पसीजने,
बनने-मिटने वालों का भी:
शतियों से मैंने बस एक सीख पायी है:
जो मरण-धर्मा हैं वे ही जीवनदायी हैं।''

शब्दार्थ

कड़ा = सख़्त, कठोर	**नामहीन** = नाम रहित
अड़ा = रुका हुआ	**सन्तुलित** = समान भाव वाला
बरसों = वर्षों, सालों	**शतियों** = सदियों, सौ का समूह
मर्मरित = मर्मर ध्वनि करता हुआ	**धीर** = शांत स्वभाव वाला
श्रेय = यश	**सीख** = शिक्षा
छीजना = नष्ट होना	**विनम्र** = विनीत
ठूँठ = पेड़ का बचा हुआ धड़	**ठोठ** = ठेठ, निरा, अविकृत
तले = नीचे वाले भाग में	**मरण** = मृत्यु
मेघ = बादल	**कठैठ** = सख़्त, मज़बूत
पसीजना = दया भाव उमड़ना	**जीवनदायी** = जीवन देने वाला

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—**

(*i*) पेड़ आँधी-पानी में भी किस तरह से अपनी जगह खड़ा है ?

(*ii*) सूरज, चाँद, मेघ और ऋतुओं के क्या-क्या कार्य-कलाप हैं ?

(*iii*) पेड़ में सहनशक्ति के अतिरिक्त और कौन-कौन से गुण हैं ?

(*iv*) पेड़ के बढ़ने और जड़ों के धरती में समाने का क्या संबंध है ?

(*v*) पेड़ मिट्टी के अतिरिक्त और किस-किस को श्रेय देता है ?

(*vi*) पेड़ ने क्या सीख प्राप्त की है ?

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(*i*) सूरज उगता-डूबता है, चाँद मरता-छीजता है
ऋतुएँ बदलती हैं, मेघ उमड़ता-पसीजता है,
और तुम सब सहते हुए
संतुलित शान्त धीर रहते हुए
विनम्र हरियाली से ढँके, पर भीतर ठोठ कठैठ खड़े हो।

(*ii*) काँपा पेड़, मर्मरित पत्तियाँ
बोली मानो, नहीं, नहीं, नहीं, झूठा
श्रेय मुझे मत दो!
मैं तो बार-बार झुकता, गिरता, उखड़ता
या कि सूखा ठूँठ हो के टूट जाता,
श्रेय है तो मेरे पैरों-तले इस मिट्टी को
जिसमें न जाने कहाँ मेरी ज़ड़ें खोयी हैं

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए—

शब्द		**वर्ण-विच्छेद**	**शब्द**		**वर्ण-विच्छेद**
पेड़	-	____________	सूरज	-	____________
चाँद	-	____________	ऋतुएँ	-	____________
मेघ	-	____________	पत्तियाँ	-	____________
मिट्टी	-	____________	जीवनदायी	-	____________

2. निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

तद्भव	**—**	**तत्सम**	**तद्भव**	**—**	**तत्सम**
मिट्टी	-	____________	चाँद	-	____________
सूरज	-	____________	पत्ता	-	____________
सिर	-	____________	सीख	-	____________
पानी	-	____________	सूखा	-	____________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. 'पेड़ लगाओ' इस विषय पर चार्ट पर स्लोगन लिखकर कक्षा में लगाइए।
2. प्रत्येक विद्यार्थी अपने जन्म–दिन पर अपने विद्यालय में, घर में पौधा लगाए।
3. भिन्न–भिन्न पौधों की जानकारी एकत्रित कीजिए।
4. 'पेड़ धरा का आभूषण, करता दूर प्रदूषण' इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(घ) ज्ञान–विस्तार

1. भारत का राष्ट्रीय पेड़ बरगद है।
2. एक साल में एक पेड़ इतनी कार्बन डाइऑक्साइड सोख लेता है जितनी एक कार से 26,000 मील चलने के बाद निकलती है।
3. एक एकड़ में फैला जंगल सालभर में 4 टन ऑक्सीजन छोड़ता है जो 18 लोगों के लिए एक साल की ज़रूरत है।
4. एक व्यक्ति द्वारा जीवन भर में फैलाए गए प्रदूषण को खत्म करने के लिए 300 पेड़ों की ज़रूरत होती है।
5. 25 फुट लंबा पेड़ एक घर के सालाना बिजली खर्च को 8 से 12 फीसदी तक कम कर देता है।
6. सबसे चौड़ा पेड़ : दुनिया का सबसे चौड़ा पेड़ 14,400 वर्ग मीटर में फैला है। कोलकाता में आचार्य जगदीशचंद्र बोस बोटैनिकल गार्डन में लगा यह बरगद का पेड़ 250 वर्ष से अधिक समय में इतने बड़े क्षेत्र में फैल गया है। दूर से देखने में यह अकेला बरगद का पेड़ एक जंगल की तरह नज़र आता है। दरअसल बरगद के पेड़ की शाखाओं से जटाएँ पानी की तलाश में नीचे ज़मीन की ओर बढ़ती हैं। ये बाद में जड़ के रूप में पेड़ को पानी और सहारा देने लगती हैं। फिलहाल इस बरगद की 2800 से अधिक जटाएँ जड़ का रूप ले चुकी हैं।

******

योगेन्द्र बख़्शी

डॉ. योगेन्द्र बख़्शी का जन्म जम्मू तवी में सन् 1939 में हुआ था। बचपन से ही अध्ययन के प्रति विशेष रुचि के परिणामस्वरूप इन्होंने हिंदी साहित्य में एम. ए. तथा बाद में पीएच. डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। बख़्शी जी अध्यापन के क्षेत्र का लम्बा सफ़र तय करते हुए स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से राजकीय महेन्द्रा कॉलेज पटियाला से सेवानिवृत्त हुए हैं। अध्यापन के साथ-साथ इनका लेखन कार्य भी निरन्तर चलता रहा है और इसीलिए इन्होंने हिंदी साहित्य को अपनी अनेक रचनाओं से शोभित किया है। सरल हृदय डॉ. बख़्शी मूलतः कवि हैं। इनके काव्य तथा ग़ज़ल संग्रह 'सड़क का रोग', 'खुली हुई खिड़कियाँ', 'ग़ज़ल के रूबरू' (ग़ज़ल संग्रह), 'कि सनद रहे' (ग़ज़ल संग्रह), 'आदमीनामा : सतसई' आदि खूब चर्चित रहे हैं। इसके अतिरिक्त इनकी रचनाओं में हिंदी तथा पंजाबी उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन, 'प्रसाद का काव्य तथा कामायनी' (आलोचना पुस्तकें); 'पैरिस में एक भारतीय' (एस. एस. अमोल के पंजाबी यात्रावृत्तान्त का हिन्दी अनुवाद), 'काव्य विहार', 'निबन्ध परिवेश', 'गैल गैल', 'आओ हिन्दी सीखें : आठ' (सम्पादित पुस्तकें); तथा बाल साहित्य के अंतर्गत 'बन्दा बहादुर', 'मैथिलीशरण गुप्त' आदि का नाम लिया जा सकता है।

अपने आस-पास की घटनाओं से संवेदना के धरातल पर जुड़े बख़्शी जी ने कविता को अपने भीतर की भावुकता, तड़प, दुःख और रोष को व्यक्त करने के सशक्त माध्यम के रूप में चुना है।

पाठ-परिचय : इस कविता में कवि ने खालसा पंथ की नींव की ऐतिहासिक घटना का बहुत प्रभावशाली ढंग से चित्रण किया है। औरंगज़ेब के ज़ुल्मों से त्रस्त हिन्दुओं में नई चेतना लाने के लिए गुरु गोबिन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में लोगों से आत्म-बलिदान की माँग करके उस खालसा पन्थ की नींव डाली, जिसने न केवल हिंदुओं के लिए औरंगज़ेब के ज़ुल्मों का विरोध किया अपितु बाद में चलकर सिक्ख सम्प्रदाय के रूप में अपनी पहचान भी स्थापित की।

पाँच मरजीवे

एक सुबह आनन्दपुर साहिब में जागी,
कायरता जब सप्तसिन्धु की धरती से भागी।
धर्म-अधर्म के संघर्ष की रात।
एक खालस महामानव।
युग दृष्टा-युग स्त्रष्टा
साहस का ज्वलन्त सूर्य ले हाथ
आह्वान कर रहा—
जागो वीरो जागो
जूझना ही जीवन है— जीवन से मत भागो!

सन् सोलह सौ निन्यानवे की
वैशाखी की पावन बेला है
दशम नानक के द्वारे-आनन्दपुर में
दूर दूर से उमड़े भक्तों-शिष्यों का
विशाल मेला है।

तेज पुंज गुरु गोबिन्द के हाथों में
है नंगी तलवार
लहराती हवा में बारम्बार
''अकाल पुरुष का है फरमान
अभी तुरन्त चाहिये एक बलिदान
अन्याय से मुक्ति दिलाने को
धर्म बचाने, शीश कटाने को
मरजीवा क्या कोई है तैयार ?
मुझे चाहिए शीश एक उपहार!
जिसका अद्‌भुत त्याग देश की
मरणासन्न चेतना में कर दे नवरक्त संचार।''

सन्नाटा छा गया मौन हो रही सभा
सब भयभीत नहीं कोई हिला
फिर लाहौर निवासी खत्री दयाराम आगे बढ़ा
''कृपाकर सौभाग्य मुझे दीजिए
धर्म-रक्षा के लिए-भेंट है शीश गुरुवर !
प्राण मेरे लीजिए।''

खिल उठे दशमेश उसकी बांह थाम
ले गये भीतर, बन गया काम
उभरा स्वर शीश कटने का और फिर गहरा विराम !
भयाकुल चकित चेहरे सभा के
रह गये दिल थाम !

रक्तरंजित फिर लिये तलवार
आ गये गुरुवर पुकारे बारबार
एक मरजीवा अपेक्षित और है
बढ़े आगे कौन है तैयार !

प्राण के लाले पड़े हैं
सभी के मन स्तब्ध से मानो जड़े हैं
किन्तु फिर धर्मराय बलिदान-व्रत-धारी
जाट हस्तिनापुर का खड़ा करबद्ध
गुरुचरण बलिहारी !
हर्षित गुरु ले गये भीतर उसे भी—
लीला विस्मयकारी।

टप टप टपक रहे रक्त बिन्दु
गहरी लाल हुई चम चम तलवार—
माँग रही बलि बारम्बार
गुरुवर की लीला अपरम्पार।

बलिदानों के क्रम में एक एक कर शीश कटाने
बढ़ा आ रहा द्वारिका का मोहकम चन्द धोबी
बिदर का साहब चन्द नाई, पुरी का हिम्मतराय कहार
पाँच ये बलिदान अद्‌भुत चमत्कार!

लीला से पर्दा हटा गुरु प्रकट हुए
चकित देखते सब पाँचों बलिदानी संग खड़े
गुरुवर बोले ''मेरे पाँच प्यारे सिंघ
साहस, रूप, वेश, नाम में न्यारे सिंघ
दया सिंघ, धर्म सिंघ और मोहकम सिंघ
खालिस जाति खालसा के साहब सिंघ व हिम्मत सिंघ
शुभाचरण पथ पर निर्भय देंगे बलिदान
अब से पंथ ''खालसा'' मेरा ऐसे वीरों की पहचान।''

शब्दार्थ

सप्तसिन्धु = सिन्धु, रावी, सतलुज, झेलम, गंगा, यमुना और सरस्वती—इन सात नदियों के यहाँ बहने के कारण भारत को सप्तसिन्धु वाला देश कहा जाता है।

युग दृष्टा = युग को देखने वाला

खालस = खरा, शुद्ध, सच्चा

युग स्त्रष्टा = युग निर्माता

ज्वलन्त = जलता हुआ

आह्वान = बुलावा

तेज पुंज = अत्यंत तेजस्वी

फरमान = आज्ञा

मरणासन्न = मरने के करीब

सन्नाटा = चुप्पी

गुरुवर = गुरु श्रेष्ठ

दशमेश = (सिक्खों के) दसवें गुरु अर्थात् श्री गुरु गोबिन्द सिंह

रक्तरंजित = रक्त से सनी हुई

करबद्ध = हाथ जोड़े

हर्षित = प्रसन्न

विस्मयकारी = आश्चर्यजनक

अपरम्पार = असीम, अपार, जिसका पार न पाया जा सके

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) कवि ने गुरु गोबिन्द सिंह के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग इस कविता में किया है ?

(*ii*) कविता में 'दशम नानक' किसे कहा गया है ?

(*iii*) 1699 ई. में विशाल मेला कहाँ लगा था ?

(*iv*) 'मरजीवा' शब्द का क्या अर्थ है ?

(*v*) अकाल पुरुष का फरमान क्या था ?

(*vi*) पाँचों मरजीवों के नाम लिखिए।

(*vii*) जो व्यक्ति न्याय के लिए बलिदान देता है, धर्म की रक्षा के लिए शीश कटा लेता है, उसे हम क्या कहकर पुकारते हैं ?

(*viii*) गुरु जी ने वीरों की क्या पहचान बताई ?

(*ix*) 'धर्म-अधर्म के संघर्ष की रात' का क्या अर्थ है ?

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(*i*) तेज पुंज गुरु गोबिन्द के हाथों में
है नंगी तलवार
लहराती हवा में बारम्बार
''अकाल पुरुष का है फरमान
अभी तुरन्त चाहिये एक बलिदान
अन्याय से मुक्ति दिलाने को
धर्म बचाने, शीश कटाने को
मरजीवा क्या कोई है तैयार ?
मुझे चाहिये शीश एक उपहार!
जिसका अद्‌भुत त्याग देश की
मरणासन्न चेतना में कर दे नवरक्त संचार।''

(*ii*) लीला से पर्दा हटा गुरु प्रकट हुए
चकित देखते सब पांचों बलिदानी संग खड़े
गुरुवर बोले ''मेरे पांच प्यारे सिंघ
साहस, रूप, वेश, नाम में न्यारे सिंघ
दया सिंघ, धर्म सिंघ और मोहकम सिंघ
खालिस जाति खालसा के साहब सिंघ व हिम्मत सिंघ
शुभाचरण पथ पर निर्भय देंगे बलिदान
अब से पंथ ''खालसा'' मेरा ऐसे वीरों की पहचान।''

(ख) भाषा-बोध

1. **शब्दांश + मूल शब्द (अर्थ) नवीन शब्द (अर्थ)**

अ	+	न्याय (इंसाफ)	अन्याय (इंसाफ के विरुद्ध कार्य)
वि	+	श्वास (साँस)	विश्वास (भरोसा)

उपर्युक्त मूल शब्द (न्याय) में 'अ' शब्दांश लगाने से 'अन्याय' तथा 'श्वास में 'वि' शब्दांश लगाने से 'विश्वास' नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आ गया है। ये 'अ' तथा 'वि' उपसर्ग हैं।

अतएव जो शब्दांश किसी शब्द के शुरू में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अधर्म	अ	धर्म	उपहार	______	______
अतिरिक्त	______	______	प्रकट	______	______

2. **मूल शब्द (अर्थ) + शब्दांश = नवीन शब्द (अर्थ)**

सन्न (स्तब्ध, चुप)	+	आटा	=	सन्नाटा (स्तब्धता, चुप्पी)
कायर (डरपोक)	+	ता	=	कायरता (डरपोकपन)

उपर्युक्त मूल शब्द 'सन्न' में 'आटा' लगाने से 'सन्नाटा' तथा 'कायर' शब्द में 'ता' लगाने से 'कायरता' नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आ गया है। ये 'आटा' तथा 'ता' प्रत्यय हैं।

अतएव जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
वैशाखी	______	______	बलिदानी	______	______
निवासी	______	______	बलिहारी	______	______

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. स्कूल की प्रार्थना सभा में खालसा पंथ की साजना, वैसाखी पर्व तथा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्म दिवस के अवसर पर प्रेरणादायक विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. श्री आनन्दपुर साहिब के ऐतिहासिक महत्त्व के बारे में अपने पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़िए अथवा इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. अपने माता-पिता के साथ श्री आनन्दपुर साहिब के ऐतिहासिक गुरुद्वारे के दर्शन कीजिए व अन्य स्थलों का भ्रमण कीजिए।
4. श्री आनन्दपुर साहिब के ऐतिहासिक स्थलों के चित्र एकत्रित कीजिए।

(घ) ज्ञान-विस्तार

1. **आनन्दपुर साहिब :** आनन्दपुर साहिब पंजाब प्रदेश के रूपनगर ज़िले में स्थित है। यह स्थान पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ से 85 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसकी स्थापना सन् 1664 ई. में सिक्खों के नौवें गुरु तेग़बहादुर ने की थी। आनन्दपुर साहिब में स्थित प्रसिद्ध गुरुद्वारे तख़्त श्री केसगढ़ साहिब की बहुत महानता है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ पर श्रद्धालुओं की हर मुराद पूरी होती है।
2. **अन्य प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल :** सेंट्रल क़िला श्री आनन्दगढ़ साहिब, लोहगढ़ क़िला, होलगढ़ क़िला, फतेहगढ़ क़िला एवं तारागढ़ क़िला। इसके अतिरिक्त आनन्दपुर साहिब में बना 'विरासत-ए-खालसा संग्रहालय' भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थल है। इसमें श्री गुरु नानक देव से लेकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना तक सिक्ख धर्म के विकास को बख़ूबी दर्शाया गया है।

कहानी भाग

मुँशी प्रेमचन्द

(सन् 1880-1936)

मुँशी प्रेमचन्द जी का जन्म सन् 1880 में वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था। खेती उनके घर का मुख्य व्यवसाय था। परन्तु ग़रीबी के कारण इनके पिता मुँशी अजायबराय को डाकखाने में क्लर्की करनी पड़ी। प्रेमचन्द के जन्म के समय यद्यपि उनके पिता नौकरी कर रहे थे, परन्तु मूलतः कृषक होने के कारण उनके घर का वातावरण एक किसान के घर के समान था। इसीलिए प्रेमचन्द को भी ये चीज़ें संस्कारों में ही मिलीं। बचपन में ही प्रेमचन्द की दो बहनों और माता का देहान्त हो गया। इन घटनाओं का प्रेमचन्द पर गहरा असर हुआ। घर की ग़रीबी और माँ के प्यार से वंचित प्रेमचन्द ने अभावों में ही अपनी शिक्षा शुरू की तथा उर्दू की विशेष शिक्षा पाई। तेरह वर्ष की अवस्था तक प्रेमचन्द ने उर्दू के अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ पढ़ लिए। ग़रीबी में भी इन्होंने जीवन के उच्च आदर्शों तथा ईमानदारी का त्याग नहीं किया। वे ट्यूशन करते हुए अंधेरी कोठरी में तेल की कुप्पी से पढ़ते थे। जैसे-तैसे इन्होंने सन् 1910 ई० में इन्टर की परीक्षा पास की, लेकिन परीक्षा पास करने से पहले ही अठारह रुपये मासिक पर स्कूल में नौकरी कर ली थी। ग़रीबी के कारण इन्हें अनेक बार महाजनों से उधार लेना पड़ता था, इसीलिए इन्हें महाजनी व्यापार की इतनी समझ थी और इनके साहित्य में उसकी चर्चा बार-बार होती थी। पिता ने इन्हें धनपतराय नाम दिया था जबकि चाचा ने इन्हें नवाबराय के नाम से पुकारा। नवाबराय नाम से ही इन्होंने आरम्भ में उर्दू में लिखना शुरू किया था और इनका पहला उर्दू कहानी-संग्रह 'सोज़-ए-वतन' प्रकाशित हुआ, जिसमें राष्ट्रीयता की भावना को देखते हुए अंग्रेज़ सरकार ने उसकी सारी प्रतियाँ जलाकर पाबंदी लगा

दी। इसी के साथ 'नवाबराय' लुप्त हो गये और 'प्रेमचन्द' के नाम से इन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया। लेखन-कार्य के अतिरिक्त इन्होंने 'जमाना' 'मर्यादा','माधुरी','जागरण' और 'हंस' नामक पत्रिकाओं का समय-समय पर सम्पादन किया। 'हंस' के लिए ही इन्होंने फिल्मी दुनिया में कदम रखा था, किंतु इनका मन वहाँ रमा नहीं।

प्रेमचन्द की सबसे पहली मौलिक कहानी 'संसार का अनमोल रत्न' बताई जाती है, जो सन् 1907 में 'जमाना' में छपी थी। उसके बाद इन्होंने अनेक उपन्यासों तथा कहानियों की रचना की। इनकी लगभग तीन सौ कहानियों को 'मानसरोवर' नाम से आठ भागों में संकलित किया गया। 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' इनके चर्चित उपन्यास हैं। प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' (सन् 1936 ई०) अपूर्ण ही रह गया। इन्होंने नाटकों की भी रचना की। 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी' इनके नाटकों के नाम हैं। इनके आलोचनात्मक लेख 'हंस' तथा 'जागरण' की फाइलों में मिलते हैं। कुल मिला कर प्रेमचन्द हिंदी कथा साहित्य के सम्राट थे। इन्होंने सामाजिक समस्याओं को कहानियों और उपन्यासों में उतार कर हिंदी कहानी और उपन्यास को एक नई दिशा दी।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत कहानी में लेखक ने न्यायप्रियता और मित्रता पर प्रकाश डाला है। पंच के आसन पर आसीन साधारण मानव भी अपने-पराये, ईर्ष्या द्वेष के स्तर से ऊपर उठकर न्याय करने लगता है। न्याय के अतिरिक्त उसे कुछ नहीं सूझता। ये कहानी संदेश देती है कि निष्पक्ष न्याय की हर ओर जय जयकार होती है। यदि कभी किसी को न्याय करने का उत्तरदायित्व दिया जाए तो उसे काम क्रोध, मद लोभ और मोह से ऊपर उठकर न्याय करना चाहिए।

पंच परमेश्वर

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन-देन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे। उनमें न खान-पान का व्यवहार था, न धर्म का नाता; केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूलमंत्र यही है।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी ख़ाला (मौसी) थी। उसके पास कुछ थोड़ी-सी मिलकियत थी परंतु निकट संबंधियों में कोई न था। जुम्मन ने लंबे-चौड़े वादे करके वह मिलकियत अपने नाम लिखवा ली। जब तक उसकी रजिस्ट्री न हुई थी, तब तक ख़ालाजान का खूब आदर-सत्कार किया गया। हलवे-पुलाव की वर्षा-सी की गई पर रजिस्ट्री की मोहर ने इन ख़ातिरदारियों पर मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज़, तीखे सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख भी निष्ठुर हो गए। अब बेचारी ख़ालाजान को प्राय: नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं-

''बुढ़िया न जाने कब तक जिएगी! दो-तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया, मानो मोल ले लिया है! बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरतीं! जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से अब तक गाँव मोल ले लेते!''

कुछ दिन ख़ालाजान ने सुना और सहा परंतु जब न सहा गया, तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने स्थानीय कर्मचारी गृहस्वामिनी के प्रबंध में दखल देना उचित न समझा। अंत में एक दिन ख़ाला ने जुम्मन से कहा, ''बेटा! तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अपना पका-खा लूँगी।''

जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया, ''रुपए क्या यहाँ फलते हैं?''

ख़ाला ने नम्रता से कहा, ''मुझे कुछ रूखा-सूखा चाहिए भी कि नहीं ?''

जुम्मन ने गंभीर स्वर में जवाब दिया, ''तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आई हो!''

ख़ाला बिगड़ गईं, उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकार हिरन को जाल की तरफ़ जाते देखकर मन-ही-मन हँसता है। वह बोले, ''हाँ, ज़रूर पंचायत करो। फ़ैसला हो जाए। मुझे भी यह रात-दिन की खटपट पसंद नहीं।''

पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी संदेह न था। आसपास के गाँवों में ऐसा कौन था, जो उसके अनुग्रहों का ऋणी न हो ? ऐसा कौन था, जो उसको शत्रु बनाने का साहस कर सके ? किसमें इतना बल था, जो उसका सामना कर सके ? आसमान के फ़रिश्ते तो पंचायत करने आवेंगे नहीं!

इसके बाद कई दिन तक बूढ़ी ख़ाला हाथ में एक लकड़ी लिए आसपास के गाँवों में दौड़ती रही। कमर झुककर कमान हो गई थी।

बिरला ही कोई भला आदमी होगा, जिसके सामने बुढ़िया ने दुःख के आँसू न बहाए हों। ऐसे न्यायप्रिय, दयालु, दीन-वत्सल पुरुष बहुत कम थे, जिन्होंने उस अबला के दुखड़े को गौर से सुना हो और उसको सांत्वना दी हो। चारों ओर घूम-घामकर बेचारी अलगू चौधरी के पास आई, ''बेटा, तुम भी दमभर के लिए मेरी पंचायत में चले आना।''

अलगू-यों आने को आ जाऊँगा; मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

ख़ाला-क्यों बेटा ?

अलगू-अब इसका क्या जवाब दूँ ? अपनी खुशी! जुम्मन मेरा पुराना मित्र है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।

ख़ाला-बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे ?

हमारे सोए हुए धर्मज्ञान की सारी संपत्ति लुट जाए, तो उसे ख़बर नहीं होती परंतु ललकार सुनकर वह सचेत हो जाता है, फिर उसे कोई जीत नहीं सकता। अलगू इस सवाल का कोई उत्तर न दे सका पर उसके हृदय में ये शब्द गूँज रहे थे–

'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?'

संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। शेख जुम्मन ने पहले से ही फ़र्श बिछा रखा था। उन्होंने पान, इलायची, हुक्के-तंबाकू आदि का प्रबंध भी किया था। हाँ, स्वयं अलबत्ता अलगू चौधरी के साथ ज़रा दूर पर बैठे हुए थे। जब पंचायत में कोई आ जाता था, तब दबे हुए सलाम से उसका स्वागत करते थे।

पंच लोग बैठ गए, तो बूढ़ी ख़ाला ने उनसे विनती की–

''पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। इसे आप लोग जानते ही होंगे। जुम्मन ने मुझे

ता–हयात रोटी–कपड़ा देना क़बूल किया। सालभर तो मैंने इसके साथ रो–धोकर काटा पर अब रात–दिन का रोना नहीं सहा जाता। मुझे न पेट की रोटी मिलती है, न तन का कपड़ा। बेकस बेवा हूँ। कचहरी दरबार नहीं कर सकती। तुम्हारे सिवा और किससे अपना दुःख सुनाऊँ? तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह पर चलूँ। मैं पंचों का हुक्म सिर–माथे पर चढ़ाऊँगी।''

रामधन मिश्र, जिनके कई असामियों को जुम्मन ने अपने गाँव में बसा लिया था, बोले, ''जुम्मन मियाँ, किसे पंच बदते हो? अभी से इसका निपटारा कर लो। फिर जो कुछ पंच कहेंगे, वही मानना पड़ेगा।''

जुम्मन को इस समय सदस्यों में विशेषकर वे ही लोग दीख पड़े, जिनसे किसी–न–किसी कारण उनका वैमनस्य था। जुम्मन बोले, ''पंचों का हुक्म अल्लाह का हुक्म है। ख़ालाजान जिसे चाहें, उसे पंच बनाएँ।''

ख़ाला ने चिल्लाकर कहा,''अरे अल्लाह के बंदे! पंचों का नाम क्यों नहीं बता देता? कुछ मुझे भी तो मालूम हो।''

जुम्मन ने क्रोध से कहा,'' अब इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ। तुम जिसे चाहे पंच बना लो।''

ख़ालाजान जुम्मन के आरोप को समझ गई, वह बोली, ''बेटा, ख़ुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। कैसी बात कहते हो! और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो, तो जाने दो; अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच बनाती हूँ।''

जुम्मन शेख आनंद से फूल उठे परंतु भावों को छिपाकर बोले, ''अलगू ही सही, मेरे लिए जैसे रामधन वैसे अलगू।''

अलगू इस झमेले में फँसना नहीं चाहते थे। वे कन्नी काटने लगे। बोले, ''ख़ाला, तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है।''

ख़ाला ने गंभीर स्वर में कहा, ''बेटा, दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंचों के दिल में ख़ुदा बसता है। पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह ख़ुदा की तरफ़ से निकलती है।''

अलगू चौधरी सरपंच हुए। रामधन मिश्र और जुम्मन के दूसरे विरोधियों ने बुढ़िया को मन में बहुत कोसा।

अलगू चौधरी बोले, ''शेख जुम्मन! हम और तुम पुराने दोस्त हैं! जब काम पड़ा, तुमने हमारी मदद की है और हम भी जो कुछ बन पड़ा, तुम्हारी सेवा करते रहे हैं; मगर इस समय तुम और बूढ़ी ख़ाला, दोनों हमारी निगाह में बराबर हो। तुमको पंचों से जो कुछ अर्ज़ करनी हो, करो।''

जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाज़ी मेरी है। अलगू यह सब दिखावे की बातें कर रहा है। अतएव शांत चित्त होकर बोले, ''पंचो, तीन साल हुए, ख़ालाजान ने अपनी जायदाद मेरे नाम लिख दी थी। मैंने उन्हें ता-हयात खाना-कपड़ा देना क़बूल किया था। ख़ुदा गवाह है, आज तक मैंने ख़ालाजान को कोई तकलीफ़ नहीं दी। मैं उन्हें अपनी माँ के समान समझता हूँ। उनकी ख़िदमत करना मेरा फर्ज़ है; मगर औरतों में ज़रा अनबन रहती है, इसमें मेरा क्या बस है? ख़ालाजान मुझसे माहवार खर्च अलग माँगती हैं। जायदाद जितनी है, वह पंचों से छिपी नहीं। उससे इतना मुनाफ़ा नहीं होता कि माहवार खर्च दे सकूँ।''

अलगू चौधरी को हमेशा कचहरी से काम पड़ता था। अतएव वह पूरा कानूनी आदमी था। उसने जुम्मन से जिरह शुरू की। एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ता था। रामधन मिश्र इन प्रश्नों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन चकित थे कि अलगू को हो क्या गया। अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था! इतनी ही देर में ऐसा कायापलट हो गया कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर यह निकाल रहा है? क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आवेगी?

जुम्मन शेख तो इसी संकल्प-विकल्प में पड़े हुए थे कि इतने में अलगू ने फ़ैसला सुनाया-

''जुम्मन शेख! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें नीति-संगत मालूम होता है कि ख़ालाजान को माहवार खर्च दिया जाए। हमारा विचार है कि खाला की जायदाद से इतना मुनाफ़ा अवश्य होता है कि माहवार खर्च दिया जा सके। बस, यही हमारा फ़ैसला है। अगर जुम्मन को खर्च देना मंजूर न हो, तो संपत्ति की वह रजिस्ट्री रद्द समझी जाए।''

यह फ़ैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। मगर रामधन मिश्र और अन्य पंच अलगू चौधरी की इस नीति-परायणता की प्रशंसा जी खोलकर कर रहे थे। वे कहते थे- इसका नाम पंचायत है!'दूध का दूध और पानी का पानी'कर दिया। दोस्ती दोस्ती की जगह है किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत्यवादियों के बल पर पृथ्वी ठहरी है, नहीं तो वह कब की रसातल में चली जाती।

इस फ़ैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। अब वे साथ-साथ बातें करते नहीं दिखाई देते। इतना पुराना मित्रता रूपी वृक्ष सत्य का एक झोंका भी न सह सका। सचमुच, वह बालू की ही ज़मीन पर खड़ा था।

उनमें अब शिष्टाचार का अधिक व्यवहार होने लगा। एक-दूसरे की आवभगत ज़्यादा करने लगे। वे मिलते-जुलते थे, मगर उसी तरह, जैसे तलवार से ढाल मिलती है।

जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खटा करती थी। उसे हर घड़ी यही चिंता रहती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले।

अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है परंतु बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं होती; जुम्मन को भी बदला लेने का अवसर जल्द

ही मिल गया। पिछले साल अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाए थे। बैल पछाही जाति के सुंदर, बड़े-बड़े सींगोंवाले थे। महीनों तक आसपास के गाँव के लोग उनके दर्शन करते रहे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। जुम्मन ने दोस्तों से कहा, ''यह दगाबाज़ी की सज़ा है। इनसान सब्र भले ही कर जाए पर ख़ुदा नेक-बद सब देखता है।''

अब अकेला बैल किस काम का? उसका जोड़ बहुत ढूँढ़ा गया पर न मिला। तो निश्चय हुआ कि इसे बेच डालना चाहिए। गाँव में एक समझू साहू थे, वे इक्का-गाड़ी हाँकते थे। गाँव से गुड़-घी लादकर मंडी ले जाते, मंडी से तेल-नमक भर लाते और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। उन्होंने सोचा, यह बैल हाथ लगे तो दिनभर में बेखटके तीन खेप हों। आजकल तो एक ही खेप में लाले पड़े रहते हैं। बैल देखा, गाड़ी में दौड़ाया, मोल-तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बाँध ही दिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी गरज़ थी ही, घाटे की परवाह न की।

समझू साहू ने नया बैल पाया, तो लगे उसे रगेदने। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे। न चारे की फ़िक्र थी न पानी की, बस खेपों से काम था। मंड़ी ले गए, वहां कुछ रूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न लेने पाता था कि फिर जोत दिया। इक्के का जुआ देखते ही बैल का लहू सूख जाता था। एक-एक पग चलना दूभर था। हड्डियाँ निकल आई थीं परंतु था वह पानीदार, मार की बरदाशत न थी।

एक दिन चौथी खेप में साहूजी ने दूना बोझा लादा। दिनभर का थका जानवर, पैर न उठते थे। कोड़े खाकर कुछ दूर दौड़ा, धरती पर गिर पड़ा, और ऐसा गिरा कि फिर न उठा। कई बोरे गुड़ और कई पीपे घी उन्होंने बेचे थे, दो-ढाई सौ रुपए कमर में बँधे थे। इसके सिवा गाड़ी पर कई बोरे नमक

के थे, अतएव छोड़कर जा भी न सकते थे। लाचार बेचारे गाड़ी पर लेट गए। वहीं रतजगा करने की ठान ली। आधी रात तक नींद को बहलाते रहे। सुबह जब नींद टूटी और कमर पर हाथ रखा, तो थैली गायब! घबराकर इधर-उधर देखा, तो कई कनस्तर तेल भी नदारद! प्रातःकाल रोते-बिलखते घर पहुँचे। सहुआइन ने जब यह बुरी सुनावनी सुनी, तब पहले तो रोई, फिर अलगू चौधरी को गालियाँ देने लगी—"निगोड़े ने ऐसी कुलच्छनी बैल दिया कि जन्म-भर की कमाई लुट गई।"

इस घटना को हुए कई महीने बीत गए। अलगू जब अपने बैलों के दाम माँगते, तब साहू और सहुआइन दोनों ही झल्ला उठते। चौधरी के अशुभ चिंतकों की कमी न थी। ऐसे अवसरों पर वे भी एकत्र होते आते और साहू जी के बर्राने की पुष्टि करते।

डेढ़ सौ रुपए से इस तरह हाथ धो लेना अलगू चौधरी के लिए आसान न था। एक बार वे भी गरम पड़े। साहू जी बिगड़कर लाठी ढूँढ़ने घर चले गए! अब सहुआइन ने मैदान लिया। प्रश्नोत्तर होते-होते हाथा-पाई की नौबत आ पहुँची। सहुआइन ने घर में घुसकर किवाड़ बंद कर लिए। शोरगुल सुनकर गाँव के भलेमानस जमा हो गए। उन्होंने दोनों को समझाया। साहू जी को दिलासा देकर घर से निकाला। लोगों ने परामर्श दिया कि इस तरह से काम न चलेगा। पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाए, उसे स्वीकार कर लो। साहू जी राज़ी हो गए। अलगू ने भी हामी भर ली।

पंचायत की तैयारियाँ होने लगीं। दोनों पक्षों ने अपने-अपने दल बनाने शुरू किए। इसके बाद तीसरे दिन उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी।

पंचायत बैठ गई, तो रामधन मिश्र ने कहा, "अब देरी क्या है? पंचों का चुनाव हो जाना चाहिए। बोलो चौधरी, किस-किसको पंच बनाते हो?"

अलगू ने दीन भाव से कहा, ‘‘समझू साहू ही चुन लें।’’

समझू खड़े हुए और कड़ककर बोले, ‘‘मेरी ओर से जुम्मन शेख।’’

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा ‘धक्-धक्’ करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। रामधन अलगू के मित्र थे। वह बात तो ताड़ गए। पूछा, ‘‘क्यों चौधरी, तुम्हें कोई उज़्र तो नहीं?’’

चौधरी ने निराश होकर कहा, ‘‘नहीं, मुझे क्या उज़्र होगा!’’

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधार होता है। जब हम राह भूलकर भटकने लगते हैं, तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक बन जाता है।

जुम्मन शेख के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उसने सोचा, ‘मैं इस समय न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे बुरे विचारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं।’

पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने शुरू किए। बहुत देर तक दोनों दल अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। यह तो सब चाहते ही थे कि समझू को बैल का मूल्य देना चाहिए परंतु दो महाशय इस कारण रिआयत करना चाहते थे कि बैल के मर जाने से समझू की हानि हुई। सभ्य व्यक्ति समझू को दंड भी देना चाहते थे, जिससे फिर किसी को पशुओं के साथ ऐसी निर्दयता करने का साहस न हो। अंत में जुम्मन ने फ़ैसला सुनाया-

‘‘अगलू चौधरी और समझू साहू! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस वक़्त उन्होंने बैल लिया, उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय दाम दे दिए

जाते, तो झगड़ा ही खत्म हो जाता। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने–चारे का कोई अच्छा प्रबंध न किया गया।''

रामधन मिश्र बोले, ''समझू ने बैल को जान–बूझकर मारा है, अतएव उनसे दंड लेना चाहिए।''

जुम्मन बोले, ''यह दूसरा सवाल है! हमको इससे कोई मतलब नहीं।''

झगड़ू साहू ने कहा, ''समझू के साथ कुछ रिआयत होनी चाहिए।''

जुम्मन बोले, ''यह अलगू चौधरी की इच्छा पर निर्भर है। यह रिआयत करें, तो उनकी भलमनसी।''

अलगू चौधरी फूले न समाए। उठ खड़े हुए और ज़ोर से बोले, ''पंच–परमेश्वर की जय।''

इसके साथ ही चारों ओर प्रतिध्वनि हुई, ''पंच–परमेश्वर की जय!''

प्रत्येक मनुष्य जुम्मन की नीति को सराहता था।– ''इसे कहते हैं न्याय! यह मनुष्य का काम नहीं, पंच में परमेश्वर वास करते हैं, यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है!''

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले, ''भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की, तब से मैं तुम्हारा प्राणघातक शत्रु बन गया था परंतु आज मुझे ज्ञान हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की ज़बान से ख़ुदा बोलता है।'' अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिल का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

शब्दार्थ

अटल = दृढ़, पक्का
मिलकियत = संपत्ति
रजिस्ट्री = जमीन-जायदाद बेचने-खरीदने के लिए की जाने वाली कानूनी लिखा-पढ़ी
ख़ातिरदारी = सत्कार
सालन = साग आदि की मसालेदार तरकारी
निष्ठुर = कठोर
ऊसर = बंजर
बघारी = तड़का, छौंक
गृहस्वामिनी = घर की मालकिन
निर्वाह = गुज़ारा
धृष्टता = ढिठाई, ढीठपन
अनुग्रह = कृपा
ऋणी = कर्ज़दार
फ़रिश्ता = देवदूत
बिरला = बहुत कम मिलने वाला
दीन वत्सल = दीनों से प्रेम करने वाले
सांत्वना = ढाढ़स बँधाना
दमभर = पल भर
ईमान = अच्छी नीयत
ता-हयात = जीवन भर
क़बूल = स्वीकार
बेकस = निस्सहाय
बेवा = विधवा
असामी = किसी महाजन या दुकानदार से लेन देन रखने वाला
वैमनस्य = वैर, विरोध
अर्ज़ = प्रार्थना
बाज़ी = दाँव, बारी
ख़िदमत = सेवा
फर्ज़ = कर्तव्य
मुनाफ़ा = लाभ
जिरह = बहस
कायापलट = बहुत बड़ा परिवर्तन
संकल्प-विकल्प = सोच-विचार में
नीति संगत = नीति के अनुरूप
माहवार = महीने भर का
नीति परायणता = नीति का पालन करना
बालू = रेत
शिष्टाचार = सभ्य व्यवहार
आवभगत = आदर-सत्कार
चित्त = हृदय
कुटिलता = धोखेबाज़ी, दुष्टता
दैवयोग = भाग्य से
दगाबाज़ी = छल बाज़ी, धोखा
सब्र = सहन, धैर्य
नेक-बद = भला-बुरा
बेखटके = बिना संकोच के, बेधड़क

खेप	= एक फेरा, एक बार में ढोया जाने वाला बोझ	**उज़्र**	= आपत्ति, एतराज़
गरज़	= मतलब	**संकुचित**	= तंग
रगेदने	= भगाना, दौड़ाना	**पथ प्रदर्शक**	= राह दिखाने वाला
रतजगा	= रातभर जागना	**सर्वोच्च**	= सबसे ऊँचा
नदारद	= गायब, लुप्त	**देववाणी**	= देवताओं की वाणी
सुनावनी	= ख़बर, सूचना	**सदृश**	= समान, तुल्य
बर्राना	= क्रोध में बोलना	**भलमनसी**	= सज्जनता
परामर्श	= सलाह	**सराहना**	= प्रशंसा
ताड़ जाना	= भाँप जाना	**प्राण घातक**	= जान लेने वाला

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिये—**
   (*i*) जुम्मन शेख की गाढ़ी मित्रता किसके साथ थी?
   (*ii*) रजिस्ट्री के बाद जुम्मन का व्यवहार ख़ाला के प्रति कैसा हो गया था?
   (*iii*) ख़ाला ने जुम्मन को क्या धमकी दी?
   (*iv*) बूढ़ी ख़ाला ने पंच किसको बनाया था?
   (*v*) अलगू के पंच बनने पर जुम्मन को किस बात का पूरा विश्वास था?
   (*vi*) अलगू ने अपना फैसला किसके पक्ष में दिया?
   (*vii*) एक बैल के मर जाने पर अलगू ने दूसरे बैल का क्या किया?
   (*viii*) समझू साहू ने बैल का कितना दाम चुकाने का वादा किया?
   (*ix*) पंच परमेश्वर की जय-जयकार किस लिए हो रही थी?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिये—**
   (*i*) जुम्मन और उसकी पत्नी द्वारा ख़ाला की ख़ातिरदारी करने का क्या कारण था?
   (*ii*) बूढ़ी ख़ाला ने पंचों से क्या विनती की?

(*iii*) अलगू ने पंच बनने के झमेले से बचने के लिए बूढ़ी ख़ाला से क्या कहा ?

(*iv*) अलगू चौधरी ने अपना क्या फैसला सुनाया ?

(*v*) अलगू चौधरी से खरीदा हुआ समझू साहू का बैल किस कारण मरा ?

(*vi*) सरपंच बनने पर भी जुम्मन शेख अपना बदला क्यों नहीं ले सका ?

(*vii*) जुम्मन ने क्या फैसला सुनाया ?

(*viii*) 'मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई'– इस वाक्य का क्या अभिप्राय है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिये—

(*i*) 'पंच परमेश्वर' कहानी का क्या उद्‌देश्य है ?

(*ii*) अलगू, जुम्मन और ख़ाला में से आपको कौन सा पात्र अच्छा लगा और क्यों ?

(*iii*) दोस्ती होने पर भी अलगू ने जुम्मन के ख़िलाफ फैसला क्यों दिया और दुश्मनी होने पर भी जुम्मन ने अलगू के पक्ष में फैसला क्यों दिया ?

(*iv*) अलगू के पंच बनने पर जुम्मन के प्रसन्न होने और जुम्मन के पंच बनने पर अलगू के निराश होने का क्या कारण था ?

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्‌भव रूप लिखिए—

तत्सम	-	**तद्‌भव**	**तत्सम**	-	**तद्‌भव**
मुख	-	________	गृह	-	________
पंच	-	________	मृत्यु	-	________
मित्र	-	________	संध्या	-	________
ग्राम	-	________	मास	-	________
उच्च	-	________	निष्ठुर	-	________

2. विराम चिह्न

प्रेमचंद ने ठीक ही कहा है, "खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का।"

उपर्युक्त वाक्य में हिंदी विराम चिह्नों में से 'उद्धरण चिह्न' का प्रयोग हुआ है।

किसी के द्वारा कहे गए कथन या किसी पुस्तक की पंक्ति या अनुच्छेद को ज्यों का त्यों उद्धृत करते समय दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है।

पूर्ण विराम तथा अल्प विराम पिछली कक्षाओं में करवाए गए हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थान पर उचित विराम चिह्न लगाएँ—

- जुम्मन ने क्रोध से कहा अब इस वक़्त मेरा मुँह न खुलवाओ
- ख़ाला ने कहा बेटा क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे
- अलगू बोले ख़ाला तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है
- उन्होंने पान इलायची हुक्के तंबाकू आदि का प्रबंध भी किया था।

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
मौत से लड़कर आना	– मृत्यु न होना	________________________
कमर झुककर कमान होना	– बूढ़ा हो जाना	________________________
दुःख के आँसू बहाना	– दुःख के कारण रोना	________________________
मुँह न खोलना	– चुप रहना	________________________
रात दिन का रोना	– दुःखी रहना	________________________

- **राह निकालना** – युक्ति निकालना
- **हुक्म सिर माथे पर चढ़ाना** – बात मानना
- **मुँह खुलवाना** – बात उगलवाना
- **कन्नी काटना** – बचना
- **ईमान बेचना** – बेईमान होना
- **मन में कोसना** – मन में बुरा भला कहना
- **जड़ खोदना** – बात को बार-बार कुरेदना
- **सन्नाटे में आना** – स्तब्ध या सुन्न हो जाना
- **दूध का दूध पानी का पानी** – पूरा-पूरा न्याय करना
- **जड़ हिलाना** – नष्ट करना
- **तलवार से ढाल मिलना** – शत्रुता के भाव से मिलना
- **आठों पहर खटकना** – हमेशा बुरा लगना
- **मन लहराना** – खुशी होना
- **लाले पड़ना** – मुश्किल में पड़ना

- **मोल तोल करना** – कीमत तय करना ____________________
- **लहू सूखना** – अत्यधिक डर लगना ____________________
- **नींद को बहलाना** – जाग–जाग कर रात काटना ____________________
- **हाथ धो बैठना** – गँवा बैठना ____________________
- **कलेजा धक्–धक् करना** – व्याकुल होना ____________________
- **फूले न समाना** – अत्यंत प्रसन्न होना ____________________
- **गले लिपटना** – आलिंगन करना ____________________
- **मैल धुलना** – दुश्मनी खत्म होना ____________________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. यदि अलगू जुम्मन के पक्ष में फैसला सुना देता तो ख़ाला पर क्या गुज़रती ?
2. यदि जुम्मन शेख–समझू साहू के पक्ष में फैसला सुना देता तो अलगू क्या सोचता ?
3. 'दूध का दूध पानी का पानी' पर कोई घटना या कहानी लिखें।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. अपने गाँव में लगने वाली ग्राम पंचायत के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. सरपंच बनकर फैसला करते समय आप अपने मित्र को महत्व देते या

फिर न्याय व्यवस्था को इस पर अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

3. यदि आप ख़ाला की जगह होते तो क्या आप भी न्याय के लिए इतनी ही हिम्मत और साहस दिखाते या अन्याय सहते–इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. पुस्तकालय से प्रेमचंद के कहानी–संग्रह 'मानसरोवर' में से मित्र, 'नशा', 'नमक का दारोगा' आदि कहानियाँ पढ़िए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **हज :** हज एक इस्लामी तीर्थ–यात्रा और मुस्लिमों के लिए सर्वोच्च इबादत है। हज–यात्रियों के लिए काबा पहुँचना जन्नत के समान है। काबा शरीफ मक्का में है। हज मुस्लिम लोगों का पवित्र शहर मक्का में प्रतिवर्ष होने वाला विश्व का सबसे बड़ा जमावड़ा है।
2. **उर्दू में रिश्तों के नाम**

अम्मी (माता)	–	अब्बू (पिता)
वालिदा (माता)	–	वालिद (पिता)
वालिदेन	–	माता पिता दोनों के लिए
बीवी (पत्नी)	–	शौहर (पति)
ख़ाला (मौसी)	–	ख़ालू (मौसा)
ख़ालाज़ाद	–	मौसी के बच्चे
मुमानी (मामी)	–	मामूं (मामा)
सास	–	ससुर
भाबी	–	भाई
बहन	–	बहनोई
बेटी	–	दामाद

******

जैनेंद्र कुमार

(सन् 1905–1988)

बीसवीं शताब्दी के हिंदी साहित्य के देदीप्यमान सितारे जैनेंद्र कुमार का जन्म 2 जनवरी, सन् 1905 में कौड़ियागंज, ज़िला अलीगढ़ में हुआ। इनका बचपन का नाम आनंदी लाल था। जैनेंद्र जी की आरंभिक शिक्षा सन् 1911–18 तक ऋषभ ब्रहाचार्याश्रम, हस्तिनापुर में हुई। सन् 1919–20 में इन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में अध्ययन किया।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में वे पूरे मनोयोग से जुड़े रहे। डॉ. के.एम. मुंशी तथा प्रेमचंद्र के साथ मिलकर इन्होंने महात्मा गांधी की अध्यक्षता में ''भारतीय साहित्य परिषद्'' की स्थापना की। प्रेमचंद की मृत्यु के उपरांत हंस का संपादन भी जैनेंद्र जी ने ही किया। जैनेंद्र जी को अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं जिनमें मुख्य हैं—पदमभूषण (भारत सरकार, 1971), साहित्य अकादमी की फैलोशिप (1974)। 24 दिसम्बर, 1988 को इनका निधन हो गया।

रचनाएँ : इनकी प्रकाशित कृतियों में 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'विवर्त', 'सुखदा' तथा 'व्यतीत उपन्यास', 'फांसी', 'वातायन', 'नीलम देश की राजकन्या', 'एक रात', 'दो चिड़ियाँ', 'पाजेब', 'जयसंधि' आदि कहानी संग्रह हैं। प्रस्तुत 'प्रश्न', 'जड़ की बात', 'पूर्वोदय', 'मंथन', 'सोच-विचार' आदि निबंध संग्रह उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त इनके अनूदित ग्रंथ व संपादित ग्रंथ भी हैं।

पाठ-परिचय : 'पाजेब' जैनेंद्र जी की बाल मनोविज्ञान की कहानी है। लेखक ने अत्यंत संवेदनशीलता से छोटी-छोटी घटनाएँ इसमें प्रस्तुत की हैं। पाजेब के खो जाने की घटना को लेकर बाल स्वभाव को बहुत ही स्वाभाविक और यथार्थपूर्ण ढंग से उजागर किया है। ये घटना अपनी सच्चाई से इतनी मार्मिक है कि बच्चों की अदालत में बड़ों को गुनहगार साबित कर देती है और बड़े अपने व्यवहार के पुनर्निरीक्षण पर बाध्य हो जाते हैं।

पाजेब

बाज़ार में एक नयी तरह की पाजेब चली है। पैरों में पड़कर वह बड़ी अच्छी मालूम होती हैं। उसकी कड़ियाँ आपस में लचक के साथ जुड़ी रहती हैं कि पाजेब का मानो निज का आकार कुछ नहीं है, जिस पाँव में पड़े उसी के अनुकूल ही रहती हैं।

पास-पड़ोस में तो सब नन्हीं-बड़ी के पैरों में आप वही पाजेब देख लीजिए। एक ने पहनी कि फिर दूसरी ने भी पहनी। देखा-देखी में इस तरह उनका न पहनना मुश्किल हो गया है।

हमारी मुन्नी ने भी कहा कि बाबूजी, हम पाजेब पहनेंगे। बोलिए, भला कठिनाई से चार बरस की उम्र और पाजेब पहनेगी।

मैंने कहा कि कैसी पाजेब?

बोली, कि हाँ, वही जैसी रुकमन पहनती है, जैसी शीला पहनती है।

मैंने कहा कि अच्छा-अच्छा!

बोली कि मैं तो आज ही मँगा लूँगी।

मैंने कहा कि अच्छा, भाई, आज सही।

उस वक्त तो खैर मुन्नी किसी काम में बहल गई। लेकिन जब दोपहर आई मुन्नी की बुआ, तब वह मुन्नी सहज मानने वाली न थी।

बुआ ने मुन्नी को मिठाई खिलाई और गोद में लिया और कहा कि अच्छा, तो तेरी पाजेब अबके इतवार को ज़रूर लेती आऊँगी।

इतवार को बुआ आयी और पाजेब ले आयी। मुन्नी उन्हें पहनकर खुशी के मारे यहाँ-से-वहाँ छुमकती फिरी। रुकमन के पास गयी और कहा—देख रुकमन, मेरी पाजेब। शीला को भी अपनी पाजेब दिखाई। सबने पाजेब पहनी देखकर उसे प्यार किया और तारीफ की। सचमुच,

वह चाँदी की सफेद दो-तीन लड़ियाँ-सी टखनों को चारों ओर लिपटकर, चुपचाप बिछी हुई, ऐसी सुघड़ लगती थी कि बहुत ही, और बच्ची की खुशी का ठिकाना न था।

और हमारे महाशय आशुतोष, जो मुन्नी के बड़े भाई थे, पहले तो मुन्नी को सजी-धजी देखकर बड़े खुश हुए। वह हाथ पकड़कर अपनी मुन्नी को पाजेब-सहित दिखाने के लिए आस-पास ले गये। मुन्नी की पाजेब का गौरव उन्हें अपना भी मालूम होता था। वह खूब हँसे और ताली पीटी, लेकिन थोड़ी देर बाद वह ठुमकने लगे कि मुन्नी को पाजेब दी, सो हम भी बाईसिकिल लेंगे।

बुआ ने कहा कि अच्छा बेटा अबके जन्म-दिन को तुझे भी बाईसिकिल दिलवाएँगे।

आशुतोष बाबू ने कहा कि हम तो अभी लेंगे।

बुआ ने कहा, ''छी-छी तू कोई लड़की है? ज़िद तो लड़कियाँ किया करती हैं, और लड़कियाँ रोती हैं। कहीं बाबू साहब लोग रोते हैं!''

आशुतोष बाबू ने कहा कि तो हम बाईसिकिल जरूर लेंगे जन्म-दिन वाले रोज़।

बुआ ने कहा कि हाँ, यह बात पक्की रही, जन्म-दिन पर तुमको बाईसिकिल मिलेगी।

इस तरह वह इतवार का दिन हँसी-खुशी से पूरा हुआ। शाम होने पर बच्चों की बुआ चली गयी। पाजेब का शौक घड़ीभर का था। वह फिर उतारकर रख दी गईं; जिससे कहीं खो न जाये। पाजेब वह बारीक और सुबुक काम की थी और खासे दाम लग गए थे।

श्रीमती ने हमसे कहा कि क्यों जी, लगती तो अच्छी है, मैं भी एक बनवा लूँ।

मैंने कहा कि क्यों न बनवाओ! तुम कौन चार बरस की नहीं हो।

खैर, यह हुआ। पर मैं रात को अपनी मेज़ पर था कि श्रीमती ने आकर कहा, ''तुमने पाजेब तो नहीं देखी'' ?

मैंने आश्चर्य से कहा कि क्या मतलब?

बोली, कि देखो, यहाँ मेज़-वेज़ पर तो नहीं है। एक तो है, पर दूसरे पैर की मिलती नहीं है। जाने कहाँ गयी?

मैंने कहा कि जायेगी कहाँ? यहीं कहीं देख लो। मिल जायेगी।

उन्होंने मेरे मेज़ के कागज़ उठाने-धरने शुरू किये और अलमारी की किताबें टटोल डालने का भी मनसूबा दिखाया।

मैंने कहा कि यह क्या कर रही हो? यहाँ वह कहाँ से आई?

जवाब में वह मुझी से पूछने लगीं कि तो फिर कहाँ है?

मैंने कहा कि तुमने ही तो रक्खी होगी। कहाँ रक्खी थी?

बतलाने लगी कि मैंने दोपहर के बाद कोई दो बजे उतारकर दोनों को अच्छी तरह सम्भाल कर उस नीचे वाले बॉक्स में रख दी थीं। अब देखा तो एक है, दूसरी गायब है।

मैंने कहा कि तो चलकर वह इस कमरे में कैसे आ जायेगी? भूल हो गयी होगी। एक रखी होगी, एक वहीं-कहीं फर्श पर छूट गयी होगी। देखो, मिल जायेगी। कहीं जा नहीं सकती।

इस पर श्रीमती कहा-सुनी करने लगीं कि तुम तो ऐसे ही हो। खुद लापरवाह हो, दोष उल्टे मुझे देते हो। कह तो रही हूँ कि मैंने दोनों संभाल कर रखी थीं।

मैंने कहा की सम्भाल कर रखी थीं, तो फिर यहाँ-वहाँ क्यों देख रही हो? जहाँ रखी थीं वहीं से ले लो न। वहाँ नहीं है तो फिर किसी ने निकाली ही होगी।

श्रीमती बोलीं कि मेरा भी यही ख्याल हो रहा है। हो न हो, बंसी नौकर ने निकाली है। मैंने रखी, तब वह वहाँ मौजूद भी था।

मैंने कहा कि तो उससे पूछा?

बोलीं कि वह तो साफ इंकार करता है।

मैंने कहा, ''तो फिर?''

श्रीमती ज़ोर से बोलीं कि तो फिर मैं क्या बताऊँ? तुम्हें तो किसी बात की फिकर है नहीं। डाँटकर कहते क्यों नहीं हो, उसी बंसी को बुला कर? ज़रूर पाजेब उसी ने ली है?

मैंने कहा कि अच्छा, तो उसे क्या कहना होगा? यह कहूँ कि ला भाई पाजेब दे दे!

श्रीमती झल्लाकर बोलीं कि हो चुका बस कुछ तुमसे। तुम्हीं ने तो उस नौकर को शहजोर बना रखा है। डाँट न फटकार, नौकर ऐसे सिर न चढ़ेगा तो क्या होगा।

बोलीं कि कह तो रही हूँ कि किसी ने उसे बॉक्स में से निकाला ही है। और सोलह में पन्द्रह आने यह बंसी है। सुन रहे हो न, वही है।

मैंने कहा कि मैंने बंसी से पूछा था। उसने नहीं ली मालूम होता है।

इस पर श्रीमती ने कहा कि तुम नौकरों को नहीं जानते। वे बड़े छंटे होते हैं। ज़रूर बंसी ही चोर है। नहीं तो क्या फरिश्ते लेने आते।

मैंने कहा कि तुमने आशुतोष से भी पूछा?

बोलीं, पूछा था। वह तो खुद ट्रंक और बॉक्स के नीचे घुस-घुसकर खोज लगाने में मेरी मदद करता रहा है। वह नहीं ले सकता।

मैंने कहा उसे पतंग का बड़ा शौक है।

बोलीं कि तुम तो उसे बताते-बरजते कुछ हो नहीं। उमर होती जा रही है। वह यों ही रह जायेगा। तुम्हीं हो उसे पतँग की शह देने वाले।

मैंने कहा कि जो कहीं पाजेब ही पड़ी मिल गयी हो तो?

बोलीं कि नहीं, नहीं, नहीं! मिलती तो वह बता न देता?

खैर बातों-बातों में मालूम हुआ कि उस शाम आशुतोष पतंग और एक डोर का पिन्ना नया लाया है।

श्रीमती ने कहा कि यह तुम्हीं हो जिसने पतंग की उसे इजाज़त दी। बस, सारे दिन पतंग-पतंग। यह नहीं कि कभी उसे बिठाकर सबक की भी कोई बात पूछो। मैं सोचती हूँ कि एक दिन तोड़-ताड़ दूँ उसकी सब डोर और पतंग। हाँ, तो सारे वक्त वही धुन!

मैंने कहा कि खैर; छोड़ो। कल सवेरे पूछताछ करेंगे।

सवेरे बुलाकर मैंने गम्भीरता से उससे पूछा कि क्यों बेटा, एक पाजेब नहीं मिल रही है, तुमने तो नहीं देखी?

वह गुम हो आया। जैसे नाराज़ हो। उसने सिर हिलाया कि उसने नहीं ली। पर मुँह नहीं खोला।

मैंने कहा कि देखो बेटे, ली हो तो कोई बात नहीं, सच कह देना चाहिए।

उसका मुँह और भी फूल आया। और वह गुम-सुम बैठा रहा।

मेरे मन में उस समय तरह-तरह के सिद्धान्त आए। मैंने स्थिर किया कि अपराध के प्रति करुणा ही होनी चाहिए। रोष का अधिकार नहीं है। प्रेम से ही अपराध-वृत्ति को जीता जा सकता है। आतंक से उसे दबाना ठीक नहीं है। बालक का स्वभाव कोमल होता है और सदा ही उससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिए, इत्यादि।

मैंने कहा कि बेटा आशुतोष, तुम घबराओ नहीं। सच कहने से घबराना नहीं चाहिए। ली हो तो खुलकर कह दो बेटा! हम कोई सच कहने की सज़ा थोड़े ही दे सकते हैं। बल्कि सच बोलने पर तो इनाम मिला करता है।

आशुतोष सब सुनता हुआ बैठा रह गया। उसका मुँह सूजा था। वह सामने मेरी आँखों में नहीं देख रहा था। रह–रहकर उसके माथे पर बल पड़ते थे।

"क्यों बेटे, तुमने ली तो नहीं?"

उसने सिर हिला कर क्रोध से अस्थिर और तेज़ आवाज़ में कहा कि मैंने नहीं ली, नहीं ली, नहीं ली। यह कहकर वह रोने का हो आया, पर रोया नहीं। आँखों में आँसू रोक लिये।

उस वक्त मुझे प्रतीत हुआ, उग्रता दोष का लक्षण है।

मैंने कहा देखा बेटा, डरो नहीं; अच्छा जाओ। ढूँढ़ो; शायद कहीं पड़ी हुई वह पाजेब मिल जाये। मिल जायेगी तो हम तुम्हें इनाम देंगे।

वह चला गया और दूसरे कमरे में जाकर पहले तो एक कोने में खड़ा हो गया। कुछ देर चुपचाप खड़े रहकर वह फिर यहाँ–वहाँ पाजेब की तलाश में लग गया।

श्रीमती आकर बोलीं, "आशु से तुमने पूछ लिया? क्या ख्याल है?"

मैंने कहा कि सन्देह तो मुझे होता है। नौकर का काम तो यह है नहीं!

श्रीमती ने कहा कि नहीं जी, आशु भला क्यों लेगा?

मैं कुछ बोला नहीं। मेरा मन जाने कैसे गम्भीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ रहा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है; बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इल्ज़ाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयानक हो सकती है। लेकिन बच्चे के लिए वैसी लाचारी उपस्थित हो आई, यह और भी

कहीं भयावह है। यह हमारी आलोचना है। हम उस चोरी से बरी नहीं हो सकते।

मैंने बुलाकर कहा, "अच्छा सुनो। देखो, मेरी तरफ देखो, यह बताओ कि पाजेब तुमने छुन्नू को दी है न?"

वह कुछ देर तक कुछ नहीं बोला। उसके चेहरे पर रंग आया और गया। मैं एक-एक छाया ताड़ना चाहता था।

मैंने आश्वासन देते हुए कहा कि कोई बात नहीं। हाँ-हाँ, बोलो डरो नहीं। ठीक बताओ बेटा? कैसा हमारा सच्चा बेटा है।

मानो बड़ी कठिनाई के बाद उसने अपना सिर हिलाया।

मैंने बहुत खुश होकर कहा कि दी है न छुन्नू को?

उसने सिर हिला दिया।

अत्यन्त सांत्वना के स्वर में स्नेहपूर्वक मैंने कहा कि मुँह से बोलो। छुन्नू को दी है?

उसने कहा, "हाँ-आ।"

मैंने अत्यन्त हर्ष के साथ दोनों बाँहों में लेकर उसे उठा लिया। कहा कि ऐसे ही बोल दिया करते हैं अच्छे लड़के। आशू हमारा राजा बेटा है। गर्व के भाव से उसे गोद में लिये-लिये मैं उसकी माँ की तरफ गया। उल्लासपूर्वक बोला कि देखो हमारे बेटे ने सच क़बूल किया है। पाजेब उसने छुन्नू को दी है।

सुनकर उसकी माँ खुश हो आई। उन्होंने उसे चूमा। बहुत शाबाशी दी और उसकी बलैयां लेने लगी!

आशुतोष भी मुस्करा आया अगरचे एक उदासी भी उसके चेहरे से दूर नहीं हुई थी।

उसके बाद अलग ले जाकर मैंने उससे प्रेम से पूछा कि पाजेब छुन्नू के पास है न? जाओ, माँग ला सकते हो उससे?

आशुतोष मेरी ओर देखता हुआ बैठा रह गया। मैंने कहा कि जाओ, बेटे! ले आओ।

उसने जवाब में मुँह नहीं खोला।

मैंने आग्रह किया तो वह बोला कि छुन्नू के पास नहीं हुई तो वह कहाँ से देगा?

मैंने कहा कि तो जिसको उसने दी होगी उसका नाम बता देगा। सुनकर वह चुप हो गया। मेरे बार-बार कहने पर वह यही कहता रहा कि पाजेब छुन्नू के पास न हुई तो वह देगा कहाँ से?

अन्त में हारकर मैंने कहा कि वह कहीं तो होगी। अच्छा, तुमने कहाँ से उठाई थी?

''पड़ी मिली थी।''

''और फिर नीचे जाकर वह तुमने छुन्नू को दिखाई?''

''हाँ!''

''फिर उसी ने कहा कि इसे बेचेंगे?''

''हाँ!''

''कहाँ बेचने को कहा?''

''कहा मिठाई लाएँगे।''

''नहीं पतंग लाएँगे।''

''अच्छा, पतंग को कहा?''

''हाँ!''

''सो पाजेब छुन्नू के पास रह गई?''

''हाँ।''

''तो उसी के पास होनी चाहिए न? या पतंग वाले के पास होगी। जाओ बेटा, उससे ले आओ। कहना हमारे बाबू जी तुम्हें इनाम देंगे।''

वह जाना नहीं चाहता था। उसने फिर कहा कि छुन्नू के पास नहीं हुई तो कहाँ से देगा?

मुझे उसकी ज़िद बुरी मालूम हुई। मैंने कहा कि तो कहीं तुमने उसे गाड़ दिया है? क्या किया है? बोलते क्यों नहीं?

वह मेरी ओर देखता रहा और कुछ नहीं बोला।

मैंने कहा, ''कुछ कहते क्यों नहीं?''

वह गुम-सुम रह गया। और नहीं बोला।

मैंने डपटकर कहा कि जाओ, जहाँ हो वहीं से पाजेब लेकर आओ।

जब वह अपनी जगह से नहीं उठा और नहीं गया तो मैंने उसे कान पकड़कर उठाया। कहा कि सुनते हो? जाओ, पाजेब लेकर आओ। नहीं तो घर में तुम्हारा काम नहीं है।

उस तरह उठाया जाकर वह उठ गया और कमरे से बाहर निकल गया। निकलकर बरामदे के एक कोने में रूठा मुँह बनाकर खड़ा रह गया।

मुझे बड़ा क्षोभ हो रहा था। यह लड़का सच बोलकर अब किस बात से घबरा रहा है, यह मैं कुछ समझ न सका। मैंने बाहर आकर ज़रा धीरे से कहा कि जाओ भाई, जाकर छुन्नू से कहते क्यों नहीं हो?

पहले तो उसने कोई जवाब नहीं दिया और जवाब दिया तो बार-बार कहने लगा कि छुन्नू के पास नहीं हुई तो वह कहाँ से देगा?

मैंने कहा कि जितने में उसने बेची होगी वह दाम दे देंगे। समझे न जाओ, तुम कहो तो।

छुन्नू की माँ तो कह रही हैं कि उसका लड़का ऐसा काम नहीं कर सकता। उसने पाजेब नहीं देखी।

जिस पर आशुतोष की माँ ने कहा कि नहीं तुम्हारा छुन्नू झूठ बोलता है। क्यों रे आशुतोष तेने दी थी न?

आशुतोष ने धीरे से कहा कि हाँ दी थी।

दूसरी ओर से छुन्नू बढ़कर आया और हाथ फटकारकर बोला कि मुझे नहीं दी। क्यों रे मुझे कब दी थी?

आशुतोष ने ज़िद बाँधकर कहा कि दी तो थी। कह दो नहीं दी थी?

नतीजा यह हुआ कि छुन्नू की माँ ने छुन्नू को खूब पीटा और खुद भी रोने लगी। कहती जाती कि हाय रे, अब हम चोर हो गये, यह कुलच्छिनी औलाद जाने कब मिटेगी?

बात दूर तक फैल चली। पड़ोस की स्त्रियों में पवन पड़ने लगी। और श्रीमती ने घर लौटकर कहा कि छुन्नू और उसकी माँ दोनों एक से हैं।

मैंने कहा कि तुमने तेज़ा-तेज़ी क्यों कर डाली? ऐसे कोई बात भला कभी सुलझती है!

बोली कि हाँ, मैं तेज़ बोलती हूँ। अब जाओ ना, तुम्हीं उसके पास से पाजेब निकालकर लाते क्यों नहीं? तब जानूँ जब पाजेब निकलवा दो।

मैंने कहा कि पाजेब से बढ़कर शान्ति है। और अशान्ति से तो पाजेब मिल नहीं जायेगी।

श्रीमती बुदबुदाती हुई नाराज़ होकर मेरे सामने से चली गई।

थोड़ी देर बाद छुन्नू की माँ हमारे घर आई। श्रीमती उन्हें लाई थीं। अब उनके बीच गर्मी नहीं थी, उन्होंने मेरे सामने आकर कहा कि छुन्नू तो पाजेब के लिए इन्कार करता है। वह पाजेब कितने की थी मैं उसके दाम भर सकती हूँ।

मैंने कहा, ''यह आप क्या कहती हैं। बच्चे बच्चे हैं। आपने छुन्नू से सहूलियत से पूछा भी?''

उन्होंने उसी समय छुन्नू को बुलाकर मेरे सामने कर दिया। कहा, कि क्यों रे, बता क्यों नहीं देता जो तैने पाजेब देखी हो?

छुन्नू ने ज़ोर से सिर हिलाकर इन्कार किया और बताया कि पाजेब आशुतोष के हाथ में मैंने देखी थी और वह पतंग वाले को दे आया है। मैंने खूब देखी थी वह चाँदी की थी।

"तुम्हें ठीक मालूम है?"

"हाँ, वह मुझसे कह रहा था कि तू भी चल। पतंग लाएँगे।"

"पाजेब कितनी बड़ी थी? बताओ तो।"

छुन्नू ने उसका आकार बताया। जो ठीक ही था।

मैंने उसकी माँ की तरफ देखकर कहा कि देखिए न पहले यही कहता था कि मैंने पाजेब देखी तक नहीं। अब कहता है कि देखी है।

माँ ने मेरे सामने छुन्नू को खींचकर तभी धम्म-धम्म पीटना शुरू कर दिया। कहा कि क्यों रे, झूठ बोलता है? तेरी चमड़ी न उधेड़ी तो मैं नहीं।

मैंने बीच-बचाव करके छुन्नू को बचाया। वह शहीद की भाँति पिटता रहा था। रोया बिल्कुल नहीं था और एक कोने में खड़े आशुतोष को जाने किस भाव से वह देख रहा था।

खैर, मैंने सबको छुट्टी दी। कहा कि जाओ बेटा छुन्नू, खेलो। उसकी माँ को कहा कि आप उसे मारिएगा नहीं। और पाजेब कोई ऐसी बड़ी चीज़ नहीं है।

छुन्नू चला गया। तब उसकी माँ ने पूछा कि आप उसे कसूरवार समझते हो।

मैंने कहा कि मालूम तो होता है कि उसे कुछ पता है। और वह मामले में शामिल है।

इस पर छुन्नू की माँ ने पास बैठी हुई मेरी पत्नी से कहा, ''चलो बहन जी, मैं तुम्हें अपना सारा घर दिखाये देती हूँ। एक-एक चीज़ देख लो। होगी पाजेब तो जायेगी कहाँ?''

मैंने कहा, ''छोड़िए भी। बेबात की बात बढ़ाने से क्या फायदा!'' सो ज्यों-त्यों मैंने उन्हें दिलासा दिया। नहीं तो वह छुन्नू को पीट-पाट हाल-बेहाल कर डालने का प्रण ही उठाये ले रही थी। कुलच्छनी, आज उसी धरती में नहीं गाड़ दिया, यो मेरा नाम नहीं।

खैर, जिस-जिस भाँति बखेड़ा टाला। मैं इस झंझट में दफ़्तर भी समय पर नहीं जा सका। जाते वक्त श्रीमती को कह गया कि देखो आशुतोष को धमकाना मत। प्यार से सारी बातें पूछना। धमकाने से बच्चे बिगड़ जाते हैं, और हाथ कुछ नहीं आता। समझी न?

शाम को दफ़्तर से लौटा तो श्रीमती ने सूचना दी कि आशुतोष ने सब बतला दिया है। ग्यारह आने पैसे में वह पाजेब पतंग वाले को दे दी है। पैसे उसने थोड़े-थोड़े करके देने को कहे हैं। पाँच आने जो दिये वह छुन्नू के पास हैं। इस तरह रत्ती-रत्ती बात उसने कह दी है।

कहने लगीं कि बड़े मैंने प्यार से पूछ-पूछकर यह सब उसके पेट में से निकला है। दो-तीन घंटे मैं मगज मारती रही। हाय राम, बच्चे का भी क्या जी होता है।

मैं सुनकर खुश हुआ। मैंने कहा कि चलो अच्छा है, अब पाँच आने भेजकर पाजेब मँगा लेंगे। लेकिन यह पतंग वाला भी कितना बदमाश है, बच्चों के हाथ से ऐसी चीज़ें लेता है। उसे पुलिस में दे देना चाहिए। उचक्का कहीं का!

फिर मैंने पूछा कि आशुतोष कहाँ है?

उन्होंने बताया की बाहर ही कहीं खेल-खाल रहा होगा।

मैंने कहा की बंसी, जाकर उसे बुला तो लाओ।

बंसी गया और उसने आकर कहा कि वह अभी आते हैं।

''क्या कर रहा है?''

''छुन्नू के साथ गिल्ली-डण्डा खेल रहे हैं।''

थोड़ी देर में आशुतोष आया। तब मैंने उसे गोद में लेकर प्यार किया। आते-आते उसका चेहरा उदास हो गया था और गोद में लेने पर भी वह विशेष प्रसन्न मालूम नहीं हुआ।

उसकी माँ ने खुश होकर कहा कि हमारे आशुतोष ने सब बातें अपने आप पूरी-पूरी बता दी हैं। हमारा आशुतोष बड़ा सच्चा लड़का है।

आशुतोष मेरी गोद में टिका रहा। लेकिन अपनी बड़ाई सुनकर भी उसको कुछ हर्ष नहीं हुआ प्रतीत होता था।

मैंने कहा कि आओ चलो। अब क्या बात है। क्यों हज़रत तुमको पाँच ही आने ही तो मिले हैं न? हम से पाँच आने पैसे माँग लेते तो क्या हम न देते? सुनो, अब से ऐसा मत करना, बेटे!

कमरे में ले जाकर मैंने उससे फिर पूछताछ की, ''क्यों बेटा, पतंग वाले ने पाँच आने तुम्हें दिये न?''

''हाँ।''

''और वह छुन्नू के पास है न?''

''हाँ।''

''अभी तो उसके पास होंगे न?''

''नहीं।''

''खर्च कर दिए?''

''नहीं।''

''नहीं, खर्च किये?''

‘‘हाँ।’’

‘‘खर्च किये, कि नहीं खर्च किए?’’

उस ओर से प्रश्न करने पर वह मेरी ओर देखता रहा, उत्तर नहीं दिया।

‘‘बताओ, खर्च कर दिये कि अभी हैं?’’

जवाब में उसने एक बार ‘हाँ’ कहा तो दूसरी बार ‘नहीं’ कहा।

मैंने कहा कि तो यह क्यों नहीं कहते कि तुम्हें नहीं मालूम है?

‘‘हाँ।’’

‘‘बेटा, मालूम है न?’’

‘‘हाँ!’’

‘‘पतंग वाले से पैसे छुन्नू ने लिये हैं न?’’

‘‘हाँ।’’

‘‘तुमने क्यों नहीं लिये?’’

वह चुप।

‘‘पाँचों इकन्नी थीं, या दुअन्नी और पैसे भी थे?’’

वह चुप!

‘‘बतलाते क्यों नहीं हो?’’

चुप!

‘‘इकन्नियाँ कितनी थीं, बोलो?’’

‘‘दो।’’

‘‘बाकी पैसे थे?’’

‘‘हाँ।’’

‘‘दुअन्नी नहीं थी?’’

‘‘हाँ।’’

‘‘दुअन्नी थी?’’

‘‘हाँ।’’

मुझे क्रोध आने लगा। डपटकर कहा कि सच क्यों नहीं बोलते जी? सच तो बताओ कितनी इकन्नियाँ थीं और कितना क्या था?

वह गुम-सुम खड़ा रहा, कुछ नहीं बोला।

‘‘बोलते क्यों नहीं?’’

वह नहीं बोला।

‘‘सुनते हो! बोलो .... नहीं तो ....’’

आशुतोष डर गया। और कुछ नहीं बोला?

‘‘सुनते नहीं, मैं क्या कह रहा हूँ?’’

इस बार भी वह नहीं बोला तो मैंने पकड़कर उसके कान खींच लिये। वह बिना आँसू लाये गुम-सुम खड़ा रहा!

‘‘अब भी नहीं बोलोगे?’’

वह डर के मारे पीला हो आया। लेकिन बोल नहीं सका। मैंने ज़ोर से बुलाया, ‘‘बंसी, यहाँ आओ, इसको ले जाकर कोठरी में बन्द कर दो।’’

बंसी नौकर उसे उठाकर ले गया और कोठरी में मूँद दिया।

दस मिनट बाद मैंने फिर उसे पास बुलवाया। उसका मुँह सूजा हुआ था। बिन कुछ बोले उसके ओंठ हिल रहे थे। कोठरी में बन्द होकर भी वह रोया नहीं।

मैंने कहा, ‘‘क्यों रे, अब तो अकल आई?’’

वह सुनता हुआ गुम-सुम खड़ा रहा।

''अच्छा पतंग-वाला कौन-सा है? दाईं तरफ का वह चौराहे वाला?'' उसने कुछ ओठों में ही बड़बड़ा दिया। जिसे मैं कुछ न समझ सका।

''वह चौराहे वाला? बोलो —''

''हाँ।''

''देखो, अपने चाचा के साथ चले जाओ। बता देना कि कौन-सा है। फिर उसे स्वयं भुगत लेंगे। समझते हो न?''

यह कहकर मैंने अपने भाई को बुलवाया। सब बात समझाकर कहा, ''देखो, पाँच आने के पैसे ले जाओ। पहले तुम दूर रहना। आशुतोष पैसे ले जाकर उसे देगा और अपनी पाजेब माँगेगा। अव्वल तो वह पाजेब लौटा ही देगा। नहीं तो उसे डाँटना और कहना कि तुझे पुलिस के सुपुर्द कर दूँगा। बच्चों से माल ठगता है? समझे? नरमी की ज़रूरत नहीं है।''

''और आशुतोष अब जाओ अपने चाचा के साथ जाओ।'' वह अपनी जगह पर खड़ा था। सुनकर भी टस-से-मस होता दिखाई नहीं दिया।

''नहीं जाओगे?''

उसने सिर हिला दिया कि नहीं जाऊँगा।

मैंने तब उसे समझाकर कहा कि ''भैया घर की चीज़ है, दाम लगे हैं। भला पाँच आने में रुपया का माल किसी के हाथ खो दोगे। जाओ, चाचा के संग जाओ। तुम्हें कुछ नहीं कहना होगा। हाँ, पैसे दे देना और अपनी चीज़ वापस माँग लेना। दे दे, नहीं दे, नहीं दे। तुम्हारा इससे सरोकार नहीं। सच है न, बेटे! अब जाओ।''

पर वह जाने को तैयार ही नहीं दीखा। मुझे लड़के की गुस्ताख़ी पर बड़ा बुरा मालूम हुआ। बोला, ''इसमें बात क्या है। इसमें मुश्किल कहाँ है? समझाकर बात कर रहे हैं सो समझता ही नहीं, सुनता ही नहीं।''

मैंने कहा कि, ''क्यों रे, नहीं जाएगा?''

उसने फिर सिर हिला दिया कि नहीं जाऊँगा।

मैंने प्रकाश, अपने छोटे भाई को बुलाया। कहा, ''प्रकाश इसे पकड़कर ले जाओ।''

प्रकाश ने उसे पकड़ा और आशुतोष अपने हाथ-पैरों से उसका प्रतिकार करने लगा। वह साथ जाना नहीं चाहता था।

मैंने अपने ऊपर बहुत जब्र करके फिर आशुतोष को पुचकारा, कहा कि जाओ भाई! डरो नहीं। अपनी चीज घर में आयेगी। इतनी-सी बात समझते नहीं। प्रकाश इसे गोदी में ले जाओ और जो चीज़ माँगे उसे बाज़ार से दिलवा देना। जाओ भाई, आशुतोष!

पर उसका मुँह फूला हुआ था। जैसे-तैसे बहुत समझाने पर वह प्रकाश के साथ चला। ऐसे चला मानो पैर उठाना उसे भारी हो रहा हो। आठ बरस का यह लड़का होने आया फिर भी देखो न किसी भी बात की उसमें समझ नहीं है। मुझे जो गुस्सा आया तो क्या बतलाऊँ। लेकिन यह याद करके कि गुस्से से बच्चे सम्भलने की जगह बिगड़ते हैं। मैं अपने को दबाता चला गया। खैर, वह गया तो मैंने चैन की सांस ली।

लेकिन देखता क्या हूँ कि कुछ देर में प्रकाश लौट आया है।

मैंने पूछा, ''क्यों?''

बोला कि आशुतोष भाग आया है।

मैंने कहा कि, ''अब वह कहाँ है?''

''वह रूठा खड़ा है घर में नहीं आता।''

''जाओ पकड़कर तो लाओ।''

वह पकड़ा हुआ आया। मैंने कहा, ''क्यों रे, तू शरारत से बाज़ नहीं आयेगा? बोल, जायेगा कि नहीं?''

वह नहीं बोला, तो मैंने कसकर उसे दो चांटे दिये। थप्पड़ लगते ही वह एकदम चीखा, पर फौरन चुप हो गया। वह वैसे ही मेरे सामने खड़ा रहा।

मैंने उसे देखकर मारे गुस्से से कहा कि ले जाओ इसे मेरे सामने से। जाकर कोठरी में बन्द कर दो। दुष्ट!

इस बार वह आध–एक घंटे बन्द रहा। मुझे ख्याल आया कि मैं ठीक नहीं कर रहा हूँ, लेकिन जैसे कि दूसरा रास्ता न दीखता था। मार–पीटकर मन को ठिकाना देने की आदत पड़ गई थी, और कुछ अभ्यास न था।

खैर, मैंने इस बीच प्रकाश को कहा कि तुम दोनों पतंग वाले के पास जाओ। मालूम करना कि किसने पाजेब ली है। होशियारी से मालूम करना। मालूम होने पर सख्ती करना। मुरौव्वत की ज़रूरत नहीं, समझे?

प्रकाश गया पर लौटने पर बताया कि किसी के पास पाजेब नहीं है।

सुनकर मैं झल्ला आया, कहा कि तुमसे कुछ काम नहीं हो सकता। ज़रा–सी बात नहीं हुई, तुमसे क्या उम्मीद रखी जाये?

वह अपनी सफाई देने लगा। मैंने कहा, ''बस तुम जाओ।''

प्रकाश मेरा बहुत लिहाज मानता था। वह मुँह डालकर चला गया। कोठरी खुलवाने पर आशुतोष को फर्श पर सोता पाया। उसके चेहरे पर अब भी आँसू नहीं थे। सच पूछो तो मुझे उस समय बालक पर करुणा हुई। लेकिन आदमी में एक ही साथ जाने क्या–क्या विरोधी भाव उठते हैं।

मैंने उसे जगाया। वह हड़बड़ाकर उठा। मैंने कहा, ''कहो, क्या हालत है?''

थोड़ी देर तक वह समझा ही नहीं। फिर शायद पिछला सिलसिला याद आया। झट उसके चेहरे पर वही ज़िद, अकड़ और प्रतिरोध के भाव दिखाई देने लगे।

मैंने कहा कि या तो राजी-राजी चले जाओ, नहीं तो इस कोठरी में फिर बन्द किए देते हैं।

आशुतोष पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा हो, ऐसा नहीं मालूम हुआ।

खैर, उसे पकड़कर लाया और समझाने लगा। मैंने निकालकर उसे एक रुपया दिया और कहा, "बेटा, इसे पतंग वाले को देना और पाजेब माँग लेना। कोई घबराने की बात नहीं। तुम तो समझदार लड़के हो।"

उसने कहा कि जो पाजेब उसके पास नहीं हुई तो वह कहाँ से देगा?

"इसका क्या मतलब, तुमने कहा न कि पाँच आने में पाजेब दी है! न हो छुन्नू को भी साथ ले लेना। समझे?"

वह चुप हो गया। आखिर समझाने पर जाने को तैयार हुआ। मैंने प्रेम-पूर्वक उसे प्रकाश के साथ जाने को कहा। उसका मुँह भारी देखकर डाँटने वाला ही था कि इतने में सामने उसकी बुआ दिखाई दी।

बुआ ने आशुतोष के सिर पर हाथ रखकर पूछा कि कहाँ जा रहे हो, मैं तो तुम्हारे लिए केले और मिठाई लाई हूँ।

आशुतोष का चेहरा रूठा ही रहा। मैंने बुआ से कहा कि उसे रोको मत, जाने दो।

आशुतोष रुकने को उद्यत था। वह चलने में आनाकानी दिखाने लगा।

बुआ ने पूछा, "क्या बात है?"

मैंने कहा, "कोई बात नहीं, जाने दो न उसे।"

पर आशुतोष मचलने पर आ गया था। मैंने डाँटकर कहा, "प्रकाश, इसे ले क्यों नहीं जाते हो।"

बुआ ने कहा कि "बात क्या है? क्या बात है?"

मैंने पुकारा, "तू बंसी—भी साथ जा। बीच से लौटने न पावे।" सो मेरे आदेश पर दोनों आशुतोष को ज़बरदस्ती उठाकर सामने से ले गए। बुआ ने कहा, "क्यों उसे सता रहे हो?"

मैंने कहा कि कुछ नहीं, ज़रा यों ही—

फिर मैं उनके साथ इधर-उधर की बातें ले बैठा। राजनीति राष्ट्र की ही नहीं होती मुहल्ले में भी राजनीति होती है। यह भार स्त्रियों पर टिकता है। कहाँ क्या हुआ, क्या होना चाहिए इत्यादि चर्चा स्त्रियों को लेकर रंग फैलाती है। इसी प्रकाश की कुछ बातें हुई, फिर छोटा-सा बक्सा सरकाकर बोली, इनमें वह कागज़ है तो तुमने माँगे थे। और यहाँ—

यह कहकर उन्होंने अपनी बास्कट की जेब में हाथ डालकर पाजेब निकालकर सामने की, जैसे सामने बिच्छू हो। मैं भयभीत भाव से कह उठा कि यह क्या?

बोली कि उस रोज़ भूल से यह एक पाजेब मेरे साथ ही चली गयी थी।

शब्दार्थ

पाजेब	= नुपूर, पायल
टखना	= पिंडली एवं एड़ी के बीच की दोनों ओर उभरी हड्डी
सुघड़	= सुडौल, सुंदर
मनसूबा	= इरादा
शहजोर	= बलवान
फ़रिश्ता	= देवदूत
रोष	= क्रोध
आतंक	= डर
भयावह	= भयानक
लाचारी	= विवशता
आलोचना	= गुण–दोष विवेचन
बलैया लेना	= बलिहारी जाना
हर्ष	= प्रसन्नता
प्रतीत	= ज्ञात
सुपुर्द	= सौंपना
गुस्ताख़ी	= अशिष्टता, उद्दंडता
प्रतिकार	= कार्य आदि को रोकने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न
मुरौव्वत	= उदारता
प्रतिरोध	= विरोध
उद्यत	= तैयार

अभ्यास

(क) विषय–बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) मुन्नी के लिए पाजेब कौन लाया?

(*ii*) मुन्नी को पाजेब मिलने के बाद आशुतोष भी किस चीज़ के लिए ज़िद करने लगा?

(*iii*) लेखक की पत्नी को पाजेब चुराने का संदेह सबसे पहले किस पर हुआ?

(*iv*) आशुतोष को किस चीज़ का शौक था?

(*v*) वह शहीद की भाँति पिटता रहा था। रोया बिल्कुल नहीं था ....।
उपर्युक्त संदर्भ में बताइए कि कौन पिटता रहा?

(*vi*) गुम हुई पाजेब कहाँ से मिली?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) लेखक को आशुतोष पर पाजेब चुराने का संदेह क्यों हुआ?

(*ii*) पाजेब चुराने का संदेह किस-किस पर किया गया?

(*iii*) आशुतोष ने चोरी नहीं की थी फिर भी उसने चोरी का अपराध स्वीकार किया। इसका क्या कारण हो सकता है?

(*iv*) पाजेब कहाँ और कैसे मिली?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) आशुतोष का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(*ii*) आशुतोष के माता-पिता ने बिना किसी मनोवैज्ञानिक सूझबूझ के आशुतोष के प्रति जो व्यवहार किया-उसे अपने शब्दों में लिखिए।

(*iii*) आशुतोष के किन कथनों और कार्यों से संकेत मिलता है कि उसने पाजेब नहीं चुराई थी?

(*iv*) ''प्रेम से अपराध वृत्ति को जीता जा सकता है, आतंक से उसे दबाना ठीक नहीं है .....'' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थान पर उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए—

(*i*) बुआ ने कहा छी-छी तू कोई लड़की है

(*ii*) मैंने कहा छोड़िए भी बेबात की बात बढ़ाने से क्या फायदा

(*iii*) मैंने कहा क्यों रे तू शरारत से बाज़ नहीं आयेगा

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
• **खुशी का ठिकाना न रहना**	—बहुत प्रसन्न होना	____________
• **टस से मस न होना**	—अपनी ज़िद पर अड़े रहना	____________
• **चैन की सांस लेना**	—राहत महसूस करना	____________
• **मुँह फुलाना**	—रूठ जाना, नाराज़ होना	____________

3. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(*i*) ਸ਼ਾਮ ਹੋਣ ਤੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਭੂਆ ਚਲੀ ਗਈ।

(*ii*) ਸੱਚ ਕਹਿਣ ਵਿੱਚ ਘਬਰਾਉਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ।

(*iii*) ਉਸ ਦਿਨ ਭੁੱਲ ਨਾਲ ਇਹ ਇੱਕ ਪਜੇਬ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਚਲੀ ਗਈ ਸੀ।

(*iv*) ਬਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਨਵੀਂ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪਜੇਬ ਚੱਲੀ ਹੈ।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. पाजेब कहानी के लेखक के स्थान पर यदि आप होते तो आशुतोष के साथ कैसा व्यवहार करते?

2. यदि कभी बिना किसी पुष्टि के आप पर चोरी का इल्ज़ाम लगा दिया जाए तो आपकी स्थिति कैसी होगी?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. बालमन से संबंधित खेल (जैनेंद्र कुमार), ईदगाह (प्रेमचंद) आदि कहानियों को पढ़िए।

2. 'पाजेब' कहानी को अध्यापक की सहायता से एकांकी के रूप में मंचित कीजिए।
3. कहानी को पढ़ने के पश्चात आपको अपने माता-पिता से जुड़े कुछ प्रसंग याद आए होंगे—उन्हें डायरी में लिखिए।
4. मार, डाँट और भय से बच्चों को सुधारा जा सकता है—इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद कीजिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **आना :** पुरानी मुद्रा में 'आना' (इकन्नी) दुअन्नी, चवन्नी आदि मुद्राएँ चलती थी। पुरानी मुद्रा के अनुसार 'आना' से अभिप्राय था एक रुपये का सोलहवाँ हिस्सा।
2. **गिल्ली डंडा :** गिल्ली डंडा पूरे भारत में काफी प्रसिद्ध खेल है। इसे सामान्यत: एक बेलनाकार लकड़ी से खेला जाता है जिसकी लंबाई बेसबॉल या क्रिकेट के बल्ले के बराबर होती है। इसी की तरह की छोटी बेलनाकार लकड़ी को गिल्ली कहते हैं जो किनारों से थोड़ी नुकीली या घिसी हुई होती है।

   खेल का उद्देश्य डंडे से गिल्ली को मारना है। गिल्ली को ज़मीन पर रखकर डंडे से किनारों पर मारते हैं जिससे गिल्ली हवा में उछलती है। विरोधी खिलाड़ी को गिल्ली को पकड़ना होता है। यदि वह इसमें सफल हो जाता है तो पहला खिलाड़ी आऊट हो जाता है। यदि वह गिल्ली को न पकड़ पाए तो उसे उस गिल्ली को पहले खिलाड़ी के डंडे पर मारना होता है। इस तरह खेल इसी क्रम में जारी रहता है।

******

डॉ० इन्दु बाली

डॉ० इन्दु बाली का जन्म लाहौर (पाकिस्तान) में सन् 1932 में हुआ था। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा पहले लाहौर और फिर विभाजन के बाद शिमला से प्राप्त की। उच्च शिक्षा लुधियाना और चंडीगढ़ से ली। हिंदी अध्यापन को इन्होंने अपने व्यवसाय के रूप में चुना तथा सरकारी कॉलेजों में प्राध्यापिका के रूप में पंजाब के विभिन्न शहरों में अध्यापन कार्य किया। इस बीच इन्होंने अनेक स्थानों पर प्राचार्या (प्रिंसिपल) के रूप में भी कार्य किया तथा अब पिछले अनेक वर्षों से चंडीगढ़ में सेवानिवृत्त (रिटायर्ड) जीवन व्यतीत कर रही हैं।

डॉ० इन्दु बाली ने भले ही सारा जीवन अध्यापन के क्षेत्र में व्यतीत किया, परन्तु मूलतः ये रचनाकार ही हैं। लेखन जैसे इनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन चुका है। इस क्षेत्र में इन्होंने अनेक कहानियों के साथ-साथ उपन्यास तथा आलोचना साहित्य का भी सृजन किया। पंजाब के हिंदी कहानीकारों में इनका विशिष्ट स्थान है। इतना ही नहीं, भाषा विभाग, पंजाब की ओर से इन्हें शिरोमणि साहित्यकार के सम्मान से भी अलंकृत किया गया। इसके अतिरिक्त भी इन्हें अनेक प्रकार के पुरस्कार समय-समय पर मिलते रहे हैं। इनकी लगभग पन्द्रह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पहली कहानी 'मैं दूर से देखा करती हूँ' सन् 1964 में धर्मयुग में प्रकाशित हुई थी। चित्रकला और संगीत भी इनके कलाकार की अभिव्यक्ति के साधन बने हैं।

'मन रो दिया', 'दो हाथ', 'मेरी तीन मौतें', 'दूसरी औरत होने का सुख', 'टूटती-जुड़ती', 'मैं खरगोश होना चाहती हूँ' आदि इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं तथा 'बांसुरिया बज उठी', 'सोए प्यार की

अनुभूति'— उपन्यास हैं। इनकी भाषा सुबोध, सरस तथा प्रभावोत्पादक है।

पाठ-परिचय : इस कहानी में दो हाथों के माध्यम से सौन्दर्य के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। सौन्दर्य का एक रूप कर्म करने में विद्यमान है। ईश्वर ने हमें दो हाथ दिये हैं, मात्र सजाने के लिए नहीं। हाथों का वास्तविक सौंदर्य कर्म करने में है। फिर भले ही वे खराब हो जाएँ, खुरदरे हो जाएँ-इससे अंतर नहीं पड़ता। इसी संदेश द्वारा लेखिका ने लोगों की मानसिक कुण्ठा को दूर करने का प्रयास किया है। बिन मां की नीरू जिसे घर का सारा कार्य करना पड़ता है, अपने हाथों के खराब होने पर कुंठाग्रस्त है। परंतु कॉलेज के वार्षिक उत्सव के अवसर पर सभापति की ओर से उसे विशेष रूप से उसके उन हाथों के लिए इनाम दिया गया, जिन पर काम करने के सौंदर्य की आभा झलक रही थी। इस प्रकार लेखिका 'कर्म के सौंदर्य की अमूल्य कीमत' का संदेश बच्चों तक पहुँचाने में पूर्णतः सफल रही हैं।

दो हाथ

बर्तन साफ कर नीरू ने रसोई को धोया और साग काटने में मग्न हो गई। घर का काम और कॉलेज की पढ़ाई, बस यही उसका जीवन था। माँ का अभाव प्रायः उसे खला करता। अपनी हम उमर सहेलियों को खेलते-देखती तो उसके मन में टीस-सी उठने लगती। काश, उसकी भी माँ होती तो वह भी इसी तरह बेफिकर-सी चहकती-गाती, झूमती-नाचती। यही सोचते हुए मशीन की तरह अपना काम निपटा कर, पढ़ाई की किताबें ले उनमें डूब जाती।

कभी-कभी पढ़ते और काम करते समय जब उसका ध्यान अपने हाथों की ओर जाता तो वह उदास हो जाती। फिर सोचती, मोर के पैर भी तो कुरूप होते हैं। इससे क्या होता है। सुन्दरता में क्या वह मोर से कम है। भगवान ने उसे सुन्दर चेहरा दिया है। हाथों से दिन भर काम करेगी तो उन में सुन्दरता और कोमलता कहाँ से आयेगी। कभी बर्तन माँजना, कभी झाड़ू देना, कभी चपाती सेकते हुए हाथ का जलना बस हर पल काम और काम रसोई का काम निपटा चुपचाप कपड़ों का ढेर धोना। किन्तु रात को जब पिता जी सिर पर हाथ रख कर कहते, ''मेरी बेटी थक गई होगी।'' तो पिता का अपार दुलार पाकर सभी अभाव भूल जाती। उनका प्यार भरा स्पर्श बड़ा सुखद लगता।

कभी वह हँसते-हँसते उदास हो जाती तो पिता झट पूछते, ''क्या बात है, मेरी रानी बिटिया उदास क्यों है?''

''कुछ नहीं पिता जी।''

''अरे-अरे-तुम तो रो रही हो, क्या बात है?''

''नहीं-नहीं-हाँ, बस यूं ही मन भर आया था।''

''बिना बात के मन भर आया था; यह भी कभी होता है। शायद, माँ की बात याद आ गई थी? क्यों ठीक है न?''

‘‘नहीं–तो, हाँ।’’ और वह फूट–फूट कर रो पड़ती। पिता जी सिर पर हाथ फेरते हुए कहते, ‘‘शायद मैं तुम्हें माँ का पूरा प्यार नहीं दे पाया।’’ उनकी आँखें भी डब–डबा गयी थीं।

‘‘नहीं–नहीं, आप ग़लत न समझें। वह तो जाने क्यों वैसे ही याद आ गयी, भला आपसे अधिक प्यार कौन दे सकता है?’’

उसी समय नीरू को ध्यान आया कि अभी उसे ढेर सारा काम करना है। रसोई में सारे बर्तन जूठे पड़े हैं। चूल्हे को लीपना है। कल के लिए कोयले तोड़ने हैं। इस बार लकड़ियाँ इतनी मोटी हैं कि रोज़ कुल्हाड़ी से उन्हें छाँटना होता है। उसे याद आया कैसे माँ उसे घर का कोई काम नहीं करने देती थी। जब कभी माँ का हाथ बंटाने के लिए कुछ करना चाहती, माँ कह देती, ‘‘यह सब काम तेरे करने के नहीं। हम अनपढ़ औरतें तो जानवर होती हैं और माँ अपने हाथ खोल कर दिखाती। मोटी खुरदरी उंगलियाँ, कटी–फटी चमड़ी और टेढ़–मेढ़े नाखून!’’ नीरू को जाने कैसे लगता और वह अपने सुन्दर हाथों की कोमलता में एक प्यार–का सपना बुनने लगती। माँ कहती, ‘‘तुम्हारी उंगलियाँ ककड़ी की तरह कोमल हैं, इन पाँच उंगलियों में पाँच अंगूठियाँ डालूंगी, मेंहदी रचाऊंगी, कलाई को चूड़ियों से सजाऊंगी।’’ और माँ उन्हें गहराई से छू चूम लेती, अपनी गालों पर घुमाती पर अब नीरू जैसे ही अपने हाथों को देखती उसका सपना टूटने लगता। मन की गहराई में जाने कैसा तूफान घिरने–उभरने लगता। काम करते हुए कई बार नीरू का ध्यान इस बात की ओर चला जाता और वह सोचती क्या उसके हाथ हमेशा ऐसे ही रहेंगे? पहले जैसे न होंगे? अनजाने ही वह अपने हाथों को साड़ी के पल्लू में छिपाने की कोशिश करती। माँ की याद उसे और बेचैन करने लगती।

अगले दिन रसोई में नीरू काम कर रही थी। पिता दफ़्तर से लौटे थे और आते ही प्यार से नीरू को पास बुला कर कहने लगे, ‘‘आज से सारा काम मैं किया करूँगा।’’

‘‘यह कैसे हो सकता है, मेरे रहते आप काम करें?’’

‘‘क्यों नहीं, तुम भी तो मेरे रहते सब काम करती हो?’’

‘‘यह बात अलग है।’’

‘‘नहीं बेटी; तुम भोली हो—चलो दोनों बाँट कर करेंगे, क्यों ठीक है न?’’

तभी नीरू और भी ज़ोर से रोने लगी और बोली, ‘‘मेरी सब सहेलियाँ मेरे हाथ देखकर हँसती हैं और कहती हैं, तेरी शादी कभी नहीं होगी, तुझे कोई पसन्द नहीं करेगा। चेहरे के सौन्दर्य के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण हाथों का सौंदर्य होता है। फिर किसी को शादी दासी या नौकरानी से तो करनी नहीं। लड़कियों के हाथ तो अवश्य सुंदर, कोमल, स्निग्ध और चमकीले होने चाहिए। और भी जाने क्या-क्या कह मेरा और आपका उपहास करती हैं।’’ ‘‘जाने कौन यह सब व्यर्थ की बातें तुम्हारे दिमाग में भरता रहता है सब पगली हैं। देखो नीरू! काम करने वाले की शोभा तो उसके हाथों से ही आँकी जाती है। अपने हाथ से काम करने वाली लड़की तो शक्ति और सम्पन्नता की प्रतीक होती है। काम करने वाले ये दो हाथ तो मानव जीवन की शोभा हैं। भगवान ने यह दो हाथ कर्म करने के लिए बनाए हैं। यही इतिहास, संस्कृति और साहित्य का निर्माण करते हैं। हाथों का सौंदर्य तो कर्म की गति के साथ सुंदर से सुंदरतर और सुंदरतर से सुन्दरतम होता जाता है।’’ यही सब कहते कहते वह गम्भीर हो गये थे।

तभी नीरू में एक नई जागृति आ गई और वह उमंग से भर कहने लगी, ‘‘सच पिता जी, आप ठीक कहते हैं।’’ और वह अपने पिता के चेहरे की तरफ श्रद्धालु भक्त की तरह देखने लग गई। उनके चेहरे पर ऐसा भाव उदय हुआ था कि जिसकी गहराई के रहस्य से नीरू का अन्तर्मन प्रकाशित होने लगा था। वह अपने काम में फिर से लग गई,

तरह–तरह के पकवान बना टेबल संवारने लगी। दो हाथों के सौन्दर्य का रहस्य धीरे–धीरे, परत–दर–परत खुलने लगा था।

माँ की मृत्यु के बाद भाई बहनों को सम्भालने का सारा बोझ उसने ही उठा लिया था। सभी छोटे बहन–भाई खेलने खाने में मस्त रहते और माँ की तरह गम्भीर स्वभाव के कारण अपनी ही धुन में समस्त कर्त्तव्य निभाती रहती। पढ़ाई में भी सबसे आगे रहती। घर के काम में व्यस्त हाथ कलम पर भी खूब चलते थे।

कल कॉलेज में वार्षिक उत्सव था और उसे ढेरों इनाम दिये जाने वाले थे। पढ़ाई के साथ साथ संगीत, चित्रकला और खेलों में भी ढेरों इनाम जीते थे। पर न जाने क्यों आज रह रह कर माँ की याद आ रही थी और फिर मन उदास हो जाता था। रात भर अजीब–अजीब सपने देखती रही, माँ को देखा सपना उनमें कहीं न था, उसका अपना सपना कहीं खो गया था। वह चौंक–चौंक कर उठती रही। रह कर अपने हाथों को टटोलती, स्पर्श करती और शरमा जाती। उसके कॉलेज की सभी लड़कियाँ हफ्तों से अपने नाखूनों की सजावट में जुटी थीं। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह इन हाथों का क्या करे ?

दो हाथ–दो हाथ–दो हाथ–चारों तरफ सुन्दर सुन्दर कमल रूपी हाथ दिखाई देते थे। सारा आकाश उन हाथों से भर गया था, पर वह अन्धेरा कैसा है? वह घबरा जाती है उसे उस अन्धेरे में कुछ दिखाई नहीं देता, उसका दम घुटने लगता है। तभी उनके मध्य से उदित होते दो कटे–फटे, मैले धब्बेदार, टेढ़े नाखूनों वाले, आटा लगे, कहीं से जले, काले पीले बदशक्ल दो हाथ दिखाई दिये। पर अजीब बात है उन दो हाथों के उदित होते ही वातावरण जगमगा उठा, जैसे सूर्य के उदित होते ही रात्रि का अंधकार जगमगा उठता है और सुन्दर हाथ तारों के समान कहीं खो गये थे, नीरू यह अनोखा सपना देख फिर सो न पाई। उसके मन में अजीब उद्वेलन–सा हो रहा था।

प्रात: का समय बहुत ही व्यस्तता का समय होता है। हर तरफ जल्दी और भाग–दौड़। कोई कुछ माँग रहा था कोई कुछ। बस समय भी भाग रहा था। नीरू किसी तरह सारा काम निपटा तैयार हुई और कॉलेज जा पहुँची। पर जल्दी में हाथ धोना ही भूल गई। हाल में उत्सव था और वहाँ पहुँचने के बाद ही उसे याद आया। पर अब क्या हो सकता था? सभी बैठ चुके थे। सभापति आ चुके थे। भागते–भागते ही वह अपनी निश्चित कुर्सी पर पहुँची और उदास खोई–सी बैठ गई। सभापति के स्वागत के बाद इनाम बंटने आरम्भ हुए। नीरू का नाम बहुत ही सम्मान और तारीफ़ों के बाद लिया गया। बड़े चाव से भागती हुई वह स्टेज पर गई पर इनाम लेने के लिए ज्यों ही हाथ फैलाये शर्म से उसके हाथ कांपने लगे और आँखों से आँसू टपकने लगे।

इनाम बंट जाने के बाद सभापति ने कहा, ''एक विशेष इनाम देने को मन चाह रहा है। वह इनाम है उस लड़की के लिए जिसके हाथ

कॉलेज में सबसे सुंदर होंगे। निर्णय जजों पर छोड़ा जाता है। इतना सुनना था कि सुन्दर सुंदर हाथ अपने अपने को संवारते से आ धमके। आज सभी लड़कियां खुश थीं। उनकी किस्मत जाग उठी थी। कोई मूल्य डालने वाला तो मिला। पर नीरू मौन सिर झुकाये खड़ी थी। इतनी उदास और शर्मिन्दा तो वह पहले कभी न हुई थी। उसकी समस्त सहन शक्ति मानो खो गई थी, लगने लगा था एक भयंकर विस्फोट होगा और वह धरती में समा जायेगी।''

सभापति ने निर्णय सुनाया तो सभी चौंक गये। वह कह रहे थे नीरू के दो हाथ मुझे पिछले चार घंटों से अपने अपूर्व सौंदर्य के प्रति आकर्षित कर रहे थे। आज मैंने जाना सुन्दर हाथ कर्म से सजते हैं। कर्मशीलता ही हाथों की शोभा होती है। हाथ सर्जक हैं, उनका सौंदर्य कार्य करने की क्षमता है। वह जीवन का बाह्य नहीं, आंतरिक सौंदर्य और श्रृंगार हैं। वह हाथ कितने सुन्दर हो सकते हैं जिन्हें कर्म-साधना में अपनी ही होश नहीं और जो केवल दूसरों की सेवा में लगे हैं। हाथों पर लगा आटा, काले-पीले जले निशान, स्थान-स्थान से कटे-फटे नदी-नालों सम बहता अद्‌वितीय अलौकिक सृष्टि का अपार-सौंदर्य मानो यहीं आकर समा गया हो। ऐसे सुंदर हाथ मैंने पहले कभी नहीं देखे! यह कहते कहते सभापति समस्त हाल मे बैठी लड़कियों की तरफ देखने लगे, जैसे उनकी आँखें कहीं दूर खो गई हों।

नीरू इनाम लेकर लौट रही थी। वह खुश थी। धरती सम गम्भीर, सागर सी अपार थी उसकी खुशी की उपलब्धि। उसने अपने हाथों की ओर देखा। उसे आज से दोनों हाथ सुंदर लग रहे थे। साथ यह भी उसके मन में आया कि सौंदर्य का केंद्र बिन्दु कहाँ है?

शब्दार्थ

अभाव	= कमी
टीस	= कसक, सहसा रह-रह कर उठने वाली पीड़ा
स्पर्श	= छूना
सौन्दर्य	= सुन्दरता
स्निग्ध	= कोमल
शोभा	= सुंदरता
रहस्य	= गुप्त बात, राज़
उद्वेलन	= उछाल (भावों की उथल-पुथल)
कर्मशीलता	= फल की इच्छा छोड़कर काम करना
सर्जक	= रचना करने वाला
अद्वितीय	= अनोखा
अलौकिक	= जो इस लोक में न मिलता हो
सृष्टि	= संसार
उपलब्धि	= विशेष प्राप्ति

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—**

(*i*) नीरू की दिनचर्या क्या थी?

(*ii*) नीरू को प्राय: किसका अभाव खलता था?

(*iii*) नीरू अपनी हम उमर सहेलियों को खेलते देखकर क्या सोचा करती थी?

(*iv*) पिता का दुलार पाकर नीरू क्या भूल जाती थी?

(*v*) नीरू ने पढ़ाई के साथ अन्य कौन-से इनाम जीते थे?

(*vi*) कॉलेज की लड़कियाँ हफ़्तों से किस की सजावट में जुटी थीं?

(*vii*) सभापति ने कौन-सा निर्णय सुनाया?

(*viii*) घर लौटते समय नीरू खुश क्यों थी?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए—**

(*i*) नीरू घर के कौन-कौन से काम किया करती थी?

(*ii*) नीरू की माँ उसे घर के काम करने से क्यों रोकती थी?

(*iii*) नीरू की सहेलियाँ उसका मज़ाक क्यों उड़ाती थीं?

(*iv*) नीरू को उसके पिता ने हाथों का क्या महत्त्व समझाया?

(*v*) इनाम लेते समय नीरू को शर्म क्यों आ रही थी?

(*vi*) 'कर्मशीलता ही हाथों की शोभा होती है।' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(*vii*) इनाम लेकर लौटते समय नीरू को अपने हाथ सुंदर क्यों लग रहे थे?

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए—**

(*i*) नीरू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(*ii*) नीरू ने कौन-सा अनोखा सपना देखा था?

(*iii*) सभापति ने हाथों का वास्तविक सौंदर्य क्या बताया?

(*iv*) 'दो हाथ' कहानी का उद्देश्य क्या है?

(ख) भाषा-बोध

1. **निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
• **मन भर आना**	–भावुक होना	______________________
• **फूट-फूट कर रोना**	–बहुत ज़्यादा रोना	______________________
• **आँखें डबडबा आना**	–आँखों में आँसू आ जाना	______________________
• **दम घुटना**	–उकता जाना	______________________

2. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थान पर उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए—

(*i*) पिता झट पूछते क्या बात है मेरी रानी बिटिया उदास क्यों है

(*ii*) पिता जी सिर पर हाथ फेरते हुए कहते शायद मैं तुम्हें माँ का पूरा प्यार नहीं दे पाया

(*iii*) वह उमंग से भर कहने लगी सच पिता जी आप ठीक कहते हैं

3. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(*i*) ਬਰਤਨ ਸਾਫ਼ ਕਰਕੇ ਨੀਰੂ ਨੇ ਰਸੋਈ ਨੂੰ ਧੋਇਆ ਅਤੇ ਸਾਗ ਕੱਟਣ ਵਿੱਚ ਮਗਨ ਹੋ ਗਈ।

(*ii*) ਸਭਾਪਤੀ ਨੇ ਫ਼ੈਸਲਾ ਸੁਣਾਇਆ ਤਾਂ ਸਭ ਹੈਰਾਨ ਹੋ ਗਏ।

(*iii*) ਭਗਵਾਨ ਨੇ ਇਹ ਦੋ ਹੱਥ ਕਰਮ ਕਰਨ ਲਈ ਬਣਾਏ ਹਨ।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. क्या आप भी नीरू की तरह हर काम ज़िम्मेदारी से निभाते हैं ? स्पष्ट कीजिए।
2. अपने दैनिक कार्यों की सूची बनाइए और बताइए कि अपनी पसंद के कार्य के लिए आप किस तरह समय निकालते हैं?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. कर्मशील व्यक्तियों के जीवन-चरित्र पढ़े।
2. कर्मठ व्यक्तियों के चित्र एकत्रित करके एक छोटी सी पत्रिका तैयार करें।

3. आप अपने घर अपनी माता जी की मदद किस प्रकार करते हैं? क्या केवल लड़कियाँ ही मदद करती हैं या लड़के भी? - कक्षा में चर्चा करें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

हाथ पर मुहावरे

हाथ धो कर पीछे पड़ना-बुरी तरह पीछा करना।

हाथ मलना-पछताना।

हाथ साफ करना-चोरी करना।

हाथ फैलाना-याचना करना।

हाथ पाँव फूल जाना-घबरा जाना।

हाथों हाथ बिकना-बहुत जल्दी बिकना।

हाथों के तोते उड़ना-बहुत व्याकुल होना।

हाथ धो बैठना-किसी वस्तु से वंचित होना, गँवा बैठना।

हाथ पैर मारना-कोशिश करना।

हाथ रँगना-खूब धन कमाना।

हाथ खींचना-सहायता बंद करना।

हाथ तंग होना-पैसों का अभाव।

******

हिमांशु जोशी

हिंदी के अग्रणी कथाकार एवं पत्रकार हिमांशु जोशी का जन्म 4 मई, 1935 को जोसपूड़ा गाँव (उत्तराँचल) में हुआ। ये गत 50 वर्षों से लेखन एवं पत्रकारिता में सक्रिय हैं। इन्होंने लगभग 25 वर्ष देश की अग्रणी पत्रिका 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' (हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली) में वरिष्ठ पत्रकार के रूप में कार्य किया। ये कोलकाता से प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध पत्रिका 'वागर्थ' के सम्पादक रहे तथा नार्वे से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'शाँतिदूत' के सलाहकार सम्पादक भी रहे।

रचनाएँ : इन्होंने दस **उपन्यास** लिखे जिनमें से 'अरण्य', 'छाया मत छूना मत', 'महासागर', 'कगार की आग', 'समय साक्षी है', 'सु-राज' आदि उल्लेखनीय हैं।

कहानी संग्रह : इन्होंने अठारह कहानी संग्रहों की रचना की है जिनमें 'हिमांशु जोशी की चुनी हुई कहानियाँ', 'चर्चित कहानियाँ', 'आँचलिक कहानियाँ', 'इस बार फिर बर्फ गिरी तो', 'प्रतिनिधि लोकप्रिय कहानियाँ', 'इकहत्तर कहानियाँ', 'गंधर्व गाथा' आदि प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

कविता संग्रह : 'अग्नि-सम्भव', 'नील नदी का वृक्ष', 'एक आँखर की कविता'।

यात्रा वृत्तांत : 'यात्राएँ' तथा 'नार्वे : सूरज चमके आधी रात'।

जीवनी तथा खोज : 'अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ' तथा 'यातना—शिविर में (अण्डमान की अनकही कहानी)'।

बाल साहित्य : इन्होंने बाल साहित्य में भी अनुपम योगदान दिया। 'तीन तारे', 'बचपन की याद रही कहानियाँ', 'सुबह के सूरज', 'भारत रत्न: पं० गोविन्दबल्लभ पन्त' आदि उल्लेखनीय बाल साहित्य हैं।

हिमांशु जोशी जी को उनके हिंदी में अद्वितीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार तथा भारत सरकार द्वारा अनेक सम्मानित पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। इन्हें दक्षिण अफ्रीका में जोहान्सबर्ग में नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में ये हिंदी–सलाहकार समितियों के सदस्य रहे हैं। वर्तमान में ये प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित 'केन्द्रीय हिंदी सलाहकार समिति' के साथ–साथ 'संसदीय कार्य मंत्रालय' तथा 'मानव संसाधन मंत्रालय' की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य हैं।

हिमांशु जोशी जी ने 'दूरदर्शन' तथा 'आकाशवाणी' के लिए भी कार्य किया है। इनके उपन्यास 'सु–राज' पर आधारित फ़िल्म 'सु–राज' ने 'इण्डियन पेनोरमा' के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में भारतीय फ़िल्मों का प्रतिनिधित्व किया। शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के सुप्रसिद्ध बांग्ला–उपन्यास 'चरित्रहीन' का रेडियो–सीरियल निर्देशित किया।

इन्होंने हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, जर्मनी, फ्रांस, नेपाल, ब्रिटेन, मारीशस, त्रिनिदाद, थाइलैंड, सूरीनाम, नीदरलैंड, जापान, कोरिया आदि देशों में यात्राएँ की हैं।

वर्तमान में ये स्वतंत्र लेखन व पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय हैं। इसके साथ–साथ ये नार्वे से प्रकाशित पत्रिका 'शाँतिदूत' (विश्व के 151 देशों में पढ़ी जाने वाली पत्रिका) के विशेष सलाहकार तथा हिंदी अकादमी दिल्ली की पत्रिका 'इन्द्रप्रस्थ भारती' के सम्पादन–मंडल के सदस्य भी हैं।

पाठ–परिचय : 'साए' कहानी में जीवन के एक प्रमुख पहलू पर प्रकाश डाला गया है कि कठिन समय में मदद करने वाला मित्र ही असली मित्र है। अफ्रीका में सांझे में काम करते दो मित्रों में से एक की मृत्यु के समाचार को दूसरा मित्र छिपा देता है। अपने मृत मित्र के पूरे परिवार का भरण–पोषण करता है। वह मृत मित्र के सांझे की रकम पिता बनकर लगातार उसके बच्चों के लिए भेजता है। इस तरह उन्हें सफल ज़िंदगी देकर अंत में मृत मित्र के पुत्र को उसके हिस्से का काम सौंप देता है।

साए

नन्हें-नन्हें दुधमुँहे बच्चे! अकेली रुग्ण पत्नी! नाते-रिश्ते का ऐसा कोई नहीं, जो ज़रूरत पर काम आ सके! पति सुदूर अफ़्रीका में, अस्पताल में बीमार! महीनों तक कोई पत्र नहीं....

हर रोज़ वे रंग-बिरंगे टिकटोंवाले पत्र की राह देखते परंतु डाकिया भूल से भी इधर झाँकता न था।

हाँ, बहुत लंबे अर्से के बाद एक दिन एक पत्र मिला। बड़ा अजीब-सा था यह, बहुत करुण, बहुत दर्दभरा। नैरोबी के किसी अस्पताल से। लिखा था — रंग-भेद के कारण पहले यूरोपियन लोगों के अस्पताल में जगह नहीं मिली किंतु बाद में कुछ कहने-कहलवाने पर स्थान तो मिला पर इस अनावश्यक विलंब के कारण रोग काबू से बाहर हो गया है। डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी है किंतु उसमें भी अब सार लगता नहीं। चंद दिनों की मेहमानदारी है....। उसके बाद तुम लोगों का क्या होगा, कुछ सूझता नहीं। पास होते तो.... लेकिन.... भरोसा रखना.... भगवान सबका रखवाला है.... जिसने पैदा किया है, वह परवरिश भी करेगा....।

पत्नी पत्र पढ़ती.... रोती.... अबोध बच्चे रूलाईभरी आँखों से माँ का मुँह ताकते।

फिर चिट्ठी पर चिट्ठियाँ डालीं उन्होंने, फिर तार, तब कहीं केन्या की मोहर लगा एक विदेशी लिफ़ाफ़ा मिला। लिखा था, परमात्मा का ही यह चमत्कार है कि हालत सुधर रही है। एक नया जन्म मिला है....।

थोड़े दिनों बाद फिर पत्र आया, पहले की ही तरह किसी से बोलकर लिखवाया हुआ- हालत पहले से अच्छी है। चिंता की अब कोई बात नहीं।

हमेशा की तरह कुछ रुपये भी पहुँच गए इस बार।

बच्चों के मुरझाए मुखड़े खिल उठे। रुग्ण पत्नी का स्वास्थ्य तनिक सुधार की ओर बढ़ा। चिट्ठियाँ नियमित रूप से आती रहीं। रुपये भी पहुँचते रहे।

उसने लिखा था, हाथ के ऑपरेशन के बाद अब वह पत्र नहीं लिख पाता इसलिए किसी से लिखवा लेता है। इधर एक नया टाइपराइटर खरीद लिया है उसने। अपने कारोबार का भी कुछ विस्तार कर रहा है— धीरे-धीरे। कुछ नई ज़मीन खरीदने का भी इरादा है- शहर के पास एक 'फ़ार्म हाउस' की योजना है....

घर के बारे में, पत्नी के बारे में, बच्चों की पढ़ाई के बारे में कितने ही प्रश्न थे! बड़ी उत्साहजनक बातें थीं-विस्तार से। इतना अच्छा पत्र पहले कभी भी न आया था। सबको स्वाभाविक रूप से प्रसन्नता हुई।

डूबती नाव फिर पार लग रही थी- धीरे-धीरे।

लगभग तीन बरस बीत गए।

घर की ओर से पत्र पर पत्र जाते रहे कि अब उसे थोड़ा-सा समय निकालकर कभी घर भी आना चाहिए। बच्चे उसे बहुत याद करते हैं। उसे देखनेभर को तरसते हैं। जो-जो हिदायतें चिट्ठियों में लिखी रहती हैं, उनका अक्षरशः पालन करते हैं। माँ को किसी किस्म का कष्ट नहीं देते; कहना मानते हैं; पढ़ने में बहुत मेहनत करते हैं। अज्जू कहता है कि बड़ा होकर वह भी पापा की तरह अफ्रीका जाएगा। इंजीनियर बनेगा। पापा के साथ खूब काम करेगा। अब वह पूरे बारह साल का हो गया है। छठी कक्षा में सबसे अव्वल आया है। मास्टर जी कहते हैं कि उसे वज़ीफ़ा मिलेगा। उसी से अपनी आगे की पढ़ाई जारी रख सकता है। तनु अब अठारह पार कर रही है। उसका भी ब्याह करना है। कहीं कोई अच्छा-सा लड़का, अपनी जात-बिरादरी का मिले तो चल सकता है....

चिट्ठी के जवाब में बहुत-सी बातें थीं। लिखा था कि इस समय तो नहीं, हाँ, अगले साल तनु के ब्याह पर अवश्य पहुँचेगा। योग्य वर

तो यहाँ भी मिल सकते हैं पर विदेश में, अफ़्रीका जैसे देश में, लड़की को ब्याहने के पक्ष में वह नहीं है। दहेज की चिंता न करना। वहीं वर की खोज करना।

वर की तलाश में अधिक भटकने की आवश्यकता न हुई। आसानी से खाता-पीता घर मिल गया। शायद इतना अच्छा घराना न मिलता लेकिन इस भरम से कि कन्या का बाप अफ़्रीका में सोना बटोर रहा है, सब सहज हो गया।

शादी की तिथि निश्चित हो गई। नैरोबी से पत्र आया कि वह समय पर पहुँच रहा है। गहने, कपड़े सब बनवाकर वह साथ लाएगा लेकिन शादी के समय वह चाहकर भी पहुँच नहीं पाया। विवशताओं से भरा लंबा पत्र आया कि इस बीच जो एक नया कारोबार शुरू किया है, उसमें मज़दूरों की हड़ताल चल रही है। ऐसे संकट के समय में, यह सब छोड़कर वह कैसे आ सकता है! हाँ, गहने, कपड़े और रुपये भिजवा दिए हैं। वर-वधू के चित्र उसे अवश्य भेजें, वह प्रतीक्षा करेगा।

खैर, ब्याह हो गया, धूमधाम के साथ। विवाह के सारे चित्र भी भेज दिए। अज्जू ने इस वर्ष कई इनाम जीते। हाई स्कूल की परीक्षा में ज़िले में सर्वप्रथम रहा। खेलों में भी पहला। बहुत-से सर्टिफ़िकेट मिले, वज़ीफ़ा मिला। इनाम में मिली सारी वस्तुओं के फ़ोटो वे पापा को भेजना न भूले।

बदले में कीमती कैमरा आया। गरम सूट का कपड़ा आया। सुंदर घड़ी आई। और मर्मस्पर्शी लंबा पत्र आया। लिखा था कि वह बच्चों की उम्मीद पर ही जी रहा है। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहना चाहिए। बच्चे इसी तरह नाम रोशन करते रहें- उनके सहारे वह ज़िंदगी की डोर कुछ और लंबी खींच लेगा.... यह सारा कारोबार सब उन्हीं के लिए तो है!

पर, अनेक वादे करने पर भी घर आना संभव न हो पाता। हर बार कुछ-न-कुछ अड़चनें आ जातीं और उसका जाना स्थगित हो जाता।

पाँवों पर पंख बाँधकर समय उड़ता रहा–अबाध गति से।

बच्चों ने लिखा कि यदि उसका इधर आ पाना कठिन हो रहा है, तो वे ही सब अफ्रीका आने की सोच रहे हैं। कुछ वर्ष वहीं बिता लेंगे।

उत्तर में केवल इतना ही था कि काम बहुत बढ़ गया है। नैरोबी, मोम्बासा के अलावा अन्य स्थानों पर भी उसे नियमित रूप से जाना पड़ता है। यहाँ विश्वास के आदमी मिलते नहीं इसलिए उसे स्वयं ही खटना पड़ता है। यहाँ की आबोहवा, बच्चों की पढ़ाई, अनेक प्रश्न थे। अज्जू जब तक अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर लेता, तब तक कुछ नहीं हो सकता। समय निकालकर कभी वह स्वयं घर आने का प्रयास करेगा। बच्चों की बहुत याद आती है। घर की बहुत याद आती है। लेकिन, विवशता है, क्या किया जाए!

अंत में वह दिन भी आ पहुँचा जब अज्जू ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली। कहीं अच्छी नौकरी की तलाश शुरू हुई। पर पिता के अब भी घर आने की संभावना न दिखी तो उसने लिखा– अम्मा बीमार रहती हैं, बहुत कमज़ोर हो गई हैं। एक बार, अंतिम बार देखना भर चाहती हैं।

प्रत्युत्तर में विस्तृत पत्र मिला। इलाज के लिए रुपये भी। परंतु इस बार अज्जू ने ही जाने का कार्यक्रम बना लिया। अकस्मात पहुँचकर पापा को चौंकाने की पूरी–पूरी योजना के साथ।

टिकट खरीद लिया। पासपोर्ट, वीज़ा भी सब देखते–देखते बन गया और एक दिन दिल्ली से वह विमान से रवाना भी हो गया।

उसके मन में गहरी उत्कंठा थी कि पापा उसे देखकर कितने चकित होंगे! उन्होंने कल्पना भी न की होगी कि एकाएक वह इतनी दूर एक दूसरे देश में इतनी आसानी से आ जाएगा। उनकी निगाहों में तो अभी वह उतना ही छोटा होगा, जब वह निक्कर पहनकर आँगन में गुल्ली–डंडा खेलता था!

नैरोबी के हवाई अड्डे पर उतरकर वह सीधा उसी पते पर गया, जो पत्र में दिया हुआ था परंतु वहाँ ताला लगा था। हाँ, उसके पिता की पुरानी, धुँधली नेमप्लेट अवश्य लगी थी।

आसपास पूछताछ की तो पता चला कि एक वृद्ध भारतीय अप्रवासी अवश्य यहाँ रहते हैं। रात को देर से दफ़्तर से घर लौटते हैं। किसी से मिलते-जुलते नहीं। निपट अकेले हैं।

वह बाहर बरामदे में रखी बेंच पर बैठा प्रतीक्षा करता रहा।

रात को एक बूढ़ा व्यक्ति ताला खोलने लगा तो देखा- एक युवक सामान के सामने बैठा ऊँघ रहा है।

उसका नाम-धाम पूछा तो उसे अपनी बाँहों में भर लिया।

बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया।

भोजन के बाद वे उसे अपने कमरे में ले गए। दीवार की ओर उन्होंने इंगित किया- एक नन्हा बच्चा माँ की गोद में ढुलका किलक रहा है।

"यह किसका चित्र है?"

युवक ने गौर से देखा। कुछ झेंपते हुए कहा, "मेरा!"

वृद्ध इस बार कुछ और ज़ोर से खिलखिलाए, ''मेरे बच्चे, तुम इतने बड़े हो गए हो! सच, कितने साल बीत गए। जैसे कल की बात हो!'' उन्होंने उसके चेहरे की ओर देखा, ''तुम शायद नहीं जानते, तुम्हारे पिता का मैं कितना जिगरी दोस्त हूँ। कितने लंबे समय तक हम साथ-साथ रहे, दो दोस्तों की तरह नहीं, सगे भाइयों की तरह। उसी ने मुझे हिंदुस्तान से यहाँ बुलाया था। बड़ी लगन से सारा काम सिखलाया। साथ-साथ सांझे में हमने यह कारोबार शुरू किया। नैरोबी की आज यह एक बहुत अच्छी फ़र्म है। यह सब उसी की बदौलत है....'' कहते-कहते वह ठिठक गए।

उसका हाथ अपने हाथों में थामते हुए बोले, ''तुम्हारी माँ कैसी हैं?''

''अच्छी हैं....।''

''भाई-बहन....?''

''सब ठीक हैं।''

''कहीं कोई कठिनाई तो नहीं?''

''नहीं। सब ठीक है।''

''बस, यही मैं चाहता था.... यही।'' हौले से उन्होंने उसका हाथ सहलाया। देर तक शून्य में पलकें टिकाए कुछ सोचते रहे। कुछ क्षणों का मौन भंग कर खोए-खोए-से बोले, ''देखो बेटे, तिनकों के सहारे तो हर कोई जी लेता है। लेकिन, कभी-कभी हम तिनकों के साए मात्र के आसरे, भँवर से निकलकर किनारे पर आ लगते हैं। हमारा जीवन कुछ ऐसे ही तंतुओं के सहारे टिका रहता है। यदि वे टूट जाएँ, छिन्न-छिन्न होकर बिखर जाएँ, तो पलभर में पानी के बुलबुलों की तरह सब समाप्त हो जाता है....।''

''.... ज़रा सोचो बेटे!'' वे खाँसे, ''अगर तुम्हारे पिता की मृत्यु आज से 10–15 साल पहले हो जाती, तो क्या होता! भले ही वे एक अच्छी रकम तुम्हारे नाम छोड़ जाते।'' उन्होंने युवक के असमंजस में डूबे, गंभीर चेहरे की ओर देखा, ''रुपये रेत में गिरे पानी की तरह कहीं विलीन हो जाते और तुम अनाथ हो जाते! तुम्हारी माँ घुल–घुलकर कब की मर चुकी होती। तुम इतने हौसले से पढ़ नहीं पाते। जहाँ तुम आज हो, वहाँ तक नहीं पहुँच पाते। निराशा की, हताशा की, असुरक्षा की इतनी गहरी खाई में होते, कि वहाँ से अँधेरे के अलावा और कुछ भी न दीखता तुमको....।''

उन्होंने अपने सूखे होठों को जीभ की नोक से भिगोया, ''हम दुर्बल होते हुए, असहाय, अकेले होते हुए भी कितने–कितने बीहड़ वनों को पार कर जाते हैं, सहारे की एक अदृश्य डोर के सहारे....''

उनका गला भर आया, ''तुम्हारे पिता तो तभी गुज़र गए थे। अपने सांझे कारोबार से, उनके ही हिस्से के पैसे तुम्हें नियमित रूप से भेजता रहा। कितने वर्षों से मैं इसी दिन के इंतज़ार में था.... अब तुम बड़े हो गए हो। अपने इस कारोबार में मेरा हाथ बँटाओ। तुम सरसब्ज़ हो गए, मेरा वचन पूरा हो गया जो मैंने उसे मरते समय दिया था।....'' उनका गला भर आया। डबडबाई आँखों से वे दीवार पर टँगे एक धुँधले–से चित्र की ओर न जाने क्या–क्या सोचते हुए देखते रहे!

शब्दार्थ

रुग्ण	= बीमार	**स्थगित**	= कुछ समय के लिए रोक देना
सुदूर	= बहुत दूर	**अबाध**	= बाधा रहित, बिना रुकावट
विलंब	= देरी	**आबोहवा**	= जलवायु
परवरिश	= पालन-पोषण	**प्रत्युत्तर**	= जवाब में
अबोध	= अनजान, नासमझ	**अकस्मात्**	= सहसा, अचानक
टाइपराइटर	= टाइप करने की मशीन	**उत्कंठा**	= प्रबल इच्छा
स्वाभाविक	= बिना किसी बनावट के	**इंगित**	= इशारा
हिदायतें	= सीख	**भँवर**	= लहरों का चक्कर
अक्षरशः	= ज्यों-का-त्यों	**असमंजस**	= दुविधा
अव्वल	= प्रथम	**असुरक्षा**	= सुरक्षा का अभाव
विवशता	= मजबूरी	**बीहड़**	= ऊबड़-खाबड़
वज़ीफ़ा	= छात्र-वृत्ति	**सरसब्ज़**	= हरा-भरा
मर्मस्पर्शी	= दिल को छू लेने वाला		

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) परिवार वाले हर रोज़ किसकी राह देखते थे?

(*ii*) घर का मुखिया कारोबार करने कहाँ गया हुआ था?

(*iii*) अज्जू बड़ा होकर क्या बनना चाहता था?

(*iv*) अज्जू को नैरोबी में मिला वृद्ध व्यक्ति कौन था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) नैरोबी के अस्पताल से आए पत्र को पढ़कर पत्नी परेशान क्यों हो गई?

(*ii*) घर से जाने वाले पत्र में अज्जू और तनु के बारे में क्या-क्या लिखा था?

(*iii*) तनु के लिए वर सहज रूप से मिल जाने का क्या कारण था?

(*iv*) अज्जू के लिए अफ्रीका से क्या-क्या आया था?

(*v*) पढ़ाई पूरी करने के बाद अज्जू ने अफ्रीका जाने का निर्णय किन-किन कारणों से किया?

(*vi*) अज्जू को अंत में पिता के जिगरी दोस्त ने भरे गले से क्या बताया?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) वृद्ध व्यक्ति का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(*ii*) वृद्ध व्यक्ति ने अज्जू और उसके परिवार की देखभाल में क्या भूमिका निभाई और क्यों?

(*iii*) 'साए' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(*iv*) **निम्नांकित कथनों के भावार्थ स्पष्ट करो—**

- "तिनकों के सहारे तो हर कोई जी लेता है लेकिन कभी-कभी हम तिनकों के साए मात्र के आसरे भँवर से निकलकर किनारे पर आ लगते हैं।"
- "हम दुर्बल होते हुए, असहाय, अकेले होते हुए भी कितने-कितने बीहड़ वनों को पार कर जाते हैं, आसरे की एक अदृश्य डोर के सहारे...."

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए—

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पति	– ____________	बेटा	– ____________
युवक	– ____________	बच्चा	– ____________
वर	– ____________	मज़दूर	– ____________

2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अबोध	______	______	अप्रवासी	______	______
असहाय	______	______	विलंब	______	______
अदृश्य	______	______	विलीन	______	______
असुरक्षा	______	______	विमान	______	______

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
मेहमानदारी	______	______	नियमित	______	______
भारतीय	______	______	आसानी	______	______
स्वाभाविक	______	______	आवश्यकता	______	______

4. निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
ब्याह	– ____________	घर	– ____________
बूढ़ा	– ____________	पाँव	– ____________
भाई	– ____________	आज	– ____________
हाथ	– ____________	दो	– ____________
रात	– ____________	मुँह	– ____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. वृद्ध व्यक्ति ने अपने मरते हुए जिगरी दोस्त को जो वचन दिया था उसे पूरा किया; यदि आप उस वृद्ध की जगह होते तो क्या करते ?
2. परिवार को पिता की मृत्यु की सूचना न देकर पिता के जिगरी दोस्त ने अच्छा किया या बुरा — अपने विचार लिखें।
3. यदि पिता का मित्र पत्र और पैसे न भेजता तो परिवार की क्या हालत होती ?
4. क्या पत्र की जगह फैक्स, ई-मेल, टैलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं ?
5. आप भविष्य में क्या बनना चाहते हैं ?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. 'सच्ची मित्रता' पर कुछ सूक्तियाँ चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए।
2. 'जैसी कथनी वैसी करनी' विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिये।
3. परोपकार और ईमानदारी विषय पर कहानियाँ पढ़िये।
4. पत्र-लेखन विधा के अनेक संग्रह और संकलन हैं जैसे :— 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' - जवाहर लाल नेहरू, 'गांधी जी के पत्र' - मोहन दास कर्मचंद गांधी, 'सुभाष के पत्र' -नेता जी सुभाष चंद्र बोस आदि - इन्हें पढ़िए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **केन्या (कीनिया) :** केन्या गणतंत्र पूर्वी अफ्रीका में स्थित एक देश है। भूमध्य रेखा पर हिंद महासागर से सटे हुए इस देश की सीमा उत्तर में इथोपिया, उत्तर-पूर्व में सोमालिया, दक्षिण में तंजानिया, पश्चिम में युगांडा व विक्टोरिया झील और उत्तर पश्चिम में सूडान से मिलती है। देश की राजधानी नैरोबी है। राजभाषाएँ स्वाहिली व अंग्रेज़ी हैं।

2. **भँवर :** नदी के बहाव में वह स्थान जहाँ पानी चक्कर की तरह घूमता है।

3. **पासपोर्ट :** पासपोर्ट एक राष्ट्रीय सरकार द्वारा जारी वह दस्तावेज़ होता है जो अंतरराष्ट्रीय यात्रा के लिए उसके धारक की पहचान और राष्ट्रीयता को प्रमाणित करता है। पहचान स्थापित करने के लिए नाम, जन्मतिथि, लिंग और जन्म स्थान के विवरण इसमें प्रस्तुत किये जाते हैं। आमतौर पर एक व्यक्ति की राष्ट्रीयता और नागरिकता समान होती है।

4. **वीज़ा :** वीज़ा लैटिन शब्द कार्टा वीज़ा से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है, 'वह कागज़ जो देखा गया हो'। वीज़ा इंगित करता है कि अमुक व्यक्ति वीज़ा जारी करने वाले देश में प्रवेश के लिए अधिकृत है। वीज़ा वह दस्तावेज़ होता है जो एक व्यक्ति को किसी अन्य देश में प्रवेश करने की अनुमति देता है। वीज़ा एक अलग दस्तावेज़ के रूप में भी हो सकता है लेकिन अधिकतर यह आवेदक के पासपोर्ट पर ही एक मोहर के रूप में पृष्ठांकित किया जाता है। वीज़ा जारी करने वाला देश आमतौर पर इसके साथ कई शर्तें जोड़ देता है जैसे वीज़ा की वैधता, वह अवधि जिसके दौरान एक व्यक्ति उस देश में रह सकता है, दिए गए वीज़ा पर व्यक्ति कितनी बार यात्रा कर सकता है आदि।

******

गोविंद कुमार 'गुंजन'

गोविंद कुमार गुंजन का आधुनिक हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म 28 अगस्त, 1956 सनावद मध्यप्रदेश में हुआ। इन्होंने एम०ए० अंग्रेज़ी साहित्य में प्राप्त की है। साहित्य की विविध विधाओं में रचनाओं का सृजन कर ये हिंदी साहित्य की सेवा कर रहे हैं। ये मूलतः कवि तथा ललित निबंधकार हैं। ललित निबंधों की रचना में इनकी खास पहचान है। इनके निबन्ध वैचारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त कहानी लेखन में भी गोविंद कुमार 'गुंजन' सिद्धहस्त हैं।

रचनाएँ : इनकी 'रुका हुआ संवाद (कविता संग्रह) 1998', 'समकालीन हिन्दी गज़लें (सहयोगी प्रकाशन-2001)', 'कपास के फूल, सभ्यता की तितली (ललित निबंध संग्रह 2002)', 'पंखों पर आकाश (उपन्यास-2007)', 'ज्वाला भी जलधार भी (ललित निबंध संग्रह)' हैं।

इन्हें प्रथम समानांतर नवगीत अलंकार (1994), अखिल भारतीय अंबिकाप्रसाद दिव्य प्रतिष्ठा पुरस्कार (2002), निर्मल पुरस्कार (हिन्दी निबंध हेतु)—(2002), मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का बाल कृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार (2007) आदि पुरस्कारों से नवाज़ा गया है।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत कहानी में लेखक ने मनुष्य की आदत पर प्रकाश डाला है। ऐसा कहते हैं कि मनुष्य की आदत कभी नहीं बदलती लेकिन कभी-कभी किसी दूसरे के कारण बदल जाती है। लेखक देर तक सोए रहने की आदत से मजबूर था उसे एक छोटी सी चिड़िया जगाती है। सुबह की ताज़ी हवा के स्पर्श का अहसास दिलाती है और उसे सुबह उठने की आदत डाल देती है।

वह चिड़िया एक अलार्म घड़ी थी....

अब मोबाइल फ़ोन में अलार्म उपलब्ध रहने से अलार्म घड़ियों की बाज़ार में माँग घटने लगी है परंतु एक समय घरों में अलार्म घड़ी महत्वपूर्ण वस्तु हुआ करती थी। परीक्षा के दिनों में सिरहाने रखी अलार्म घड़ी भोर में जगाती थी। सुबह जल्दी यात्रा करनी होती, तो रात को घड़ी में अलार्म लगा देते थे ताकि सुबह समय पर उठा जा सके। अलार्म घड़ियाँ बहुत काम आती थीं, परंतु आज जैसे हर किसी के पास मोबाइल फ़ोन है, कुछ इसी तरह पहले सबके पास घड़ियाँ उपलब्ध नहीं रहती थीं। कलाई पर घड़ी एक उपहार हुआ करती थी। परीक्षा में पास होने पर और कॉलेज में दाखिला होने पर बच्चों को दिलवाई जाती थी, तो शादी में दूल्हे को ससुराल पक्षवाले घड़ी अवश्य देते थे। कई सरकारी विभागों में सेवा-निवृत्ति पर भी घड़ी देने की परंपरा थी। हम लोग कहते थे कि सेवा-निवृत्ति के बजाय नौकरी लगने पर विभाग द्वारा पहले ही कर्मचारी को एक घड़ी भेंट में दी जानी चाहिए ताकि वह समय पर अपने काम पर उपस्थित हुआ करे।

मुझे पहली बार कलाई घड़ी तब मिली थी, जब मैंने कॉलेज में प्रवेश पाया था और पहली अलार्म घड़ी भी मुझे कॉलेज में एक निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार स्वरूप मिली थी। उस अलार्म घड़ी में चाबी भरकर अलार्म की घंटी बार-बार बजाकर उसके सम्मोहक प्रभाव को मैं बहुत गहराई तक महसूस करता था। वह मुझे जागृत करने वाली ध्वनि थी, जो रोमांचित कर देती थी। उस ध्वनि का नशा और स्वाद अब महँगे-से-महँगे अलार्म ध्वनि वाले मोबाइल फ़ोन से भी नहीं मिलता। संवेदना के स्तर सदैव एक जैसे नहीं रहते। कभी उनकी सघनता घट जाती है, तब बड़ी-बड़ी बातें भी उतना रस नहीं देतीं। यह सब मानवीय मनों की संवेदनाओं का खेल है।

जिन दिनों हमारे पास कोई घड़ी नहीं थी, तब पिता जी कहा करते थे कि तुम्हें सुबह जितने बजे भी उठना हो, तुम अपने तकिये से कहकर

सो जाओ कि सुबह मुझे इतने बजे उठा देना। बस, फिर तुम्हारी नींद सुबह उतने ही बजे खुल जाएगी। बचपन में कितनी ही बार इस फ़ॉर्मूले को अपनाया था और सही पाया था। तकिया हमारी बात सुनता है और ठीक समय पर हमें जगा भी देता है। यह कौतूहल भरा आश्चर्यजनक अनुभव बहुत अच्छा लगता था, भले ही तब उसका रहस्य हमें पता नहीं था। मुझे सुबह-सुबह उठकर पढ़ना रास नहीं आता था। रात में देर तक पढ़ना सुहाता था। रात्रि के एकांत में मध्य रात्रि से भोर तक पढ़ते रहना और सुबह-सुबह नींद आ जाने पर देर से उठना मेरी आदत होती जा रही थी। कई बार रात को दो या तीन बजे तक पढ़ने के कारण सुबह जल्दी नींद नहीं खुलती थी और सुबह का सौंदर्य सिर्फ़ कविताओं में ही महसूस किया जाता था। पुरस्कार में मिली वह अलार्म घड़ी जब खराब हुई, तो फिर सुधर नहीं सकी। आज भी वह तीन दशकों से अधिक समय से मेरे पास बंद हालत में है, वह अब सुधरने योग्य नहीं रही परंतु मैं भी कहाँ सुधरने लायक बचा था! देर रात तक पढ़ना और सुबह देर तक सोना एक अभ्यास ही बन गया था।

वह अस्सी का दशक था, मेरी नई-नई नौकरी लगी थी। पहली बार घर से बाहर निकला था। एक कमरा किराए पर लेकर रहता था। अकेले रहने का यह पहला-पहला अनुभव। कमरे में मैंने महादेवी, पंत और निराला जी की सुंदर तसवीरें फ़्रेम करवाकर टाँग दी थीं। एक तरफ़ गुसाईं तुलसीदास जी का चित्र, अपनी पुस्तकें और अपना एकांत। रातें जाग-जागकर बिताना, कविताएँ लिखना और कविताओं में डूबे रहना जैसे स्वर्ग में जीना था परंतु अपने उस एकांत में, निशाचरी वृत्ति के कारण फिर सुबह जल्दी उठना मुश्किल होने लगा। पड़ोसी कृपा करके दरवाज़ा खटखटाते तो नींद खुलती। देर-सवेर दफ़्तर पहुँचता। अलार्म घड़ी भी नहीं थी और न ही खरीदने का ख़्याल आया। मोबाइल फ़ोन तो तब देखे भी नहीं थे।

मेरे कमरे में सिर्फ़ एक दरवाज़ा ही था। न कोई खिड़की थी, न कोई रोशनदान परंतु फिर भी वह कमरा बहुत प्यारा लगता था। किराया भी काफ़ी कम था। इन सबसे बढ़कर पड़ोसी बहुत अच्छे थे। देर तक रात में पढ़ने-लिखने का व्यसन बढ़ता जा रहा था और इसमें कोई व्यवधान नहीं था। हिंदी और अंग्रेज़ी का बहुत सारा साहित्य मैंने उस एकांत में खँगाल डाला। वह सुख अपूर्व था। कठिनाई सिर्फ़ सुबह की थी, जब नींद नहीं खुलती थी। दिन के काम और दफ़्तर की नई-नई ज़िम्मेदारी देर से उठने के कारण अव्यवस्थित हो जाती। दिन गड़बड़ा जाता था। कई बार तकिये से सुबह जल्दी उठा देने की भी मिन्नतें करता था परंतु तब तकिये ने मेरी बात सुनना बंद कर दिया था। ऐसे ही दिन गुज़र रहे थे।

अपनी किताबों की दुनिया में खोया हुआ मैं इतना बेख़बर था कि कब एक चिड़िया कमरे के खुले दरवाज़े से कमरे में आकर दीवार पर लगी पंत जी की तसवीर के पीछे अपना घोंसला बनाने लगी, मुझे पता नहीं चला। जब पता चला, तब तक उसका अपने घोंसले में गृह-प्रवेश हो चुका था और वहाँ वह अपनी गृहस्थी जमा चुकी थी।

शाम को देर तक मेरा दरवाज़ा खुला रहता था इसलिए खिड़की या रोशनदान न होने के बावजूद भी वह चिड़िया आराम से पधार जाती। अपने घोंसले में आराम करती। मैं अपनी किताबों की दुनिया में खोया कभी उसकी तरफ़ ध्यान ही नहीं देता था। एक सुबह मैं नींद में था। चिड़िया मेरे पलंग के सिरहाने बैठकर एक अलग तरह की झुँझलाहट से भरी चीं...चीं... कर रही थी। उसकी आवाज़ तीव्र थी, मानो मेरे न उठने पर वह नाराज़ हो। उसकी आवाज़ से मेरी नींद खुली परंतु मैं उठा नहीं। चिड़िया बार-बार पलंग के सिरहाने आकर फुदकती और अपनी तीव्र ध्वनि से कमरे को गुँजा रही थी। मैं कुछ समझा नहीं परंतु उठकर दरवाज़ा खोला तो वह बाहर चली गई।

मैं तब समझा कि सुबह–सुबह चिड़िया को बाहर जाना होता है। घोंसला तो उसका केवल रातभर का आश्रय है। दिन में वह घोंसले में आराम से पड़ी नहीं रहती। छुट्टी के दिन हम घर में भले ही पड़े रहें, चिड़िया को दिन में घोंसले में रहना नहीं सुहाता।

कमरे में खिड़की या रोशनदान होता, तो वह चिड़िया मुझे जगाए बिना बाहर चली जाती परंतु दरवाज़ा बंद होने पर उसके बाहर जाने का दूसरा कोई रास्ता भी नहीं था इसीलिए वह दरवाज़ा खुलवाने के लिए मुझे जगा रही थी, मेरे न जागने पर वह नाराज़ भी हो रही थी। उसकी चहचहाहट में जिस झुँझलाहट को मैंने महसूस किया था, उसका कारण भी मुझे समझ में आ चुका था। दरवाज़ा खुलते ही चिड़िया तेज़ी से चली गई थी और शाम को फिर लौट आई, चुपचाप पंत जी की तस्वीर के पीछे बनाए हुए अपने घोंसले में!

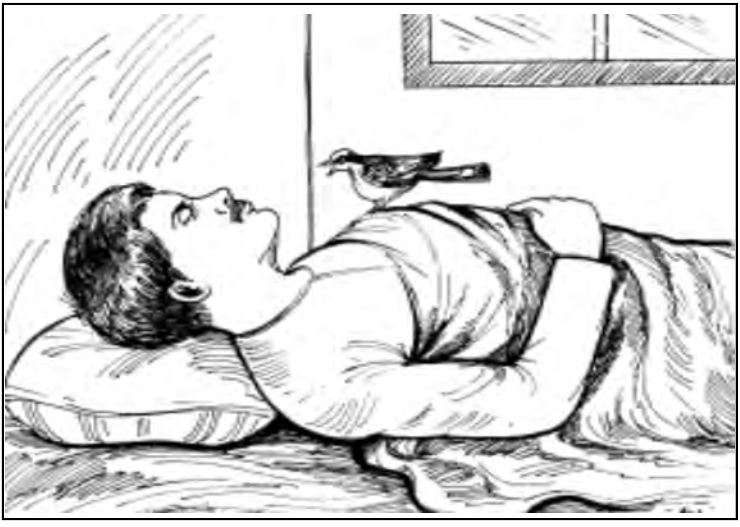

दूसरे दिन सुबह फिर मेरी नींद नहीं खुली थी। देर रात तक पढ़ा था। अचानक चिड़िया की झुँझलाहट भरी चहचहाहट ने जगा दिया। पलंग के सिरहाने बैठी वह चिड़िया मुझे गुस्से से देख रही थी, मानो मेरे देर

तक सोने के कारण वह मुझसे नाराज़ हो। मैं थोड़ी देर उसकी चहचहाहट का आनंद लेता रहा। उसने मेरी रज़ाई का कोना चोंच से पकड़कर खींचा, वह मुझसे ज़रा भी डर नहीं रही थी। वह रज़ाई के उस हिस्से पर आ बैठी जो मेरे सीने पर था। उसका इस तरह मेरे ऊपर आना बहुत अच्छा लगा था। पंत जी की वाणी में लिखी पंक्तियाँ मानस में तैरने लगीं—

तूने ही पहले बहुदर्शिनी, गाया जागृति का गाना,
श्री सुख-सौरभ का नभचारिणी, गूँथ दिया ताना-बाना,
खुले पलक, फैली सुवर्ण छवि, खिली सुरभि, डोले मधुबाल,
स्पंदन कंपन औ' नवजीवन, सीखा जग ने अपनाना।

सचमुच, उस सुबह पलकें खुलनें पर ऐसा ही लगा, जैसे किसी ने जागृति का गीत गाया हो। उस नभचारिणी ने सचमुच श्री सुख-सौरभ का ताना-बाना उस सूने कमरे में गूँथ दिया था। ऐसी एक सुवर्ण छवि कमरे में छाई थी, जिसे पहले मैंने कभी महसूस नहीं किया था।

उस सुबह चिड़िया ने मेरी रज़ाई का कोना अपनी चोंच से खींचकर अपनी चहचहाहट से जगाया था। बचपन में इतने ही प्यार और इतनी ही झुँझलाहट से देर तक सोने पर माँ जगाती थी। मैं अपने चारों ओर फैले हुए उस श्री सुख-सौरभ की स्वर्णिम छवि से अभिभूत होकर जागा था।

मैंने उठकर दरवाज़ा खोला, तो वह चिड़िया बाहर निकलकर चली गई। अब यह रोज़ ही की बात हो गई थी। सुबह चिड़िया को कमरे से बाहर जाना होता था, वह जल्दी जग जाती और दरवाज़ा खुलवाने के लिए मेरे पलंग के सिरहाने बैठकर चहचहाती और मेरी नींद खुल जाती।

जब मैं अपनी बंद कोठरी की शय्या को छोड़कर भोर में चिड़िया को बाहर जाने देने के लिए दरवाज़ा खोलता, तो दरवाज़े से उस ताज़ी सुबह की देह की कांति कमरे में कौंध जाती। ठंडी हवा का स्पर्श और

बहुत कोमलकांत उजाला आँखों को सहलाता। मुझे लगा किसी अप्रतिम अनुभव को मैं देर तक सोकर व्यर्थ करता रहा हूँ। अब भी मैं रात को देर तक पढ़ता हूँ परंतु अब वह चिड़िया मेरी अलार्म घड़ी है, जो मुझे अपने साथ सुबह जगा लेती है। अब वह पलंग के सिरहाने या मेरी रज़ाई पर बैठकर मधुर चहचहाहट से मुझे जगाती है। उसकी चहचहाहट में अब वह झुँझलाहट नहीं, एक वात्सल्य भरी जागृति है। यह किसी घड़ी की यांत्रिक ध्वनि नहीं है, अपनेपन से भरी पुकार है, जो मुझे आसमान से अवतरित होती हुई प्रातःकाल की सुमंगल घड़ी में पुकारती है। उस सुमंगल घड़ी में सरिताओं का जल, आकाश की वायु, सूर्य का प्रकाश- सब अपनी निर्मलता के चरम पर पहुँचकर सृष्टि में नए फूल खिलाने का उपक्रम करते हैं।

अब मैं चिड़िया के साथ जगना सीख गया था और सुबह की फूलों की सुगंध से भरी ताज़गी का वरदान पाने लगा था।

रवींद्रनाथ ने अपनी जीवन स्मृति में सच ही लिखा है, ''मैं देवदार के जंगलों में घूमा, झरनों के किनारे बैठा, उसके जल में स्नान किया, कंचनजंगा की मेघमुक्त महिमा की ओर ताकता बैठा रहा लेकिन जहाँ मैंने यह समझा था कि पाना सरल होगा, वहीं मुझे खोजने पर भी कुछ नहीं मिला। परिचय मिला लेकिन और कुछ देख नहीं पाया। रत्न देख रहा था, सहसा वह बंद हो गया, अब मैं डिबिया देख रहा था। लेकिन डिबिया के ऊपर कैसी ही मीनाकारी क्यों न हो, उसको गलती से डिबिया मात्र मानने की आशंका नहीं रही।''

सच है, एक बार रत्न दिख गया तो फिर भले ही डिबिया बंद हो जाए, पर उस डिबिया में रत्न है, यह अनुभूति नहीं जानी चाहिए। रवींद्रनाथ की इन पंक्तियों में डिबिया की मीनाकारी का भी जो उल्लेख है, वह महत्वपूर्ण है।

उस चिड़िया ने डिबिया खोलकर मुझे भी उषा सुंदरी के रत्न दिखा दिए थे। उसका यह उपकार मैं भला कैसे भूलता ? दरवाज़ा खोलते ही चिड़िया चहचहाती हुई बाहर जाती, मानो मुझे कहती हुई जा रही हो कि देखो यह मीनाकारी वाली सुंदर डिबिया खुल रही है, फिर यह बंद हो जाएगी। फिर तो दिनभर मीनाकारी से सजी डिबिया ही दिखाई देगी, इसके रत्न नहीं दिखेंगे।

मैं उस वात्सल्यमयी चिड़िया के उस उपकार को बहुत कृतज्ञता से महसूस करता हूँ। उसने मुझे उस घड़ी जगना सिखाया, जब धरती ओस के मोती बिखराकर हर नए खिल रहे फूल का अभिनंदन कर रही होती है।

शब्दार्थ

भोर = प्रातःकाल्

उपहार = भेंट

सेवा-निवृत्ति = रिटायरमेंट, कार्यकाल समाप्त होना

उपस्थित = हाज़िर

संवेदना = अनुभूति

कौतूहल = उत्सुकता

निशाचरी = रात को जागने वाली, राक्षसी

व्यसन = बुरी आदत

व्यवधान = बाधा

स्पंदन = कंपन, हिलना

नभचारिणी = आकाश में घूमने वाली

सौरभ = खुशबू

स्वर्णिम = सोने जैसी

अभिभूत = प्रभावित किया हुआ

शय्या = चारपाई

अप्रतिम = अनोखा

वात्सल्य = प्यार

अवतरित = उतरती हुई

कृतज्ञता = अहसान

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) बाज़ार में अलार्म घड़ियों की माँग क्यों घटने लगी है?

(*ii*) लेखक को कॉलेज में पुरस्कार में कौन-सी घड़ी मिली थी?

(*iii*) लेखक को कविताओं में डूबे रहना कैसा लगता था?

(*iv*) चिड़िया कमरे में दीवार पर लगी किसकी तसवीर के पीछे अपना घोंसला बनाने लगी थी?

(*v*) लेखक अपनी कौन-सी दुनिया में खोया रहता था कि चिड़िया की तरफ़ ध्यान ही नहीं देता था?

(*vi*) लेखक के लिए अब अलार्म घड़ी कौन थी?

(*vii*) चिड़िया ने लेखक को कौन-सा रत्न दिया था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) पहले किन-किन अवसरों पर घड़ी देने की परम्परा थी?

(*ii*) जिन दिनों लेखक के पास घड़ी नहीं थी तब उनके पिता जी क्या कहा करते थे?

(*iii*) शाम को चिड़िया लेखक के कमरे में कैसे पधार जाती थी?

(*iv*) रोज़ सुबह-सुबह चिड़िया लेखक के पलंग के सिरहाने बैठकर चहचहाती क्यों थी?

(*v*) लेखक ने चिड़िया की तुलना माँ से क्यों की है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) 'वह चिड़िया एक अलार्म घड़ी थी' कहानी के द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

(*ii*) चिड़िया द्वारा लेखक को जगाए जाने के प्रयास को अपने शब्दों में लिखिए।

(*iii*) लेखक उस वात्सल्यमयी चिड़िया का उपकार क्यों मानता है?

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
घोंसला –	________	चिड़िया –	________
कमरा –	________	डिबिया –	________
दरवाज़ा –	________	घड़ी –	________
बच्चा –	________	खिड़की –	________
दूल्हा –	________	छुट्टी –	________

2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
उपहार	________	________	अभिभूत	________	________
उपस्थित	________	________	सुमंगल	________	________
उपलब्ध	________	________	अनुभूति	________	________
उपकार	________	________	बेख़बर	________	________

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
चहचहाहट	________	________	कृतज्ञता	________	________
झुँझलाहट	________	________	सघनता	________	________
रोशनदान	________	________	मानवीय	________	________

4. पाठ में आए निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप तथा तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

तत्सम	-	तद्भव	तद्भव	-	तत्सम
रात्रि	-	___________	सच	-	___________
आश्रय	-	___________	नींद	-	___________
कृपा	-	___________	मोती	-	___________
गृह	-	___________	चिड़िया	-	___________
सूर्य	-	___________	माँ	-	___________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. यदि आपके घर में भी किसी चिड़िया ने घोंसला बनाया है तो उसके क्रियाकलाप को ध्यान से देखिए और अपना अनुभव लिखिए।
2. यदि किसी पशु-पक्षी के कारण आपके जीवन में भी परिवर्तन आया है तो वर्णन कीजिए।
3. चिड़िया को 'अलार्म घड़ी' के अतिरिक्त आप और क्या नाम देंगे और क्यों?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. प्रात:काल में प्रकृति को ध्यानपूर्वक निहारिए और कक्षा में सभी को अपना अनुभव बताइए।
2. विभिन्न प्रकार के पक्षियों की आवाज़ों, उनके स्वभाव और उनके घोंसले के बारे में सामग्री जुटाइए।
3. पक्षी-विज्ञानी सालिम अली की पुस्तक 'भारतीय पक्षी' पढ़िए।
4. कहानी पढ़कर आपके सामने चिड़िया का जो चित्र उभरता है, उस चित्र को बनाइए।
5. चिड़िया और प्रात:कालीन सौंदर्य पर कविताओं का संकलन कीजिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

महादेवी वर्मा : महादेवी वर्मा हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री है। हिंदी साहित्य के 'आधुनिक काल' की छायावादी कविता में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। छायावाद की प्राय:रहस्यवादी, प्रकृति-चित्रण, काव्य-वेदना आदि सभी विशेषताएँ इनके काव्य में मिलती हैं। कवयित्री के साथ-साथ ये उत्कृष्ट लेखिका के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी 'नीहार', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'काव्य संग्रह' तथा 'अतीत के चलचित्र', 'पथ के राही', 'मेरा परिवार' आदि संस्मरण और रेखाचित्र प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

पंत : पंत जी का पूरा नाम 'सुमित्रानंदन पंत' है। इन्हें प्रकृति के रंग-भीने वातावरण ने अत्यधिक प्रभावित व प्रेरित किया। इनकी कविताओं में प्रकृति की अनुपम छटा के दर्शन स्वत: ही हो जाते हैं। इसीलिए इन्हें प्रकृति का सुकुमार (कोमल) कवि कहा जाता है। 'उच्छ्वास', 'ग्रंथि', 'वीणा', 'चिदम्बरा' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

निराला : निराला जी का पूरा नाम सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' है। हिन्दी साहित्य में छायावादी काव्य परम्परा को आगे बढ़ाने वाले प्रसाद के बाद दूसरे कवि हैं। छायावादी कविता में वेदना का जो चित्रण व्यापक परिवेश में हुआ है, वह इनकी कविताओं में प्रचुर मात्रा में मिलता है। इसके अतिरिक्त रहस्यवाद तथा प्रकृति चित्रण भी इनके काव्य की विशेषता है।

तुलसीदास : भक्तिकालीन हिंदी साहित्य में राम भक्त कवियों में तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है। यद्यपि इनके अतिरिक्त कई अन्य कवियों ने भी राम काव्य से सम्बन्धित रचनाएँ लिखीं किंतु तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' जैसी अभूतपूर्व सफलता, किसी को नहीं

मिली। इन्होंने 'रामचरितमानस' के माध्यम से राम कथा को घर-घर तक पहुँचाने का अनुपम कार्य किया।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर : रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार व दार्शनिक के रूप में जाने जाते हैं। इनका जन्म 7 मई, 1861 को कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। इनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ टैगोर व माता का नाम शारदा देवी था। वे एशिया के प्रथम नोबल पुरस्कार विजेता हैं। उनकी काव्य रचना 'गीतांजलि' के लिए उन्हें 1913 में साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला। वे एकमात्र कवि हैं जिनकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं। भारत का राष्ट्रगान-जन गण मन और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान—आमार सोनार बाँग्ला। इन्हें 'गुरुदेव' के नाम से भी जाना जाता है। 7 अगस्त, 1941 को इनका निधन हो गया।

लोकोक्तियों में पक्षी

- अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
- खग ही जाने खग ही की भाषा।
- घर की मुर्गी दाल बराबर।
- कौआ चला हंस की चाल।
- जंगल में मोर नाचा किसने देखा?
- आधा तीतर, आधा बटेर।
- झूठ बोले कौआ काटे।
- अंधे के हाथ लगा बटेर।
- आधा बगुला आधा सूअर।

******

निबंध भाग
श्री रामवृक्ष बेनीपुरी
(सन् 1902-1968)

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का हिंदी गद्य जगत में अद्भुत योगदान रहा है। इनका जन्म सन् 1902 ई. में बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले में बेनीपुर गाँव में हुआ था। बचपन में ही इनके माँ-बाप का निधन हो गया था। ये दृढ़ निश्चयी थे अत: इन्होंने कष्ट सहकर मैट्रिक कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की। गाँधी जी के नेतृत्व में सन् 1920 में असहयोग आन्दोलन का इन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि ये अध्ययन छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। इन्हें भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण जेल जाना पड़ा। स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ ये कुशल संपादक, श्रेष्ठ साहित्यकार भी थे। माँ सरस्वती व भारत माता की सेवा करते हुए 7 सितम्बर, सन् 1968 को इनका निधन हो गया।

रचनाएँ : चिता के फूल (कहानी), आम्रपाली (नाटक), माटी की मूरतें (रेखाचित्र), पतितों के देश में (उपन्यास), ज़ंजीरें और दीवारें (संस्मरण) इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनकी रचनाओं की भाषा सरल एवं व्यावहारिक खड़ी बोली है।

पाठ-परिचय : 'नींव की ईंट' एक बहुत ही रोचक एवं प्रेरक निबंध है। इस पाठ में लेखक कहना चाहता है कि व्यक्ति को देश और समाज के कल्याण व उत्थान के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। लेखक को बहुत अफ़सोस है कि लोग किसी भवन के कँगूरे (भवन का सबसे ऊपरी भाग) की तरह बनना चाहते हैं क्योंकि कँगूरा उन्हें लुभाता है, उसकी सुंदरता व चमक उन्हें आकर्षित करती है। इस कँगूरे को पाने की सभी में होड़ मची है किन्तु नींव की ईंट कोई नहीं बनना चाहता। जबकि सत्य यह है कि नींव की ईंट को हिला देने से कँगूरा ज़मीन पर औंधे मुँह गिर जाएगा। अत: लेखक का मानना है कि आज देश को ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो तारीफ़ के लिए नहीं अपितु कर्त्तव्य के लिए कर्म करें। लेखक ने नींव की ईंट के माध्यम से बच्चों को नि:स्वार्थ त्याग और बलिदान की प्रेरणा दी है।

नींव की ईंट

वह जो चमकीली, सुंदर, सुघड़-सी इमारत है, वह किस पर टिकी है? इसके कँगूरों को आप देखा करते हैं, क्या कभी आपने इसकी नींव की ओर ध्यान दिया है?

दुनिया चमक-दमक देखती है, ऊपर का आवरण देखती है, आवरण के नीचे जो ठोस सत्य है, उस पर कितने लोगों का ध्यान जाता है?

ठोस 'सत्य' सदा 'शिवम्' होता ही है किंतु वह हमेशा 'सुंदरम्' भी हो, यह आवश्यक नहीं। सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्‌दापन साथ-साथ जन्मा करते हैं, जिया करते हैं। हम कठोरता से भागते हैं, भद्‌देपन से मुख मोड़ते हैं इसलिए सत्य से भी भागते हैं। नहीं तो हम इमारत के गीत नींव के गीत से प्रारंभ करते।

वह ईंट धन्य है जो कट-छँटकर कँगूरे पर चढ़ती है और बरबस लोक-लोचनों को अपनी ओर आकृष्ट करती है। किंतु धन्य है वह ईंट, जो ज़मीन के सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई और इमारत की पहली ईंट बनी।

क्यों इसी पहली ईंट पर, उसकी मज़बूती और पुख़्तेपन पर सारी इमारत की अस्ति-नास्ति निर्भर करती है?

उस ईंट को हिला दीजिए, कँगूरा बेतहाशा ज़मीन पर आ गिरेगा।

कँगूरे के गीत गाने वाले हम, आइए, अब नींव के गीत गाएँ।

वह ईंट, जो ज़मीन में इसलिए गड़ गई कि दुनिया को इमारत मिले, कँगूरा मिले।

वह ईंट, जो सब ईंटों से ज़्यादा पक्की थी जो ऊपर लगी होती तो कँगूरे की शोभा सौगुनी कर देती।

किंतु जिस ईंट ने देखा, इमारत की पायदारी उसकी नींव पर मुनहसिर होती है इसलिए उसने अपने को नींव में अर्पित किया।

वह ईंट, जिसने अपने को सात हाथ ज़मीन के अंदर इसलिए गाड़ दिया कि इमारत ज़मीन से सौ हाथ ऊपर तक जा सके।

वह ईंट, जिसने अपने लिए अंधकूप इसलिए क़बूल किया कि ऊपर के उसके साथियों को स्वच्छ हवा मिलती रहे, सुनहली रोशनी मिलती रहे।

वह ईंट, जिसने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया कि संसार एक सुंदर सृष्टि देखे। सुंदर सृष्टि! सुंदर सृष्टि हमेशा ही बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का। सुंदर इमारत बने इसलिए कुछ पक्की-पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है। सुंदर समाज बने इसलिए कुछ तपे-तपाए लोगों को मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।

शहादत और मौन-मूक! जिस शहादत को शुहरत मिली, जिस बलिदान को प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह इमारत का कँगूरा है-मंदिर का कलश है।

हाँ, शहादत और मौन-मूक! समाज की आधारशिला यही होती है।

ईसा की शहादत ने ईसाई धर्म को अमर बना दिया, आप कह लीजिए। किंतु मेरी समझ में ईसाई धर्म को अमर बनाया उन लोगों ने, जिन्होंने उस धर्म के प्रचार में अपने को अनाम उत्सर्ग कर दिया।

उसमें से कितने ज़िंदा जलाए गए, कितने शूली पर चढ़ाए गए, कितने वन-वन की खाक छानते जंगली जानवरों के शिकार हुए, कितने उससे भी भयानक भूख-प्यास के शिकार हुए। उनके नाम शायद ही कहीं लिखे गए हों। उनकी चर्चा शायद ही कहीं होती हो किंतु ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहा है। वे नींव की ईंट थे, गिरजाघर के कलश उन्हीं की शहादत से चमकते हैं।

आज हमारा देश आज़ाद हुआ। सिर्फ़ उनके बलिदानों के कारण नहीं, जिन्होंने इतिहास में स्थान पा लिया है।

देश का शायद कोई ऐसा कोना हो, जहाँ कुछ ऐसे दधीचि नहीं हुए हों, जिनकी हड्डियों के दान ने ही विदेशी वृत्रासुर का नाश किया।

हम जिसे देख नहीं सके, वह सत्य नहीं है, यह है मूढ़ धारणा। ढूँढ़ने से ही सत्य मिलता है। हमारा काम है, धर्म है, ऐसी नींव की ईंटों की ओर ध्यान देना।

सदियों के बाद नए समाज की सृष्टि की ओर हमने पहला कदम बढ़ाया है। इस नए समाज के निर्माण के लिए हमें नींव की ईंट चाहिए।

अफ़सोस, कँगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है।

सात लाख गाँवों का नव-निर्माण! हज़ारों शहरों और कारखानों का नव-निर्माण। कोई शासक इसे संभव नहीं कर सकता। ज़रूरत है ऐसे नौजवानों की जो इस काम में अपने को चुपचाप खपा दें।

जो एक नई प्रेरणा से अनुप्राणित हों, एक नई चेतना से अभिभूत, जो शाबाशियों से दूर हों, दलबंदियों से अलग हों, जिनमें कँगूरा बनने की कामना न हो; कलश कहलाने की जिनमें वासना न हो, सभी कामनाओं एवं सभी वासनाओं से दूर हों।

उदय के लिए आतुर हमारा समाज चिल्ला रहा है- हमारी नींव की ईंट किधर है?

देश के नौजवानों को यह चुनौती है।

शब्दार्थ

सुघड़ = सुडौल, जिसकी बनावट सुंदर हो
आवरण = पर्दा
भद्दापन = बदसूरती
आकृष्ट = आकर्षित
बेतहाशा = अचानक और वेगपूर्वक
मुनहसिर = निर्भर
अस्तित्व = हस्ती
शहादत = बलिदान
आधारशिला = बुनियाद का पत्थर
शूली = लोहे की नुकीली छड़, प्राण दंड देने का एक साधन
लुप्त = गायब
वासना = इच्छा
कँगूरा = चोटी, शिखर, गुंबद, बुर्ज
शिवम् = कल्याणकारी
लोकलोचनों = लोगों की नज़रों
अस्ति-नास्ति = होना-न होना
पायदारी = मज़बूती
अंधकूप = अँधेरा कुआँ
विलीन = ओझल, अदृश्य, मिल जाना
शुहरत = शोहरत, ख्याति, प्रसिद्धि
उत्सर्ग = बलिदान
मूढ़ = मूर्ख
अनुप्राणित = प्रेरित
होड़ा-होड़ी = प्रतिस्पर्धा, एक दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश
आतुर = उतावला

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) 'नींव की ईंट' पाठ के आधार पर बतायें कि दुनिया क्या देखती है ?

(*ii*) इमारत का होना-न होना किस बात पर निर्भर करता है ?

(*iii*) लेखक ने नींव की ईंट किसे बताया है ?

(*iv*) नींव की ईंट ने अपना अस्तित्व क्यों विलीन कर दिया ?

(*v*) ईसा की शहादत ने किस धर्म को अमर बना दिया ?

(*vi*) किसकी हड्डियों के दान से वृत्रासुर का नाश हुआ?

(*vii*) लेखक के अनुसार सत्य की प्राप्ति कब होती है ?

(*viii*) पाठ में लेखक ने 'दधीचि' तथा 'वृत्रासुर' शब्द किसके लिए प्रयुक्त किए हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) नींव की ईंट और कँगूरे की ईंट दोनों क्यों वन्दनीय हैं?

(*ii*) नींव की ईंट पाठ के आधार पर सत्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(*iii*) देश को आज़ाद करवाने में किन लोगों का योगदान रहा? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*iv*) आजकल के नौजवानों में कँगूरा बनने की होड़ क्यों मची हुई है?

(*v*) नये समाज के निर्माण के लिए हमें किस चीज़ की आवश्यकता है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) 'नींव की ईंट' पाठ के आधार पर बताएँ कि समाज की आधारशिला क्या होती है?

(*ii*) आज देश को कैसे नौजवानों की ज़रूरत है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*iii*) **निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—**

- सुंदर समाज बने, इसलिए कुछ तपे-तपाए लोगों को मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।
- हम जिसे देख नहीं सके, वह सत्य नहीं है, यह है मूढ़ धारणा। ढूँढ़ने से ही सत्य मिलता है। ऐसी नींव की ईंटों की ओर ध्यान देना ही हमारा काम है, हमारा धर्म है।
- उदय के लिए आतुर समाज चिल्ला रहा है—
  हमारी नींव की ईंट किधर है?
  देश के नौजवानों को यह चुनौती है।

(ख) भाषा-बोध

1. **निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—**

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
आवरण	आ	वरण	प्रसिद्धि	________	________
प्रताप	________	________	अभिभूत	________	________
प्रचार	________	________	अनुप्राणित	________	________
बेतहाशा	________	________	आकृष्ट	________	________

2. **निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—**

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
मज़बूती	मज़बूत	ई	चमकीली	________	________
भद्दापन	________	________	पुख़्तापन	________	________
पायदारी	________	________	कारखाना	________	________
विदेशी	________	________	सुनहली	________	________

3. **निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—**

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
• **नींव की ईंट बनना**	– काम का आधार बनना	________________ ________________
• **शहादत का लाल**	– बलिदान देने वाला व्यक्ति	________________ ________________
• **सेहरा पहनना**	– सर्वस्व बलिदान देना	________________ ________________

• **खाक छानना** - बहुत ढूँढ़ना, मारा-मारा फिरना ______________

____

• **फलना-फूलना** - सुखी व सम्पन्न होना ______________

____

• **खपा देना** - किसी काम में लग जाना, उपयोग में आना ______

____

4. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए—

(*i*) कँगूरे के गीत गाने वाले हम आइए अब नींव के गीत गाएँ

(*ii*) हाँ शहादत और मौन मूक समाज की आधारशिला यही होती है

(*iii*) अफसोस कँगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा होड़ी मची है नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है

(*iv*) हमारी नींव की ईंट किधर है

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. आप नींव की ईंट या कँगूरे की ईंट में से कौन-सी ईंट बनना चाहेंगे और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

2. लेखक इस पाठ में नींव की ईंट के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है?

3. आपकी नज़र में ऐसा कौन-सा व्यक्तित्व है जिसने देश और समाज के उत्थान में नींव की ईंट के समान कार्य किया है। उसके योगदान को बताते हुए अपनी बात स्पष्ट करें।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. अपने स्कूल/आस-पड़ोस कहीं भी यदि किसी नयी इमारत का निर्माण हो रहा हो तो वहाँ जाकर कारीगर से जानकारी प्राप्त करें

कि इमारत की नींव रखने के लिए किस प्रकार ज़मीन की खुदाई की जाती है और कैसे उस खुदी हुई ज़मीन पर सुंदर और विशाल इमारत खड़ी करने से पूर्व नींव की ईंटें रखी जाती हैं।

2. 'हमारे देश की नींव' शीर्षक के अन्तर्गत कुछ ऐसे देशभक्तों और महापुरुषों के नाम एक चार्ट पर लिखकर स्कूल/कक्षा की दीवार पर लगाइए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

दधीचि : एक प्रसिद्ध ऋषि जिसने अपने शरीर की हड्डियाँ देवताओं को अर्पित कर दी थीं और स्वयं मरने को तैयार हो गया था। इन हड्डियों से देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा ने एक वज्र का निर्माण किया था।

वृत्रासुर : एक राक्षस। ऋषि दधीचि की हड्डियों से निर्मित वज्र से इन्द्र ने वृत्रासुर व अन्य राक्षसों को मार गिराया था।

सफलता की नींव : हम लोग किसी सफल व्यक्ति की सफलता से प्रभावित होते हैं, उससे प्रेरणा लेते हैं किंतु सफल व्यक्ति की सफलता की नींव को जानने का प्रयास कितने लोग करते हैं? दरअसल सफल व्यक्ति की कामयाबी की कहानी में त्याग, निष्ठा, मेहनत, अनुशासन, समर्पण और यहाँ तक कि अनेक असफलताएँ भी छिपी होती हैं। यही सब कुछ उनकी आज की सफलता की नींव बनती हैं।

******

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म सन् 1908 ई. में बिहार के मुंगेर ज़िले के सिमरिया नामक स्थान पर हुआ था। इन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा पटना विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इन्होंने सीतागढ़ी में सब-रजिस्ट्रार के पद पर कार्य किया। सन् 1952 से 1964 तक दिनकर जी राज्यसभा के सदस्य भी रहे। 1964 में ये भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर नियुक्त हो गये। कई वर्ष दिनकर जी भारत सरकार के हिंदी सलाहकार भी रहे।

रचनाएँ : इनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना विशेष रूप से मिलती है। आरम्भ में इन्होंने कुछ रचनाएँ छायावादी रंग में लिखीं। परन्तु बाद में इनका स्वर सामाजिक चेतना से जा जुड़ा। इनकी चर्चित कृतियों में 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' तथा 'उर्वशी' का नाम उल्लेखनीय है। गद्य रचनाओं में 'संस्कृति के चार अध्याय' खूब चर्चा का विषय रही है। इनकी शैली ओज, प्रवाह, अनुभूति और संवेदना के तत्त्वों से सदा युक्त रही है। इनकी मृत्यु 1974 ई. में हुई।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत निबन्ध 'हिम्मत और ज़िंदगी' जीवन के उस सत्य को साथ लेकर चलता है, जिसके अनुसार हिम्मत, परिश्रम, साहस, कर्मठता आदि तत्त्व ही हमारी सफलता के आधार-बिंदु हैं। परिश्रम सफलता की कुंजी है। हमें जीवन में चुनौती स्वीकार करनी चाहिए। हिम्मत हार कर हम जीवन नहीं जी सकते। जोखिम उठा कर आगे बढ़ना-यही मनुष्य की पहचान है। दु:ख-सुख, असफलता-सफलता, ग़मी-खुशी को समान दृष्टि से देखना चाहिए-तभी हम जीने की कला सीख सकते हैं।

हिम्मत और ज़िंदगी

ज़िंदगी के असली मज़े उनके लिए नहीं है, जो फूलों के नीचे खेलते और सोते हैं बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं, जिनका कण्ठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत वाला तत्त्व है, उसे वह जानता है, जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान के वश में कभी पड़ा ही नहीं है।

सुख देने वाली चीज़ें पहले भी थीं और अब भी हैं। फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं उनके मज़े बाद में लेते हैं, उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है उनके लिए आराम ही मौत है।

जो लोग पाँव भीगने के ख़ौफ़ से पानी से बचते रहते हैं समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आएंगे।

चांदनी की ताज़गी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिन भर धूप में थक कर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की ज़रूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर सन्तुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है।

इसके विपरीत वह आदमी भी है जो दिन भर खिड़कियां बंद करके पंखों के नीचे छुपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मज़े ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है।

उपवास और संयम, ये आत्महत्या के साधन नहीं हैं। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाये भी रह सकता

है। ''त्यक्तेन भुंजीथा: जीवन का भोग त्याग के साथ करो'', यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बन कर भोगने से नहीं मिल पाता।

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं। बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पल कर दुनिया पर क़ब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय जब उसके बाप के पास कस्तूरी के एक नाफे को छोड़ कर और दौलत नहीं थी।

महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पाँडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षा-गृह की मुसीबत झेली थी, वनवास के जोखिम को पार किया था।

श्री विन्स्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िंदगी का सबसे बड़ा गुण हिम्मत है। आदमी के अन्य सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

ज़िंदगी की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाये और अगर असफलतायें कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अंधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाये।

दूसरी सूरत यह कि वह उन ग़रीब आत्माओं का हमजोली बन जाए, जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का संयोग है, क्योंकि ये आत्माएं ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बंधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते और कौन कहता है कि पूरी ज़िंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है?

अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल निडर, बिल्कुल बेख़ौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान है कि वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देख कर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांँति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोस की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है, जिन सपनों के कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं हैं।

साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है।

झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मग्न रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है, कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान् निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, ज़िंदगी की चुनौती को क़बूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता। बड़े मौके पर साहस नहीं दिखाने वाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज़ सुनता रहता है, एक ऐसी आवाज़ जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता। यह आवाज़ उसे बराबर कहती रहती है, ''तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।'' सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुम में हिम्मत की कमी थी, कि तुम में साहस का अभाव था, कि तुम ठीक वक़्त पर ज़िंदगी से भाग खड़े हुए।

ज़िंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम को हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अन्ततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और उसे ज़िंदगी का कोई मज़ा नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने ज़िंदगी को ही आने से रोक रखा है।

ज़िंदगी से, अन्त में हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूंजी लगाते हैं। यह पूंजी लगाना ज़िंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। ज़िंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम

है जो यह जानकर चलता है कि ज़िंदगी कहीं भी खत्म न होने वाली चीज़ है।

अरे ओ जीवन के साधको! तुम निचली डाल का फल तोड़कर लौटे जा रहे हो, तो फिर फुनगी पर का वह लाल-लाल आम किसके वास्ते है?

अरे ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुई सपियों में ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अन्तराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा?

दुनिया में जितने भी मज़े बिखेरे गए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज़ भी तुम्हारी हो सकती है, जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मान कर लौटे जा रहे हो।

कामना का अंचल छोटा मत करो। ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबा कर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

शब्दार्थ

कंठ = गला

ख़ौफ़ = डर

उपवास = व्रत, भोजन का त्याग

लाक्षा-गृह = लाख का बना घर

बेख़ौफ़ = निडर

अंतराल में = बीच में

परास्त = पराजित

मद्धिम = हलका, मंद

जनमत = लोगों की राय

जोखिम = 1. हानि, अनिष्ट, घाटे की संभावना, 2. खतरा, संकट

अंततः = अंत में, आखिरकार

मौक्तिक-कोष = मोतियों का खजाना

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) सुख का स्वाद किन लोगों को अधिक प्राप्त है?

(*ii*) लेखक के अनुसार किन लोगों के लिए आराम ही मौत है?

(*iii*) 'त्यक्तेन भुंजीथा:' का क्या अर्थ है?

(*iv*) अकबर ने कितने वर्ष की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को हराया था?

(*v*) महाभारत का युद्ध किन-किन के मध्य हुआ था?

(*vi*) महाभारत के युद्ध में पांडवों की जीत का क्या कारण था?

(*vii*) साहसी व्यक्ति की पहली पहचान क्या है?

(*viii*) लेखक के अनुसार साधारण जीव कौन-से लोग हैं?

(*ix*) लेखक ने किन्हें क्राँति करने वाले लोग कहा है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) लेखक के अनुसार नींद तथा भोजन का वास्तविक आनन्द किन्हें मिलता है?

(*ii*) जीवन में असफलताएँ मिलने पर भी साहसी मनुष्य क्या करता है?

(*iii*) महान निश्चय व बड़े मौके पर कायरता दिखाने वाले व्यक्ति का जीवन कैसा होता है?

(*iv*) ज़िंदगी में जोखिम से बचने के कारण क्या हानि होती है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) साहसी व्यक्ति के कोई पाँच गुण लिखिए।

(*ii*) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए :

- जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है।

लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आयेंगे।

- अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।
- अरे ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुई सीपियों में ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा?
- कामना का अंचल छोटा मत करो। ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए—

तत्सम	-	तद्भव	तत्सम	-	तद्भव
पुष्प	-	____________	रात्रि	-	____________
ओष्ठ	-	____________	गृह	-	____________
मृत्यु	-	____________	लाक्षा	-	____________
हस्त	-	____________	कर्म	-	____________

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
• **दाँव पर लगाना**	- कोई वस्तु बाज़ी पर लगाना	____________
• **पाँव बढ़ाना**	- चाल तेज़ करना, जल्दी-जल्दी चलना, आगे बढ़ना	____________

3 निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

अशुद्ध	-	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	-	**शुद्ध**
रेगीस्तान	-	____________	सवाद	-	____________
सन्तुश्ट	-	____________	खुशबुदार	-	____________
आतमा	-	____________	संजम	-	____________
ज़रुरत	-	____________	चुनोती	-	____________
अवाज़	-	____________	निरझरी	-	____________

4. निम्नलिखित वाक्यों में सही विराम चिह्न लगाइए—

(*i*) झुंड में चरना यह भैंस और भेड़ का काम है

(*ii*) यह आवाज़ उसे बराबर कहती रहती है तुम साहस नहीं दिखा सके तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए

(*iii*) अरे ओ जीवन के साधको तुम निचली डाल का फल तोड़कर लौटे जा रहे हो तो फिर फुनगी का वह लाल लाल आम किसके वास्ते है

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. ''बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं। बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पल कर दुनिया पर क़ब्ज़ा करती हैं।'' पाठ में आईं इन पंक्तियों के आधार पर किसी महापुरुष, विद्वान, आविष्कारक, योद्धा आदि में से किसी एक व्यक्तित्व पर अपने विचार लिखें जिसने बड़ी मुसीबतों का सामना करते हुए शीर्ष पर पहुँचकर नाम कमाया हो।

2. ''आदमी के अन्य सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।'' आप लेखक के इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट करें।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. हिम्मत बढ़ाने वाली कुछ प्रेरणादायक कविताओं/कहानियों का चयन कीजिए और उन्हें अपनी कक्षा में सुनाइए।
2. उन महापुरुषों/देशभक्तों/समाज सुधारकों/योद्धाओं के चित्रों का संकलन कीजिए जिन्होंने हिम्मत की ज़िंदगी को जिया है।
3. आपने अथवा आपके किसी मित्र/परिचित ने किसी संकट के समय अदम्य साहस का परिचय दिया हो तो उस प्रसंग को अपनी कक्षा में सुनाएँ।
4. स्टेशनरी की दुकान से एक स्टिक लाख लें और अध्यापक से जानें कि किस तरह ज़रूरी दस्तावेज़ों को सीलबंद करने में इसका उपयोग होता है।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **महाभारत :** 'महाभारत' भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक अनुपम महाकाव्य है, जिसकी रचना (माना जाता है कि) वेदव्यास जी ने की। इस ग्रंथ को हिन्दू धर्म में पंचम वेद भी माना जाता है। कहा जाता है कि 'महाभारत' का वास्तविक नाम 'जय' था। तत्पश्चात् इसे 'भारत' नाम से भी पुकारा गया तथा भरतवंश की गाथा होने के कारण बाद में यह 'महाभारत' नाम से प्रसिद्ध हुआ।
2. **कौरव :** कौरव महाभारत में हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्र और गांधारी के पुत्र थे। ये गिनती में सौ थे तथा राजा कुरु के वंशज थे। सभी कौरवों में दुर्योधन सबसे बड़ा था जो कि बहुत ही ज़िद्दी था।
3. **पाँडव :** पाँडव महाभारत के मुख्य पात्र हैं। पाँडव पाँच भाई थे- युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव। पाँडवों के पिता का नाम पाण्डु था। पाण्डु की दो पत्नियाँ थीं- कुन्ती तथा माद्री।

युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन की माता कुन्ती थी और नकुल एवं सहदेव माद्री के पुत्र थे।

4. **लाक्षागृह :** दुर्योधन के मामा शकुनि ने लाक्ष (लाख) के बने हुए घर (लाक्षागृह) में पाँडवों को भेजकर उन्हें जलाकर मारने का प्रयत्न किया किन्तु अपने काका विदुर की मदद व समझबूझ से वे उस जलते हुए गृह से बच निकले।

5. **अकबर :** तैमूरी वंशावली के मुग़ल वंश का तीसरा शासक अकबर था। इसके पिता का नाम हुमायूँ तथा दादा का नाम बाबर था।

6. **विन्स्टन चर्चिल :** ये एक अंग्रेज़ राजनीतिज्ञ थे और 1940–1945 के समय इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री थे। इसके अतिरिक्त वे इतिहासकार, लेखक और कलाकार भी थे। वे एकमात्र प्रधानमंत्री थे जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

******

प्रो० हरमहेन्द्र सिंह बेदी

प्रो० हरमहेन्द्र सिंह बेदी का जन्म 12 मार्च, 1950 को पंजाब के मुकेरियाँ (होशियारपुर) में हुआ। ये समकालीन हिंदी कविता के नामवर कवि हैं। वे पिछले चार दशकों से पंजाब की हिंदी कविता के चश्मदीद गवाह रहे हैं। आपने पंजाब के हिंदी साहित्य को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में सक्रिय भूमिका निभायी है। आपने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए नार्वे, कनाडा और पाकिस्तान की यात्राएँ भी की हैं। इन्हें गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध पंजाब के मध्यकालीन हिंदी साहित्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जाता है। आपने एम.ए. (हिंदी, पंजाबी), पीएच. डी., डी. लिट्. तक की उच्चकोटि की शिक्षा ग्रहण की है।

रचनाएँ : 'गर्म लोहा' (1982), 'पहचान की यात्रा' (1987), 'किसी और दिन' (1999), 'फिर से फिर' (2011) आदि प्रमुख काव्य संकलन हैं। आपकी कविताओं में पंजाब, पंजाबी और पंजाबियत स्वतः ही झलकती है। आपने हिंदी एवं पंजाबी में 36 ग्रंथों की रचना की। इनके अतिरिक्त आपने 'ओम जय जगदीश हरे' के कर्त्ता पंडित श्रद्धा राम फिल्लौरी की ग्रंथावली (तीन भाग) का संपादन भी किया है।

प्रो० बेदी 35 वर्षों तक गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर के हिंदी विभाग में अध्यापन के दौरान अध्यक्ष, डीन, कबीर विद्यापीठ के प्रभारी, नामधारी सतगुरु राम सिंह चेयर के मुखी एवं स्वामी विवेकानंद अध्ययन केन्द्र के चेयरमैन रहे हैं। ये भारत सरकार की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे। आपको भारत के राष्ट्रपति द्वारा हिंदी सेवा के लिए पुरस्कृत भी किया जा चुका है।

अब प्रो० बेदी राजस्थान के एक विश्वविद्यालय में विज़िटिंग–फैलो तथा पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में भाई काहन सिंह नाभा के 'महान कोश' के हिंदी अनुवाद–योजना के प्रभारी एवं संपादक के तौर पर कार्य कर रहे हैं।

पाठ–परिचय : भारतवर्ष को अंग्रेज़ों के शासन से मुक्त कराने के लिए अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दे डाली। इन वीरों में पंजाब के वीर सपूतों का तो अद्‌वितीय स्थान रहा है जिनमें करतार सिंह सराभा, लाला लाजपतराय, भगतसिंह आदि का नाम तो बच्चा–बच्चा जानता है। इन पर प्रचुर मात्रा में साहित्य भी लिखा गया है किंतु ऐसे भी रणबाँकुरे हुए हैं जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर देश को स्वतंत्रता दिलायी। इनमें पंजाब के एक वीर देशभक्त मदन लाल ढींगरा का नाम भी आता है। प्रस्तुत निबंध 'महान देशभक्त : मदन लाल ढींगरा' में लेखक ने बताया है कि भारतीय स्वतंत्रता की चिंगारी को आग में बदलने का श्रेय मदन लाल ढींगरा को जाता है। इस पाठ में लेखक ने उनकी सच्ची देशभक्ति तथा निडरता का सुंदर ढंग से परिचय दिया है। निस्संदेह यह निबंध विद्‌यार्थियों में आत्मविश्वास तथा निर्भीकता के गुणों को उत्पन्न करेगा।

महान राष्ट्रभक्त : मदन लाल ढींगरा

भारतीय स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय महान शहीद मदन लाल ढींगरा को जाता है।

मदन लाल ढींगरा का जन्म 18 सितम्बर 1883 में पंजाब में एक सम्पन्न परिवार में हुआ। उनके पिता साहिब गुरदित्ता मल गुरदासपुर में सिविल सर्जन थे। सेवामुक्त होकर वे अमृतसर में रहने लगे।

मदन लाल शुरू से ही स्वतंत्रता प्रेमी थे। हर बात को वह तर्क के तराज़ू में तोल कर देखते थे। बचपन की कई ऐसी घटनाएँ मदन लाल ढींगरा के आत्मविश्वास को अभिव्यक्त करती हैं। भले ही मदन के परिवार में राष्ट्रभक्ति की कोई ऐसी परम्परा नहीं थी परन्तु वह खुद शुरू से ही देशभक्ति के रंग में रँगे गए थे। लाहौर कॉलेज में पढ़ते हुए उन्हें देशभक्ति के कारण कॉलेज छोड़ना पड़ा। कॉलेज छोड़कर उन्होंने कई धन्धे किए, जिनमें कारखाने की मज़दूरी तथा अपना गुज़ारा करने के लिए रिक्शा और टांगा तक चलाना भी शामिल है। घर में केवल उनके बड़े भैया ही उनकी बात को सुनते व समझते थे। बड़े भैया के कारण ही वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सन् 1906 में इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन में यांत्रिकी अभियांत्रिकी (मकैनिकल इंजीनियरिंग) में दाखिला ले लिया। यह मदन लाल ढींगरा के जीवन का नया मोड़ था। भाई की सहायता के बिना यह सब संभव न था। विदेश में रहकर अध्ययन करने में उनके बड़े भाई ने तो उनकी मदद की ही परंतु इसके साथ-साथ इंग्लैण्ड में रह रहे कुछ राष्ट्रवादी कार्यकर्त्ताओं ने भी उनकी आर्थिक सहायता की।

लंदन में मदन लाल ढींगरा भारत के प्रखर राष्ट्रवादी नेता विनायक दामोदर सावरकर तथा श्याम जी कृष्ण वर्मा के सम्पर्क में आए। इन्होंने उनके सम्पर्क में आने पर जहाँ अपने को गौरवान्वित महसूस किया वहीं सावरकर तथा श्याम जी कृष्ण वर्मा भी मदन लाल ढींगरा की देशभक्ति से प्रभावित हुए। कहा जाता है कि सावरकर ने ही मदन लाल को 'अभिनव भारत' नामक क्राँतिकारी संस्था का सदस्य बनाया और उन्हें हथियार चलाने का प्रशिक्षण भी दिया। लंदन में श्याम जी कृष्ण वर्मा के संरक्षण में भारतीय छात्रों में राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार के लिए 'इंडिया हाउस' की स्थापना की गयी। मदन लाल 'इंडिया हाउस' में ही रहते थे। उन दिनों खुदीराम बोस, कन्हैया लाल दत्त, सतिन्दर पाल और काशी राम जैसे क्राँतिकारियों को अंग्रेज़ों ने मृत्युदंड दे दिया। इन घटनाओं ने मदन लाल ढींगरा और सावरकर जैसे देशभक्तों के मन में अंग्रेज़ों के प्रति नफ़रत और बदले की भावना को जन्म दिया।

1 जुलाई, 1909 को 'भारतीय राष्ट्रीय संस्था' के सदस्य (इनमें अंग्रेज़ भी सदस्य थे) वार्षिक दिवस मनाने के लिए एकत्र हुए। इसी समारोह में कर्जन वायली भी परिवार समेत आया। वह उस समय 'स्टेट ऑफ इंडिया' का सचिव सलाहकार था। मदन लाल ढींगरा ऐसे अधिकारियों से नफ़रत करते थे। मदन लाल ढींगरा का मानना था कि ऐसे नीच अधिकारियों ने हज़ारों भारतीयों को केवल गुलाम ही नहीं बनाया बल्कि बिना किसी कारण के मौत के घाट उतारा है। 22 वर्ष के नौजवान ने अपनी जेब से पिस्टल निकाला और कर्ज़न वायली को सात गोलियों से वहीं ढेर कर दिया। मदन लाल ढींगरा सच्चे देशभक्त थे। वे भागे नहीं बल्कि बड़े आराम से अपना चश्मा ठीक करते हुए उन्होंने भरी सभा में अपने देशभक्त होने का साक्ष्य दिया।

1909 में अंग्रेज़ों के लिए यह पहली साहसपूर्ण चेतावनी थी कि भारतीय अपना देश आज़ाद करवाना चाहते हैं तथा आज़ादी के लिए हर

कीमत चुकाने के लिए तैयार हैं। मदन लाल ढींगरा ने बंग-भंग आंदोलन के समय भी लंदन की गलियों को 'वन्दे मातरम्' से गुंजाया था। वे अपनी कमीज़ के ऊपर 'वन्दे मातरम्' लिखकर लंदन के बाज़ारों में घूमा करते थे। अपनी हर पुस्तक के ऊपर मदन लाल ढींगरा न लिखकर 'वन्दे मातरम्' लिखा करते थे। मदन लाल ढींगरा उच्च आदर्शों के स्वामी थे। वे भारतीय संस्कृति के मूल्यों का अनुपालन करना भी खूब जानते थे।

कर्जन वायली की हत्या के आरोप में उन पर 22 जुलाई, 1909 को अभियोग चलाया गया। मदन लाल ढींगरा ने अदालत में बड़े खुले शब्दों में कहा कि 'मुझे गर्व है कि मैं अपना जीवन भारत माँ को समर्पित कर रहा हूँ। आप याद रखना कि भारत के सुनहरे दिन आने वाले हैं। बहुत जल्दी ही भारत माँ स्वतंत्र होगी।' उन्होंने कहा कि 'दुनिया के हर नागरिक को अपनी मातृभूमि स्वतंत्र कराने का अधिकार है। अंग्रेज़ों को कोई हक नहीं कि वे बिना किसी कारण भारतीयों को गुलाम बनाकर रखें।'

17 अगस्त, 1909 को मदन लाल ढींगरा को पेंटोविले की जेल, लंदन में फाँसी की सज़ा दी गई थी। यह वही जेल थी जहाँ शहीद ऊधमसिंह को भी फाँसी दी गयी थी। आयरिश लोगों ने मदन लाल ढींगरा की हिम्मत को सराहा क्योंकि वे खुद इंग्लैंड में रहकर अपनी आज़ादी के लिए जूझ रहे थे। मिस्टर वी.एस. बलंट, जो उस समय इंग्लैंड के मैंबर पार्लीमैंट थे, ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि 'मैंने किसी ईसाई को भी इतने आत्मसम्मान और आत्मबल के साथ न्यायपालिका का सामना करते हुए नहीं देखा।'

ढींगरा की महान् शहादत को याद करते हुए लाला हरदयाल ने कहा कि 'ढींगरा की शहीदी उन राजपूतों और सिक्खों की कुर्बानियों का स्मृति पुंज है जिसके कारण शहादत अमर बन जाती है। अंग्रेज़ सोचते होंगे कि उन्होंने मदन लाल ढींगरा को फाँसी देकर सदा के लिए स्वतंत्रता की आवाज़ को दबा दिया है परंतु वास्तविकता यह है कि यही आवाज़ भारत

को स्वतंत्र बनाएगी।' श्रीमती ऐनी बेसेंट ने मदन लाल की शहीदी पर कहा था कि "हमें देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक मदन लालों की ज़रूरत है।" मदन लाल की शहीदी से प्रभावित हो कर वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने उनकी स्मृति में 'मदन तलवार' नामक पत्रिका निकाली। बाद में यह पत्रिका क्रान्तिकारियों की विचारधारा की संवाहक बनी। 16 अगस्त, 1909 के 'डेली न्यूज़' समाचारपत्र में मदन लाल ढींगरा का जोशभरा वक्तव्य छपा जिसमें उन्होंने कहा था कि 'एक हिन्दू होने के नाते मैं अनुभव करता हूँ कि गुलामी राष्ट्र देवता का अपमान है। राष्ट्र पूजा ही राम और कृष्ण की पूजा है। मैं तब तक बार-बार जन्म लेना चाहूँगा जब तक भारत माँ स्वतंत्र न हो जाए।'

ब्रिटिश सरकार ने मदन लाल ढींगरा की देह को लावारिस करार देकर दफ़ना दिया। वीर सावरकर जी ने ढींगरा की देह को प्राप्त करने के लिए अनथक प्रयत्न किए, परन्तु वे सफल नहीं हुए, क्योंकि सरकार का कहना था कि वे उनके सम्बन्धी नहीं हैं। कई वर्षों बाद जब 13 दिसम्बर, 1976 को महान शहीद ऊधम सिंह की अस्थियाँ भारत लाई गईं, उसी समय मदन लाल ढींगरा की अस्थियों को भी मातृभूमि का स्नेह प्राप्त हुआ।

शब्दार्थ

सम्पन्न	= खुशहाल	**अभियोग**	= मुकद्दमा
अध्ययन	= पढ़ाई	**स्मृति पुंज**	= यादों का समूह
गौरवान्वित	= महिमा से युक्त	**संवाहक**	= आगे ले जाने वाली
प्रशिक्षण	= सिखलाई, ट्रेनिंग	**वक्तव्य**	= कथन
साक्ष्य	= सबूत	**अनथक**	= बिना थके
अनुपालन	= रक्षण	**अस्थियाँ**	= हड्डियाँ

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) मदन लाल ढींगरा का जन्म कब हुआ ?

(*ii*) मदन लाल ढींगरा को लाहौर कॉलेज की पढ़ाई क्यों छोड़नी पड़ी ?

(*iii*) कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर उन्होंने अपना गुज़ारा कैसे किया ?

(*iv*) वे इंग्लैंड में कौन-सी पढ़ाई करने गए थे ?

(*v*) मदन लाल ढींगरा किस क्राँतिकारी संस्था के सदस्य बने ?

(*vi*) कर्जन वायली कौन था ?

(*vii*) मदन लाल को फाँसी की सज़ा कब दी गयी ?

(*viii*) शहीद मदन लाल ढींगरा की अस्थियाँ भारतभूमि कब लायी गयीं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) मदन लाल ढींगरा ने अंग्रेज़ों से बदला लेने की क्यों ठानी ?

(*ii*) कर्जन वायली को मदन लाल ढींगरा ने क्यों मारा ?

(*iii*) मदन लाल ढींगरा की शहादत पर लाला हरदयाल ने क्या कहा था ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) 'शहीद मदन लाल ढींगरा एक सच्चे देशभक्त थे।' स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) आपको शहीद मदन लाल ढींगरा के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है ?

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखें—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शरेय	________	आतमविश्वास	________	कालज	________
देशभगती	________	यांतरिकी	________	अध्यन	________
गौर्वान्वित	________	परशिक्शण	________	क्राँतीकारी	________
सथापना	________	मृत्यूदंड	________	हजार	________
आजादी	________	मातरिभुमि	________	स्मरिति	________
लवारिस	________	अस्थीयाँ	________	प्रापत	________

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग करें—

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
• **तर्क के तराजू में तौलना**	—सोच-समझकर फैसला लेना	________
• **रंग में रँगा जाना**	—प्रभाव पड़ना	________
• **मौत के घाट उतारना**	—मार डालना	________
• **ढेर करना**	—मार गिराना, मार कर गिरा देना	________
• **आवाज़ को दबाना**	—चुप कराना, डराना	________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. यदि आप मदन लाल ढींगरा के स्थान पर होते तो क्या परिवार वालों के विरोध के बावजूद स्वतंत्रता की लड़ाई में कूद पड़ते ?
2. भारत की स्वतंत्रता की चिंगारी को आग में बदलने का काम मदन लाल ढींगरा की शहादत को जाता है। कैसे ?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. इस पाठ में आए अन्य क्राँतिकारियों जैसे विनायक दामोदर सावरकर, श्याम जी कृष्ण वर्मा, खुदीराम बोस, लाला हरदयाल आदि की जीवनियाँ पढ़ें।
2. मदन लाल ढींगरा की पुण्य तिथि पर इनके बारे में अपने विचार स्कूल की प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

- **यांत्रिक अभियांत्रिकी (मकैनिकल इंजीनियरिंग) :** यह भिन्न-भिन्न तरह की मशीनों की बनावट, निर्माण, चालन आदि का सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान है।
- **विनायक दामोदर सावरकर :** (जन्म 28 मई, 1883; मृत्यु 26 फरवरी, 1966) : ये भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख सेनानी एवं प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे। इन्हें प्रायः 'वीर सावरकर' नाम से सम्बोधित किया जाता है। ये स्वतंत्रता सेनानी के साथ-साथ सिद्धहस्त लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता व दूरदर्शी राजनेता भी थे।
- **श्याम जी कृष्ण वर्मा :** अनेक क्राँतिकारी गतिविधियों के द्वारा भारत की स्वतंत्रता के संकल्प को गतिशीलता प्रदान करने में इन्होंने

मुख्य भूमिका निभायी। ऐसा कहा जाता है कि वे पहले ऐसे भारतीय थे जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम०ए० और बैरिस्टर की उपाधियाँ मिलीं। क्राँतिकारी मदन लाल ढींगरा उनके प्रिय शिष्यों में से एक थे।

- **अभिनव भारत :** इसकी स्थापना स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर ने 1904 में की थी। यह संगठन अंग्रेज़ी हकूमत से लड़ने के लिए बनाया गया था।
- **इंडिया हाउस :** यह लंदन में स्थित एक अनौपचारिक भारतीय राष्ट्रवादी संस्था थी जिसकी स्थापना ब्रिटेन के भारतीय छात्रों में राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार करने के लिए श्याम जी कृष्ण वर्मा के संरक्षण में की गयी।
- **खुदीराम बोस (जन्म-1889-मृत्यु-1908) :** इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए 19 वर्ष की आयु में फाँसी पर चढ़कर इतिहास रचा।
- **वंदे मातरम् :** बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा रचित राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' स्वतंत्रता की लड़ाई में लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत था।
- **एनी बेसेंट :** अग्रणी थियोसोफिस्ट।

  महिला अधिकारों की समर्थक, लेखिका, वक्ता एवं भारत-प्रेमी महिला थीं। इनके पिता अंग्रेज़ थे किन्तु इन्होंने पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता की कड़ी आलोचना की तथा प्राचीन हिंदू सभ्यता को श्रेष्ठ कहा। महिलाओं और शोषितों के लिए वह आजीवन संघर्ष करती रहीं।

- **आयरिश लोग :** आयरलैंड के लोगों को आयरिश लोग कहा जाता है।
- **लाला हरदियाल :** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्राँतिकारी लाला हरदियाल ने विदेश में रहने वाले भारतीयों को देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उन्होंने अमरीका में जाकर गदर पार्टी की स्थापना की। 4 मार्च, 1939 को अमरीका से भारत आते समय रहस्यमयी परिस्थितियों में इनकी मृत्यु हो गयी।
- **वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय (1880–1937) :** ये भी एक स्वतंत्रता सेनानी थे और यूरोप में भारतीय विद्यार्थियों को भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए प्रेरित करते थे।
- **स्मारक :** शहीद मदन लाल ढींगरा का स्मारक अज़मेर (राजस्थान) में रेलवे स्टेशन के ठीक सामने स्थित है।

******

डॉ० यतीश अग्रवाल

डॉ० यतीश अग्रवाल का जन्म 20 जून, 1959 में बरेली (उत्तरप्रदेश) में हुआ। ये एक बहुप्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हैं। ये वरिष्ठ चिकित्सक, प्रोफेसर, शोधकर्ता, लेखक, स्वास्थ्य स्तम्भकार तथा प्रसारणकर्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। आजकल ये 'सफदरजंग हॉस्पिटल तथा वी.एम. मेडिकल कॉलेज' नई दिल्ली में प्रोफेसर एवं परामर्शदाता के रूप में कार्य कर रहे हैं।

डॉ० यतीश अग्रवाल स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ उसे लोकप्रिय बनाने के लिए तीन दशकों से अधिक समय से कार्य कर रहे हैं। भारत के प्रमुख समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में इनके लेख नियमित रूप से छपते रहते हैं। इनके लेख सरल, सरस व प्रभावशाली होते हैं।

रचनाएँ—डॉ० यतीश अग्रवाल ने कई पुस्तकें लिखी हैं, इनमें प्रमुख हैं—'मन के रोग', 'नेत्र रोग', 'हृदय रोग', 'नारी स्वास्थ्य और सौन्दर्य', 'दाम्पत्य विज्ञान', 'सबके लिए स्वास्थ्य', 'तुरन्त उपचार', 'स्वस्थ खाएँ तनमन जगाएँ', 'ब्लड प्रेशर : जितना संयत उतना स्वस्थ' तथा 'दवाइयाँ और हम।'

स्वास्थ्य तथा चिकित्सा के क्षेत्र में इनके अपूर्व योगदान के कारण इन्हें भारत सरकार द्वारा नेशनल साइंस अवार्ड (1999), डॉ० मेघनाद साहा अवार्ड (1991, 1992, 1993 तथा 2002), श्री अटल बिहारी वाजपेयी (प्रधानमंत्री) से 'शिक्षा अवार्ड' (2001-02), लिटरेचर अवार्ड हिंदी अकादमी (2003), राजीव गाँधी अवार्ड (2005), इंदिरा गाँधी अवार्ड (2006) आदि से नवाज़ा गया। इनके अतिरिक्त उपराष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा से 'महाराजा अग्रसेन अवार्ड' (1992), राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन से 'आत्माराम अवार्ड' (1999) तथा इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च अवार्ड (2004) से भी इन्हें सम्मानित किया गया है।

पाठ-परिचय : 'एक अंतहीन चक्रव्यूह' निबंध में वर्तमान युग की एक ज्वलंत समस्या—नौजवानों में फैल रही नशे की लत तथा उसके घातक नतीजों को बखूबी दर्शाया गया है। इसमें लेखक ने बताया है कि नौजवान किस तरह इस नशे की लत में पड़कर अपना जीवन अंधकारमय बना लेते हैं। लेखक का कहना है कि शुरू-शुरू में लोग मात्र विनोद के लिए नशे को शुरू करते हैं जो धीरे-धीरे आदत बनकर व्यक्ति को अपना ग़ुलाम बना लेता है। नशे के आदी व्यक्ति की हालत ऐसी हो जाती है कि वह नशा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। वह चोरी-तस्करी या कोई भी अपराध करने को तत्पर हो जाता है। उसका पारिवारिक व सामाजिक जीवन नष्ट हो जाता है। लेखक ने यह भी माना है कि नशे के आदी व्यक्ति का इससे छुटकारा पाना आसान नहीं है। डॉक्टर और स्वयंसेवी संस्थाएँ इस लत को छुड़ाने के काम में लगी हैं फिर भी लेखक ने लोगों को नशों से दूर रहने की सलाह दी है।

एक अंतहीन चक्रव्यूह

धरती पर जीवन का अंकुर फूटते ही आदमी तरह-तरह के प्रयोग करने लगा था। नशे की मायावी दुनिया से उसका प्रथम परिचय उन्हीं दिनों हुआ। सहस्रों वर्ष पहले धरती पर पग धरते ही उसने कौतूहलवश अपने आसपास उग रही वनस्पतियों के साथ न जाने कितने ही खेल खेले। उसे कुछ वनस्पतियों में मन को बहलाने और रंगने के गुण दिखे। समय की धारा में वह निर्बुद्धि उनके चक्रव्यूह में ऐसा फँसा कि उसे सुध ही न रही और वह इन का बंदी बन गया। सच, मादक पदार्थों के आकाशकुसुम हैं हीं ऐसे कि कोई कितना ही छटपटाए, इस चक्रव्यूह से बचकर निकल पाना बहुत मुश्किल है। नशे के दलदल-भरे चक्रव्यूह में फँसा आदमी तन-मन-धन अपना सब कुछ ही लुटा देता है। सभ्यता का सूर्य उगने से बहुत पहले ही आदमी ने पेड़-पौधों से नशीले पदार्थ पाकर उनका रसास्वादन शुरू कर दिया था। पुरातात्विक उत्खननों से पता चला है कि पाषाण युग में भी अफीम का सेवन हुआ करता था। भाँग, गाँजा और चरस का इतिहास भी हज़ारों साल पुराना है। भारत, मिस्त्र, चीन और तुर्की में 3,000 वर्ष ईसा पूर्व से इनके इस्तेमाल के सुस्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। उत्तरी और केंद्रीय अमेरिका के कबीलों ने मैक्सीको में उगने वाले नशीले नागफनी और दक्षिण अमेरिकी आदिवासियों ने कोकेन का सदियों से नशा किया है।

19वीं सदी के उत्तर्शद्ध तक मन की तार-तरंगों को रागमय बनाने के ये भ्रामक प्रयास आबादी के छोटे-से हिस्से तक सीमित थे। जीवन की सच्चाइयों से मुँह मोड़ने के लिए थोड़े-से लोग नशे की भूल-भुलैया में खो जाया करते थे। जैसे-जैसे जीवन का रूप बदला, तौर-तरीके और मूल्य बदले, चिलम का धुआँ समाज की रग-रग में बढ़ता-फैलता गया। आज नशा करनेवालों में हर तबके और हर उम्र के लोग—हाई स्कूल और कॉलेज के छात्र-छात्राएँ, पढ़ाई बीच में छोड़ देनेवाले किशोर और युवा,

कलाकार, अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, छोटे-बड़े दुकानदार, दफ़्तर में कलम घिसते क्लर्क, छोटी-बड़ी फैक्टरियों में काम करते मज़दूर, रिक्शा-ठेला खींचने वाले, तिपहिया स्कूटर और टैक्सी-चालक, पान-सिगरेट बेचनेवाले, और बेरोज़गार—सभी इस भूल-भुलैया में सम्मिलित हैं। कोई ग़म ग़लत करने, तो कोई शून्य, स्नेहरिक्त, नीरस जीवन में रस लाने के लिए, कोई उत्सुकतावश, तो कोई फैशनेबल दिखने-कहलाने के लिए नशे के नरक में धँसता जा रहा है।

मोटे तौर पर आदमी की नशे की निर्भरता दो तरह की होती है। पहली वह, जिसमें नशा न मिलने पर मन बेचैन होने लगता है, पर शारीरिक लक्षण नहीं उभरते। इसे मनोवैज्ञानिक निर्भरता (साइकोलॉजिकल डिपेंडेंस) कहते हैं। कुछ नशों में मन के बाद शरीर भी नशे का इतना गुलाम हो जाता है कि अगली खुराक न मिलने पर छटपटाने लगता है। धीरे-धीरे खुराक की मात्रा भी बढ़ती जाती है। यह दूसरी अवस्था शारीरिक निर्भरता (फिज़िकल डिपेंडेंस) के दरजे में आती है। इसे ही व्यसन या ड्रग एडिक्शन भी कहते हैं।

नशे की शुरुआत अक्सर किसी दोस्त या साथी के कहे में आकर होती है। यह एक 'अनुभव' ही कई बार आगे चलकर व्यसन में तब्दील हो जाता है। अवसाद, तनाव, विफलता, हताशा आदि मन को कमज़ोर बनाने वाली स्थितियाँ भी आदमी को नशे की ओर धकेल सकती हैं। मन का संतुलन खोजता आदमी एक अंतहीन चक्रव्यूह में फँस जाता है।

कुछ इस गलतफहमी का शिकार हो जाते हैं कि नशा कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता बढ़ाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि नशा करने से मननक्षमता क्षीण हो जाती है और व्यक्ति अपना स्वास्थ्य भी गँवा सकता है। कुछ विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में यह सोचकर भी नशीली दवाएँ लेने लगते हैं कि इससे उनकी मानसिक एकाग्रता बेहतर बन जाएगी, पर होता उलटा है।

व्यक्तित्व की कुछ खामियाँ भी आदमी को नशे में डुबो सकती हैं। ज़रा-ज़रा-सी बात पर चिंता, तनाव, अवसाद और मन में हीन भावना का घर कर जाना नशे की तरफ ले जा सकता है। घर में बड़ों को नशा करते देखकर भी कुछ किशोर और युवा गुमराह हो जाते हैं।

हर नशा मन की दुनिया पर गहरा असर डालता है। ज़्यादातर मादक पदार्थ सुख का भ्रांति-भाव पैदा करते हैं। आदमी पर मदहोशी-सी छा जाती है और मन कुछ सोच नहीं पाता। इसके साथ-साथ हर नशे का अपना एक खास रंग होता है। एल.एस.डी. और पी.सी.पी. नाना प्रकार के भ्रमराक्षस (इल्यूजन) उत्पन्न करते हैं—रंगों में सुर्खी आ जाती है, खुद का अस्तित्व परिवेश में मिटता लगता है और मन अद्‌भुत कल्पनाओं की उड़ान भरने लगता है। कैनाबिस लेने के बाद मन प्रमत्त हो उठता है, बेवजह हँसी और रुलाई छूटने लगती है और वास्तविकता से नाता टूट जाता है। कोई चीज़ बड़ी दिखती है तो कोई छोटी, सुबह शाम लगती है और शाम सुबह। अपना शरीर ही अपरिचित-सा दिखने लगता है। एंफेटामिन दवाएँ विभ्रम पैदा करती हैं। आदमी दृष्टि-भ्रम और श्रुति-भ्रमों से घिर जाता है। कोकेन के सेवन से कभी यह आभास होता है कि मानो त्वचा के नीचे असंख्य कीड़े रेंगने लगे हैं।

लगभग सभी नशों का लगातार सेवन मनन-क्षमता और स्मरण-शक्ति को कमज़ोर बना देता है। रोगी पर आलस्य छाया रहता है और वह पोस्ती हो जाता है। किसी कामकाज में मन नहीं लगता, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। ज़रा-ज़रा-सी बात पर झूठ बोलने की आदत बन जाती है। पहनावे और व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति लापरवाह हो जाता है। शंकालु-भाव हावी होने पर मरने-मारने पर उतारू हो जाता है। नशा करने वाले लोगों में आत्महत्या की दर भी अधिक पाई गई है।

नशीले पदार्थों का सेवन शरीर पर भी कई दुष्प्रभाव डालता है। भूख मर जाती है, जिससे शरीर दुर्बल हो जाता है और रोगों से लड़ने के

काबिल नहीं रहता। यही कारण है कि नशा करने वालों में तपेदिक, एच.आई.वी. और दूसरे संक्रामक रोग अधिक पाए जाते हैं। मतली, क़ै और शरीर के दर्द भी उन्हें सताते हैं। सिगरेट और चिलम के सहारे नशा करनेवालों के फेफड़े रुग्ण हो जाते हैं। यह लोग बिना फिल्टर की सिगरेट पीते हैं और नशे का पूरा रस लेने के लिए उसका धुआँ देर तक भीतर रोके रखते हैं। इससे वातस्फीति (एंफाइसिमा, दम फूलने का एक रोग) और फेफड़े का कैंसर होने की आशंका कई गुनी बढ़ जाती है। पूरे समूह में एक ही टीके से नस में नशीली दवा लेनेवालों में यकृतशोथ (हेपेटाइटिस-बी) और एच.आई.वी. एड्स का खतरा बढ़ जाता है।

मन और तन की ये रुग्णताएँ रोगी के पारिवारिक और सामाजिक जीवन को भी खंडहरों में बदल देती हैं। वह अपनों का प्यार और साथ खो बैठता है और दुनिया में निरपट अकेला हो जाता है। नौकरी छूट जाती है, मित्र और सगे-संबंधी छूट जाते हैं। आर्थिक समस्याएँ दिनोंदिन बढ़ती जाती हैं। इसके बावजूद मन और तन की छटपटाहट अगली ख़ुराक जुटाने के लिए उससे चोरी, नशीले पदार्थों की बिक्री, तस्करी आदि कुछ भी करवा सकती है जिससे वह फिर और ज़्यादा दलदल में फँसता जाता है तथा अपराधी का जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है।

मादक पदार्थों के व्यसन से मुक्ति पाना आसान नहीं होता। शारीरिक आसक्तता उत्पन्न करने वाले नशे समय से अगली ख़ुराक न मिलने पर तन-मन के भीतर गहरी तड़प पैदा कर देते हैं। ये अवहार लक्षण नशा न मिलने के चंद घंटों बाद ही शुरू हो जाते हैं और 10-14 दिन तक कायम रहते हैं। इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए चिकित्सीय मदद की ज़रूरत पड़ती है।

नशे के चंगुल से मुक्त कराने में मनोरोग विशेषज्ञ विशेष रूप से मदद कर सकते हैं। नशा-मुक्ति के लिए वे कई प्रकार की चिकित्सीय पद्धतियाँ व्यवहार में लाते हैं। कुछ नशीले पदार्थों से छुटकारा दिलाने के लिए डॉक्टर नशे की ख़ुराक घटाते हुए उसे धीरे-धीरे बंद करते हैं, तो कुछ नशों को बंद

करने के साथ-साथ ऐसी दवाएँ दी जाती हैं, जिनसे तन-मन की छटपटाहट नियंत्रण में रहती है। उपचार का यह प्रथम चरण प्रायः दो हफ़्ते तक चलता है। इस दौरान रोगी को अस्पताल में भरती करना पड़ सकता है।

मादक पदार्थों के चंगुल से निकलने के बाद उपचार का दूसरा चरण शुरू होता है। इसमें रोगी के मानसिक और सामाजिक पुनर्वास के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते हैं। यह पुनर्वास परिवारजनों और प्रियजनों के सच्चे सहयोग से ही पूरा हो सकता है। जब तक रोगी बीते जीवन को भुला न ले और उसमें नई शुरुआत करने का संकल्प न जागे, यह यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता।

आज देश में बहुत से सरकारी और गैर-सरकारी संगठन, अस्पताल, पुलिस और स्वयंसेवी संस्थाएँ नशामुक्ति की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। किंतु अच्छाई इसी में है कि इस चक्रव्यूह से स्वयं को बिल्कुल आज़ाद ही रखें। कोई कुछ भी कहे, न तो नशों के साथ एक्सपेरिमेंट करना अच्छा है, न ऐसी संगत में रहना ठीक है जहाँ लोग उसके चंगुल में क़ैद हों। कई युवा दूसरों की देखादेखी इस चक्रव्यूह में फँस तो जाते हैं, पर फिर चाह कर भी उसकी क़ैद से छूट नहीं पाते। चारों तरफ अंधियारा गहराता जाता है, जीवन खून की सिसकियों में लिपट जाता है और मृत्यु का साया समीप आता दिखाई देता है।

शब्दार्थ

अंतहीन = जिसका अंत न हो

चक्रव्यूह = चक्र के रूप में सेना की स्थापना

टिप्पणी : युद्ध में एक ऐसी मोर्चाबंदी जिसके अंदर फँसने के बाद उसमें से फिर बाहर निकलना असंभव हो जाता है, नशे की लत पड़ने पर भी यही स्थिति होती है कि व्यक्ति फिर नशे के दलदल से बाहर नहीं आ पाता।

कौतूहलवश = उत्सुकता के कारण

पुरातात्विक = पुरातत्व (प्राचीन वस्तुओं की खोज एवं अध्ययन) से सम्बन्धित

रसास्वादन = स्वाद लेना

उत्खनन = ज़मीन से खोदकर निकालना, खुदाई

पाषाण = पत्थर

नागफनी = साँप के फन के आकार का गूदेदार पौधा

कोकेन = कोका की पत्तियों से तैयार किया गया द्रव्य, जिसे लगाने से अंग सुन्न हो जाता है।

उत्तरार्द्ध = पिछला आधा भाग

भ्रामक = भ्रम उत्पन्न करने वाला, बहलाने वाला

चिलम = मिट्‌टी की बनी हुई नली जिस में तंबाकू जलाकर पीते हैं।

ग़म ग़लत करना = दुःख भूलने के लिए नशा करना

स्नेहरिक्त = स्नेह से रहित

व्यसन = लत

ड्रग एडिक्शन = नशीले पदार्थ पर शारीरिक व मानसिक रूप से निर्भरता

अवसाद = सुस्ती, थकावट, उदासी

हताशा = निराशा, दुःख

कल्पनाशीलता = मन की कल्पना शक्ति

सृजनात्मकता = मौलिकता, रचनात्मक शक्ति

भ्राँति = भ्रम, संदेह

हीनभावना = अपने को तुच्छ समझने की भावना

तपेदिक = क्षय रोग, टी.बी. (Tubercle bacillus)

मतली = मिचली, जी मचलने की अवस्था

क़ै = वमन, उल्टी करना

रुग्ण = बीमार, दूषित

यकृतशोथ = जिगर की सूजन

एड्स = (एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएंसी सिंड्रोम) एक विशेष तरह के वायरस से उत्पन्न एक रोग जिसमें शरीर की रोग-बचाव प्रणाली बेअसर हो जाती है।

निरपट = बिल्कुल

आसक्तता = लिप्तता

पुनर्वास = बीमारी आदि के कारण उजड़े/बर्बाद हुए लोगों का उपचार करके उन्हें फिर से बसाना

एक्सपेरिमेंट = प्रयोग

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—**

   (*i*) नशे के चक्रव्यूह में फँसा आदमी क्या कुछ लुटा देता है?

   (*ii*) व्यसन या ड्रग एडिक्शन किसे कहते हैं?

   (*iii*) नशे के अंतहीन चक्रव्यूह में कौन फँस जाता है?

   (*iv*) कोकेन के सेवन से क्या नुकसान होता है?

   (*v*) नशा करने से पारिवारिक व सामाजिक जीवन पर क्या असर पड़ता है ?

   (*vi*) नशा करने से आर्थिक जीवन पर क्या असर पड़ता है ?

   (*vii*) कौन-कौन-सी संस्थाएँ नशामुक्ति की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) नशे की भूल-भुलैया में लोग क्यों फँस जाते हैं ?

(*ii*) लेखक के अनुसार किस तरह के लोग नशे के शिकार होते हैं ?

(*iii*) लोगों में नशे के बारे में किस तरह की ग़लतफहमी है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*iv*) नशा करने वाले व्यक्ति के स्वभाव में क्या परिवर्तन आ जाता है ?

(*v*) नशा करने से कौन-कौन-सी भयंकर बीमारियाँ होती हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) नशा करने का एक बार का अनुभव आगे चलकर व्यसन में बदल जाता है—कैसे ?

(*ii*) नशेड़ी व्यक्ति का जीवन अंततः नीरस हो जाता है—कैसे ?

(*iii*) नशामुक्ति के क्या-क्या उपाय किए जाते हैं ?

(*iv*) निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—

- अवसाद, तनाव, विफलता, हताशा आदि मन को कमज़ोर बनाने वाली स्थितियाँ भी नशे की ओर धकेल सकती हैं। मन का संतुलन खोजता आदमी एक अंतहीन चक्रव्यूह में फँस जाता है।
- किंतु अच्छाई इसी में है कि इस चक्रव्यूह से स्वयं को बिल्कुल आज़ाद ही रखें। कोई कुछ भी कहे, न तो नशों के साथ एक्सपेरिमेंट करना अच्छा है, न ऐसी संगत में रहना ठीक है जहाँ लोग उसके चंगुल में क़ैद हों।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
निर्बुद्धि	________	________	बेरोज़गार	________	________
दुष्प्रभाव	________	________	उत्खनन	________	________
बेचैन	________	________	विवश	________	________

2. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
निर्भरता	________	________	विफलता	________	________
पुरातात्विक	________	________	शारीरिक	________	________
मानसिक	________	________	मनोवैज्ञानिक	________	________
कल्पनाशीलता	________	________	सृजनात्मकता	________	________
चिकित्सीय	________	________	सरकारी	________	________

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
• **मुँह मोड़ना**	—उपेक्षा करना, ध्यान न देना	________________
• **रग-रग में फैलना**	—सब जगह फैलना	________________
• **घर करना**	—मन में कोई बात बैठ जाना	________________

- **सुध न रहना** — याद न रहना________________

____

- **ग़म ग़लत करना** — दुःख भूलने के लिए नशा करना________

____

- **नाता टूटना** — सम्बन्ध ख़त्म हो जाना____________

____

4. निम्नलिखित पंजाबी वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(*i*) ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਖੁਰਾਕ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਵੀ ਵੱਧਦੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

(*ii*) ਨਸ਼ੇ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਆਮਤੌਰ 'ਤੇ ਕਿਸੇ ਦੋਸਤ ਜਾਂ ਸਾਥੀ ਦੇ ਕਹਿਣ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

(*iii*) ਨਸ਼ੇੜੀ ਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਮਨ ਨਹੀਂ ਲਗਦਾ।

(*iv*) ਨਸ਼ੀਲੇ ਪਦਾਰਥਾਂ ਦੀ ਲਤ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਪਾਉਣਾ ਅਸਾਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

(*v*) ਨਸ਼ਿਆਂ ਤੋਂ ਸਾਨੂੰ ਖ਼ੁਦ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਅਜ਼ਾਦ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. 'घर में बड़ों को नशा करते देखकर भी कुछ किशोर और युवा गुमराह हो जाते हैं।' क्या आप लेखक की इस उक्ति से सहमत हैं ? यदि हाँ, तो चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए।

2. यदि आपको कोई नशा करने के लिए उकसाए तो आप किस तरह उसे मना करेंगे ?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. नशा-उन्मूलन सम्बन्धी प्रभावशाली नारे एक चार्ट पर लिखकर कक्षा की दीवार पर लगाइए।

2. तख्तियाँ बनाकर उन पर सुंदर लिखावट के साथ नशा-उन्मूलन सम्बन्धी प्रभावशाली नारे लिखें और जब भी स्कूल की ओर से नशा-उन्मूलन रैली का आयोजन किया जाए तो इन नारों से समाज को नशों से दूर रहने के लिए जागृत करें।

3. नशों के घातक परिणामों से सम्बन्धित चित्र अखबारों, मैगज़ीनों, इंटरनेंट आदि से इकट्ठे कीजिए और उनका कोलाज़ बनाइए।

4. नशा–उन्मूलन सम्बन्धी कोई एकांकी ढूँढ़ें अथवा अपने मित्रों/ अध्यापकों की मदद से छोटी–सी नाटिका लिखें और उसे बाल–सभा में मंचित करें।

5. जब भी कभी आपके स्कूल में नशों के विरोध में कोई आयोजन हो तो उस अवसर पर 'नशामुक्ति'/ 'नशाबंदी' विषय पर छात्रों का एक समूह मिलकर एक प्रदर्शनी का आयोजन करे।

6. स्कूल में नशा–उन्मूलन विषय पर आयोजित होने वाली विभिन्न क्रियाओं जैसे 'निबन्ध', 'भाषण', 'वाद–विवाद' तथा 'पोस्टर बनाना' आदि प्रतियोगिताओं में सक्रिय भाग लें।

7. 1 दिसम्बर को प्रतिवर्ष 'विश्व एड्स दिवस' के अवसर पर स्कूल में आयोजित होने वाली कार्यशाला में भाग लें। इस अवसर पर अध्यापकों, रिसोर्स पर्सन्स, चिकित्सकों आदि के 'एड्स' विषय पर बहुमूल्य विचार सुनें एवं इस अवसर पर आयोजित 'प्रश्नोत्तरी काल' में 'एड्स' से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर अपनी सभी जिज्ञासाओं को शान्त करें।

(ङ) ज्ञान–विस्तार

1. **कोकेन :** यह भी एक खतरनाक ड्रग है। इसकी लत से दृष्टिभ्रम, मतिभ्रम, क्रोधयुक्त उन्माद आदि होने लगता है और पूरी तरह से मनुष्य का मानसिक व नैतिक पतन हो जाता है। भारत सहित अनेक देशों में इसके उपयोग व बिक्री पर रोक है।

2. **एल.एस.डी.** (लाइसर्जिक एसिड डाई–ऐथाइलामाइड) : तेज़ मादक पदार्थ जिसे लेने से मानसिक व्यवहार और शारीरिक क्रिया–कलापों पर गहरा असर पड़ता है। मन व्यग्रता से घिर उठता है, मतिभ्रम और दृष्टिभ्रम होने से सच्चाई से नाता टूट जाता है और तरह–तरह की मानसिक विकृतियां दिलोदिमाग पर हावी हो जाती हैं।

3. **पीसीपी** (फेनसाइक्लीडिन) : कई नामों जैसे एंजल डस्ट, पीस पिल (शाँति की गोली) और सेरनिल के नाम से बिकने वाली नशे की गोली जिसे लेने से सच्चाई से नाता टूट जाता है और मन-मस्तिष्क में कई तरह के भ्रम-विभ्रम उठ खड़े होते हैं।
4. **कैनाबिस :** देश के कई हिस्सों में उगने वाली बूटी, जिसके विभिन्न हिस्सों से मादक पदार्थ भांग, गांजा और चरस प्राप्त किए जाते हैं। इनका नशे करने से मतिभ्रम उत्पन्न होता है, जिसके चलते छोटी-सी चीज़ें बहुत बड़ी दिखने लग सकती हैं, कानों में आवाज़ें सुनाई देने लग सकती हैं, और नशे की इस हालत में आदमी कई प्रकार से अपना बुरा कर सकता है। लंबे समय तक इनके सेवन से तन-मन दोनों पर गंभीर दुष्परिणाम पड़ते हैं।
5. **एम्फेटामिन दवाएं :** मस्तिष्क को उत्तेजित करने वाली शक्तिशाली दवाओं का एक खास वर्ग। अक्सर इन दवाओं का दुरुपयोग एकाग्रता और मानसिक सतर्कता में वृद्धि लाने के लिए होता है। युवा पीढ़ी में 'स्पीड' के नाम से लोकप्रिय ये दवाएं नींद भगाने, थकान मिटाने और सुखबोध उत्पन्न करने के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं, किंतु उनके सेवन से तन-मन पर अनेक दुष्परिणाम पड़ सकते हैं। ये दवाएं अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, दिल की धड़कनों की गड़बड़ी, ब्लड प्रेशर में वृद्धि पैदा करती हैं, आदमी को नशाखोर बनाती हैं और दिल पर बुरा असर डाल मौत की नींद सुला सकती हैं।
6. **एच.आई.वी. (ह्यूमन इम्यूनो डैफिशिएन्सी वायरस) :** यह एक विषाणु है जिसके साथ एड्स फैलता है।
7. **एड्स :** यह अंग्रेज़ी के अक्षर ए.आई.डी.एस. से बना है अर्थात् एक्वायर्ड इम्यून डैफिशिएन्सी सिन्ड्रोम। वास्तव में यह कोई रोग नहीं

है अपितु एक शारीरिक अवस्था है जिसमें मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होते–होते लगभग खत्म ही हो जाती है तथा मनुष्य फिर साधारण रोग–कीटाणुओं द्वारा फैलने वाली सामान्य बीमारियों से भी अपने आप को बचा नहीं पाता। इस तरह फिर वह प्राणघातक संक्रामक रोगों व कई तरह के कैंसर आदि से ग्रस्त हो सकता है।

8. **तपेदिक (क्षयरोग) T.B. (Tubercle bacillus) :** यह एक संक्रामक बीमारी है जो आमतौर पर फेफड़ों पर हमला करती है लेकिन यह शरीर के अन्य भागों को भी प्रभावित कर सकती है। यह हवा के माध्यम से तब फैलती है जब वे लोग जो टी.बी. संक्रमण से ग्रसित हैं और छींक, खांसी या किसी अन्य प्रकार से हवा के माध्यम से अपनी लार संचारित कर देते हैं।

9. **हेपेटाइटस बी/यकृतशोथ :** यह वायरस के कारण होने वाली एक संक्रामक बीमारी है जिसके कारण लीवर में सूजन और जलन पैदा होती है।

******

बचेंद्री पाल

बचेंद्री पाल का जन्म उत्तरांचल के चमौली ज़िले में बंपा गाँव में 24 मई, 1954 को हुआ। इनकी माता का नाम हंसादेई नेगी और पिता का नाम किशन सिंह पाल है। ये अपने माता-पिता की तीसरी संतान हैं। इनके पिता पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ थे, अतः बचेंद्री को आठवीं से आगे की पढ़ाई का खर्च सिलाई-कढ़ाई करके जुटाना पड़ा। बचेंद्री ने ऐसी कठिन स्थितियों के बावजूद संस्कृत में एम.ए. और बी.एड. की शिक्षा हासिल की।

बचेंद्री को पहाड़ों पर चढ़ने का शौक बचपन से ही था। 1984 में भारत का चौथा एवरेस्ट अभियान शुरू हुआ। दुनिया में तब तक सिर्फ 4 महिलाएँ एवरेस्ट की चढ़ाई में कामयाब हो पाई थीं। 1984 के इस अभियान की जो टीम बनी उसमें बचेंद्री पाल समेत 7 महिलाओं और 11 पुरुषों को शामिल किया गया। कई महीनों के अभ्यास के बाद आखिर वह दिन आ ही गया जब उन्होंने एवरेस्ट विजय के लिए प्रयाण किया। इसके साथ ही 23 मई, 1984 को 1 बजकर 7 मिनट पर 29028 फुट (8848 मीटर) की ऊँचाई पर एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक कदम रखने वाली वे भारत की प्रथम और दुनिया की पाँचवीं महिला पर्वतारोही बनीं।

पाठ परिचय : बचेंद्री ने एवरेस्ट विजय की अपनी पर्वतारोहण-यात्रा को स्वयं लिखा है। प्रस्तुत पाठ उसी विवरण में से लिया गया है। इसमें इन्होंने अपनी संघर्षपूर्ण जीवन यात्रा और पर्वतारोहण यात्रा को प्रस्तुत किया है।

बचेंद्री पाल

मेरा जन्म 24 मई, 1954 को हुआ था। गढ़वाल में लड़की होने का क्या अर्थ है, यह मैं जानती हूँ। बचपन से ही मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं परिवार में किसी से पीछे नहीं रहूँगी और न केवल वह करूँगी जो लड़के करते थे, वरन् उनसे अच्छा करके दिखाऊँगी।

मैं एक बहुत बड़ी स्वप्नदृष्टा थी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि कोई चीज़ मेरी पहुँच से बाहर है। दस साल की आयु में ही मैं जंगलों और पहाड़ी ढलानों पर प्राय: अकेली घूमा करती थी। प्रकृति के साथ मेरे खुलाव ने मुझे निडर और स्वतंत्र बना दिया था। बसंत के दिनों में मैं उन प्रवासी पक्षियों के झुंडों को देखने के लिए चुपचाप घर से बाहर निकल जाती थी जो सर्दियों में मैदानों में रहते थे।

मेरा परिवार बहुत ग़रीब था और न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी असमर्थ था। मेरे माता-पिता इस बात से दुखी थे कि उनके बच्चे ऐसे सपनों की दुनिया में रहते थे जो कभी साकार नहीं हो सकते। लेकिन परिवार के छोटे सदस्य मेरी कल्पनाओं में बहुत आनंद लेते थे और मुझे प्रेरित करते रहते थे। मैं उनसे कहती थी, ''इंतज़ार करो, मैं तुम्हें सब कुछ करके दिखा दूँगी।''

मैं हर तरह की बाहरी क्रीड़ा में विशिष्टता हासिल करना चाहती थी, विशेष रूप से लड़कों के साथ होने वाली प्रतियोगिताओं में। मैं दौड़ की वार्षिक प्रतियोगिताओं जैसे कि तीन टँगड़ी, सुई-धागे वाली दौड़, बोरा दौड़ तथा सिर पर पानी भरा मटका रखकर होने वाली दौड़ आदि का अभ्यास प्रतियोगिताओं के शुरू होने से पहले पूरे परिश्रम से करती थी। मैं

पढ़ाई में काफी अच्छी थी, लेकिन खेल–कूद में और भी बेहतर। जिन–जिन खेलों में मैंने भाग लिया, अधिकांश में प्रथम रही और मैदानी खेलों जैसे कि गोला फेंक, डिस्क फेंक व लम्बी दौड़ में अनेक कप जीते।

मैं लगभग तेरह वर्ष की थी और आठवीं की परीक्षा अच्छे अंकों से पास की थी, तभी मेरे पिता ने कहा कि वे अब मुझे स्कूल में भेजने का खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकते और अब मुझे घर के काम में मदद करनी चाहिए। मैंने अपने मन में ऊँची शिक्षा प्राप्त करने का निश्चय कर लिया था, इसलिए मैं दिन के समय न केवल अपने हिस्से का, बल्कि उससे कहीं अधिक घर का काम करती थी और अपने मित्रों से स्कूल की किताबें उधार लेकर देर रात तक बैठकर अध्ययन करती थी। मेरे तीव्र उत्साह और दृढ़ संकल्प को देखकर हर आदमी प्रभावित था और अंत में मेरी माता और बहन कमला ने मेरे पिता से मुझे आगे पढ़ाने की वकालत की और मुझे नौवीं कक्षा में दाखिला लेने की अनुमति मिल गई। मैंने सिलाई का काम सीख लिया और सलवार–कमीज़ के सूट सिलकर पाँच से छह रुपये प्रतिदिन कमाने लगी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करना मेरा प्रथम उद्देश्य था। इसलिए मैंने पर्वतारोहण की अपनी इच्छा को रोककर रखा। जब मैंने एम.ए., बी.एड. कर लिया तब मैंने अपने आपको पर्वतारोहण के लिए पूरी तरह समर्पित कर दिया।

घर में खाली बैठने की बजाय मैंने नेहरू संस्थान के प्रारंभिक पर्वतारोही कोर्स में प्रवेश के लिए आवेदन किया। मुझे प्रवेश मिल गया और मैंने वहाँ बरफ और चट्टानों पर चढ़ने के तरीकों का अध्ययन किया और 'रैपलिंग' के रोमांच का अनुभव किया। रैपलिंग का अर्थ है—ऊँची चट्टान अथवा हिमखंड से एक नाईलौन की रस्सी के सहारे कुछ ही क्षणों में नीचे आना।

हमने चट्टान, बरफ और हिम पर चढ़ने की और अधिक उच्च तकनीकें सीखीं। हमें अभियान को आयोजित करने का भी प्रशिक्षण

दिया गया। अधिक ऊँचाई के रूप में मैंने, 'ब्लैक पीक' अथवा 'काला नाग-6387 मीटर' की चढ़ाई की।

इस कोर्स में भी मुझे 'ए' ग्रेड मिला और अभियानों में भाग लेने के लिए मेरी संस्तुति की गई। मेरे प्रशिक्षक बहुत अधिक प्रोत्साहन देने वाले थे और कहते थे मेरे अंदर अच्छे पर्वतारोही के लक्षण हैं।

जब मैंने सुना कि 'इंडियन मांउन्टेनियरिंग फाउंडेशन' (आई.एम.एफ.) ने 1984 में होने वाले एवरेस्ट अभियान के लिए आयोजित जाँच शिविर के लिए मुझे चुना है तो मैं जैसे एक बदली हुई इन्सान बन गई। अपने आप को मज़बूत बनाने के लिए मैं घास चारे और सूखी लकड़ी के भारी से भारी गठ्ठर घर लाने लगी। मैं रोज़ आने-जाने का रास्ता भी बदल देती थी। मैं अधिक दुर्गम रास्तों और घाटियों से होकर निकलती और जानबूझ कर पत्थरों के ऊपर से चलती अथवा सीधी खड़ी ढलाऊ चट्टानों से उतरती जिससे कि मैं बेहतर संतुलन प्राप्त कर सकूँ, ऊँचाई के डर को निकाल सकूँ। मेरे सभी क्रियाकलापों का एकमात्र उद्देश्य एक सच्चा दक्ष पर्वतारोही बनना था।

एक बार तेनजिंग ने हँसते हुए मुझसे कहा था कि "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो, तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।" ये शब्द ही मेरे साथी बने।

मई 1984 तक आरोहण योजना को शुरू करने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। हमें 8 मई को साउथ कोल पहुँचकर 9 मई को चोटी पर पहुँचने का प्रयास करना था। 9 मई को हमने प्रातः सात बजे शिखर कैम्प से प्रस्थान किया।

16 मई को प्रातः आठ बजे तक हम कैम्प II तक पहुँच गये थे। मैंने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी।

सुबह 6:20 पर जब अंग दोरजी और मैं साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हल्की-हल्की हवा चल रही थी

लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। मैं अपने आरोही उपस्कर में काफी सुरक्षित और गरम थी। हमने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंग दोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और मुझे उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

जमी हुई बरफ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख़्त और भुरभुरी थीं मानो शीशे की चादरें बिछी हों। हमें बरफ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना पड़ा और मुझे बड़ी सख़्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमी हुई बरफ की धरती को फावड़े के दाँत काट सकें।

दो घंटे से कम समय में ही हम शिखर कैम्प पर पहुँच गये। अंग दोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और मुझसे कहा कि क्या मैं थक गई हूँ? मैंने जवाब दिया, ‘‘नहीं’’ जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए। उन्होंने कहा कि पहले वाले दल ने तो शिखर कैम्प पर पहुँचने में चार घंटे लगाये थे और यदि इसी गति से चलते रहे तो हम शिखर पर दोपहर 1 बजे तक पहुँच जाएँगे।

मेरी सांस मानो रुक गई थी। मुझे लगा कि सफलता बहुत नजदीक है। 23 मई, 1984 के दिन दोपहर के 1 बजकर सात मिनट पर मैं एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली मैं प्रथम भारतीय महिला थी।

मैं अपने घुटनों के बल बैठी, बरफ पर अपने माथे को लगाकर मैंने सागरमाथे के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। उन्हें लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और बरफ में दबा दिया। आनंद के उस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया। मैं उठी, मैंने अपने हाथ जोड़े और अंग दोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। उन्होंने मुझे गले से लगाया और कहा, ‘‘मैं बहुत खुश हूँ।’’

हमने शिखर पर 43 मिनट व्यतीत किये। ल्होत्से, नुपत्से और नकाचू जैसी विशाल पर्वत श्रेणियाँ अब हमारे पर्वत के सामने बौनी लग रही थीं। मैंने चोटी के समीप एक छोटे-से खुले स्थान से पत्थरों के कुछ नमूने एकत्र किए और अपनी वापिसी यात्रा शुरू कर दी।

मुझे पर्वतारोहण में श्रेष्ठता के लिए, भारतीय पर्वतारोहण संघ का प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक तथा अन्य अनेक सम्मान और पुरस्कार प्रदान किये गये। पद्‌मश्री और प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार की भी घोषणा की गई।

एवरेस्ट चढ़ाई से मेरी हार्दिक इच्छाओं की पूर्ति हुई है और मुझे वह सभी कुछ मिला है जो मेरे पास है। मैं इससे अधिक कुछ नहीं चाहती।

शब्दार्थ

स्वप्नदृष्टा	= स्वप्न देखने वाला
प्रवासी	= दूसरे स्थान का निवासी
न्यूनतम	= कम से कम
साकार	= आकार युक्त
क्रीड़ा	= खेल
विशिष्टता	= विशेषता
प्रतियोगिता	= मुकाबला
बर्दाश्त	= सहन करने की शक्ति
पर्वतारोहण	= पर्वतों पर चढ़ना
प्रारंभिक	= शुरू का
पर्वतारोही	= पहाड़ पर चढ़ने वाला
रोमांच	= रोंगटे खड़े होना
हिमखंड	= बर्फ का टुकड़ा
प्रशिक्षण	= नियमित रूप से दी जाने वाली व्याव-हारिक शिक्षा, ट्रेनिंग
संस्तुति	= प्रशंसा
प्रशिक्षक	= प्रशिक्षण देने वाला
प्रोत्साहन	= किसी काम के लिए उत्साह बढ़ाना
दुर्गम	= जहाँ पहुँचना कठिन हो
क्रिया-कलाप	= किसी व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले काम
दक्ष	= निपुण, कुशल
शिखर	= पहाड़ की चोटी
आरोहण	= ऊपर की ओर चढ़ना
प्रस्थान	= जाना, रवानगी
आरोही	= चढ़ने या ऊपर जाने वाला
उपस्कर	= सामान
फावड़ा	= कुदाल
प्रतिष्ठित	= सम्मानित

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) बचेंद्री पाल ने बचपन में क्या दृढ़ निश्चय कर लिया था ?

(*ii*) बचेंद्री पाल के माता-पिता किस बात से दु:खी थे ?

(*iii*) बचेंद्री पाल ने किन मैदानी खेलों में कप जीते ?

(*iv*) बचेंद्री पाल ने कब अपने आपको पर्वतारोहण के लिए पूरी तरह समर्पित किया ?

(*v*) 'रैपलिंग' का क्या अर्थ है ?

(*vi*) बचेंद्री पाल और अंग दोरजी ने बर्फ काटने के लिए किस चीज़ का इस्तेमाल किया ?

(*vii*) एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला कौन है ?

(*viii*) एवरेस्ट पर आनन्द के क्षणों में बचेंद्री पाल को किन का ध्यान आया ?

(*ix*) बचेंद्री पाल को कौन-कौन से पुरस्कार दिए गए ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) दस साल की आयु में ही बचेंद्री पाल निडर और स्वतंत्र कैसे बन गई थी ?

(*ii*) बचेंद्री पाल प्रतियोगिताओं के शुरू होने से पहले ही कौन-कौन सी दौड़ का अभ्यास करना शुरू कर देती थी ?

(*iii*) बचेंद्री पाल ने अपनी शिक्षा कैसे प्राप्त की ?

(*iv*) बचेंद्री पाल ने नेहरू संस्थान के पर्वतारोही कोर्स में क्या-क्या सीखा ?

(*v*) तेनजिंग ने बचेंद्री पाल की तारीफ में क्या कहा ?

(*vi*) एवरेस्ट पर पहुँच कर बचेंद्री पाल ने घुटनों के बल बैठ कर क्या किया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) बचेंद्री पाल का चरित्र चित्रण कीजिए।

(*ii*) बचेंद्री पाल के एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने का वर्णन कीजिए।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

एकवचन —	बहुवचन	एकवचन —	बहुवचन
किताब	—__________	लड़की	— __________
कमीज़	—__________	मटका	— __________
तकनीक	—__________	धागा	— __________
चट्टान	—__________	परीक्षा	— __________
चादर	—__________	इच्छा	— __________
साँस	—__________	श्रेणी	— __________

2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
प्रवासी	प्र	वासी	परिवार	________	________
प्रशिक्षण	________	________	परिश्रम	________	________
प्रशिक्षक	________	________	अभियान	________	________

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय	शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
पढ़ाई	पढ़	आई	बचपन	________	________
ऊँचाई	________	________	सफलता	________	________
चढ़ाई	________	________	कठिनाई	________	________
न्यूनतम	________	________	सुरक्षित	________	________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. कल्पना कीजिये कि आप पर्वतारोहण के लिए गये हैं। अपने मित्र को पत्र लिखकर पर्वतारोहण का अनुभव बताइए।

2. आपने अपने भविष्य के लिए क्या लक्ष्य निर्धारित किया है ?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. अपने विद्यालय में होने वाले खेलों में बढ़चढ़ कर भाग लें।

2. 'मन के हारे हार, मन के जीते जीत'—इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित करें।

3. विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्थान प्राप्त करने वाली भारतीय महिलाओं के चित्र चार्ट पर लगाकर कक्षा में टाँगे।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **एवरेस्ट पर्वत :** एवरेस्ट पर्वत (नेपाली में सागरमाथा अर्थात् स्वर्ग का शीर्ष, संस्कृत में देवगिरि) दुनिया का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर है जिसकी ऊँचाई 8848 मीटर है।

2. **तेनजिंग नॉरगे :** तेनजिंग नॉरगे एक नेपाली पर्वतारोही थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मांऊट एवरेस्ट की चोटी पर पहला मानव कदम

रखा। इस मिशन में न्यूजीलैंड के सर एडमंड हिलेरी उनके साथ थे। 29 मई, सन् 1953 को सातवें प्रयास में उन्हें इस मिशन में सफलता मिली।

3. भारत की प्रथम महिला :

(*i*) भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री—**इंदिरा गांधी**

(*ii*) भारत की प्रथम महिला राज्यपाल—**सरोजिनी नायडू**

(*iii*) भारत की प्रथम विश्व सुंदरी—**कु० रीता फारिया**

(*iv*) भारत की प्रथम मिस यूनिवर्स—**सुष्मिता सेन**

(*v*) यूनाइटेड नेशन जनरल एसेम्बली की प्रथम भारतीय महिला और अध्यक्ष—**विजय लक्ष्मी पंडित**

(*vi*) किसी उच्च न्यायालय (केरल उच्च न्यायालय) की प्रथम भारतीय महिला जज—**अन्ना चान्डी**

(*vii*) भारतीय पुलिस सेवा (आई.पी.एस.) में भर्ती होने वाली प्रथम महिला—**किरण बेदी**

(*viii*) माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला—**बचेंद्री पाल**

(*ix*) भारत के उच्चतम न्यायालय की प्रथम महिला जज—**न्यायमूर्ति एम० फातिमा बीबी**

(*x*) अन्तरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला—**कल्पना चावला**

(*xi*) भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति—**प्रतिभा पाटिल**

(*xii*) लोकसभा की प्रथम महिला अध्यक्षा—**मीरा कुमार**

******

ललिता गोयल

श्रीमती ललिता गोयल का जन्म 15 मार्च, 1973 को हुआ। इन्होंने 1993 में दिल्ली विश्वविद्यालय से बी० ए० (आनर्स) तथा 1995 में एम० ए० (राजनीति शास्त्र) की शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी किया। ये कई वर्षों से देश के विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के लिए विभिन्न विषयों पर लेख लिख रही हैं। इनके लेख अत्यंत प्रभावशाली होते हैं। लेखन कार्य के अतिरिक्त इन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों का साक्षात्कार भी लिया है। इस समय ये नामी गिरामी 'दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड' नई दिल्ली में बतौर सम्पादकीय सहायक कार्यरत हैं।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने उपभोक्ता को उसके अधिकारों से अवगत कराने के साथ-साथ उन अधिकारों को पाने के लिए जागरूकता व एकजुटता पर भी बल दिया है। इस पाठ में अधिकारों के उल्लंघन/हनन के मामले में कौन शिकायत कर सकता है, शिकायत कहाँ व कैसे करें, सामान खरीदते समय उपभोक्ता को कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए आदि बातों की लेखिका ने बड़े ही सरल, सहज व स्वाभाविक ढंग से जानकारी प्रदान की है। पाठ ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ रोचक भी है।

कैसे बचें उपभोक्ता धोखाधड़ी से

रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उपभोक्ताओं को ठगी व धोखाधड़ी का शिकार होना पड़ता है। कभी दवा की दुकान पर ऐक्सपायरी डेट क्रॉस कर चुकी दवा दे दी जाती है, तो कभी खरीदे गए उत्पाद पर गारंटी होने के बावजूद सही सर्विस नहीं दी जाती। कभी उत्पाद पर लिखे वज़न से कम वज़न का सामान दे दिया जाता है, तो कभी चिकित्सक द्वारा मरीज का सही इलाज नहीं किया जाता। कभी लुभावने विज्ञापनों द्वारा ग्राहकों को प्रभावित किया जाता है और उत्पाद के बारे में उन्हें गलत जानकारी दी जाती है, जिस का खामियाज़ा अंततः ग्राहकों को ही भुगतना पड़ता है।

उपभोक्ताओं के अधिकारों के संरक्षण के लिए सरकार ने 1986 में उपभोक्ता संरक्षण कानून लागू किया। इस कानून के अनुसार, वह हर एक व्यक्ति उपभोक्ता है, जो किसी वस्तु या सेवा को पाने के बदले धन का भुगतान करता है। इस कानून के अनुसार उपभोक्ता के रूप में उसे कुछ अधिकार प्राप्त हैं। मसलन, सुरक्षा का अधिकार, जानकारी होने का अधिकार, उत्पाद चुनने का अधिकार सुनवाई का अधिकार, शिकायत निवारण का अधिकार, उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार।

इन सभी अधिकारों को पाने के लिए ग्राहक को जागना होगा व संगठित हो कर अपना संरक्षण करना होगा। एक ताज़ा अध्ययन के अनुसार देश के मात्र 20% ग्राहक ही उपभोक्ता संरक्षण कानून से अवगत हैं और केवल 42% ग्राहकों ने ही सुना है कि ऐसा कोई कानून भी हैं। हालांकि रेडियो व टेलीविज़न पर भी ग्राहकों को उन के अधिकारों के बारे में जागरूक करने हेतु अनेक विज्ञापन दिखाए व सुनाए जाते हैं।

स्वयं उपभोक्ता या कोई स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठन इस बात के लिए अपनी शिकायत दर्ज करवा सकता है, जिस के अंतर्गत उपभोक्ता अधिकारों का हनन हुआ है।

शिकायतकर्ता सादे कागज़ पर निम्नलिखित जानकारी दे कर शिकायत दर्ज करा सकता है–

- शिकायतकर्ता व विपक्ष का नाम और पता।
- शिकायत से संबंधित तथ्य यानी अधिकारों का हनन कब व कहाँ हुआ।
- शिकायत में लगाए गए आरोपों के समर्थन में ज़रूरी दस्तावेज़।
- उस हरजाने या राहत का उल्लेख जो शिकायतकर्ता पाना चाहता है।
- शिकायतकर्ता के हस्ताक्षर

उपरोक्त विवरण वाले कागज़ के साथ उपभोक्ता नाममात्र का न्यायालय शुल्क दे कर उपभोक्ता फोरम में शिकायत दर्ज करा सकता है।

` 20 लाख तक के क्लेम के लिए उपभोक्ता ज़िलास्तर के उपभोक्ता संरक्षण आयोग में न्याय की गुहार करे और ` 20 लाख से अधिक के क्लेम के लिए राज्य उपभोक्ता संरक्षण आयोग में शिकायत दर्ज कराए। ` 1 करोड़ से अधिक के क्लेम के लिए वह राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण आयोग में शिकायत दर्ज कराए।

यह ध्यान रहे कि उपभोक्ता शिकायत अधिकारों के हनन के 2 वर्ष के भीतर ही करें। ज़्यादातर मामलों में पीड़ित उपभोक्ता को वकील करने की ज़रूरत नहीं होती। वह चाहे तो खुद भी पैरवी कर सकता है। और तो और बीपीएल (बिलो पावर्टी लाइन) कार्डधारक को तो शिकायत दर्ज करने के लिए किसी तरह की फीस भी नहीं देनी होती।

कई बार दुकानदार अपने उत्पाद पर लेबल या स्टिकर लगा कर उसे बाज़ार भाव से ज़्यादा कीमत पर बेचता है। ऐसा करना उपभोक्ता

अधिकारों का हनन है। अगर आप को रेलवे स्टेशन, ट्रेन, एअरपोर्ट या बस स्टैंड पर किसी भी सामान को एमआरपी से अधिक कीमत पर बेचा जाता है, तो आप अपने उपभोक्ता अधिकारों का प्रयोग कर के शिकायत कर सकते हैं।

उपभोक्ताओं के अधिकारों के उल्लंघन के ऐसे मामले भी सामने आते हैं, जिन में कंपनियाँ आकर्षक ब्याज दर या कुछ समय में धन दोगुना करने की स्कीम का भ्रामक विज्ञापन देती हैं और उपभोक्ता उन के जाल में फँस कर नुकसान उठाता है।

कई बार एक ही फ्लैट 2-2 लोगों को आवंटित कर दिया जाता है और असली हकदार को लंबी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ती है।

कई बार बैंक बिना कारण ग्राहक का अकाउंट फ्रीज़ कर देते हैं, जिस की वजह से ग्राहक को वित्तीय लेनदेन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

उपभोक्ता अगर सचेत रहें और सामान खरीदते समय निम्न बातों का ध्यान रखें तो ठगी का शिकार होने से बच सकते हैं—

- उपभोक्ता केवल वही उत्पाद खरीदे जिस पर एगमार्क का लोगो हो। अगर एगमार्क वाले उत्पाद की गुणवत्ता सही नहीं पाई जाती, तो उत्पादक का लाइसैंस रद्द हो सकता है।
- उत्पाद खरीदते समय उत्पाद पर बैच नंबर या लौट नंबर भी अवश्य जाँच लें।
- पैकिंग की तारीख, उत्पाद का वज़न, किस तारीख से पहले प्रयोग उचित रहेगा, अवश्य देखें। इस के अलावा उत्पादक का नाम व पता भी अवश्य देखें।
- अधिकांश उपभोक्ता वैट बचाने के चक्कर में बिल न लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। यही वजह होती है कि उन के पास खरीदी गई वस्तु का प्रमाण नहीं होता और वे शिकायत करने की दिशा में आगे नहीं बढ़ पाते।

  इसलिए कोई भी सामान खरीदते समय बिल लेना न भूलें।

- उत्पाद विज्ञापन के आधार पर लेने की बजाय उस की गुणवत्ता परख कर लें।
- उत्पाद खरीदते समय ध्यान रखें कि पैकेट खुले व फटे न हों।
- उत्पाद के साथ मिलने वाले गारंटी/वारंटी कार्ड पर दुकानदार के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें।

उपभोक्ता अगर चाहे तो इंटरनैट के ज़रिए कोर सैंटर में भी शिकायत कर सकता है। इस के लिए उपभोक्ता www.core.nic.in पर लौग इन कर के कंप्लेंट रजिस्ट्रेशन पर एक क्लिक द्वारा अपनी शिकायत दर्ज करवा सकता है। शिकायत दर्ज होने के बाद उपभोक्ता को ऑनलाइन ही शिकायत क्रमांक प्राप्त हो जाता है और 72 घंटे के भीतर ही आगे की कार्यवाही संपादित की जाती है। दूसरे पक्ष को 14 दिन के भीतर उपभोक्ता की शिकायत दूर करने के निर्देश दिए जाते हैं। उपभोक्ता को ईमेल के ज़रिए संपादित कार्यवाही से भी अवगत कराया जाता है।

उपभोक्ता नेशनल कंज्यूमर हेल्पलाइन नंबर 1800114000 पर भी अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। यह टोल फ्री नंबर है, जिस पर 9 बजे से 5.30 बजे तक शिकायत दर्ज कराई जा सकती है।

शब्दार्थ

रोज़मर्रा = रोज़ाना की
एक्सपायरी डेट = समापन तिथि
क्रॉस = लाँघी हुई, बीती हुई
चिकित्सक = वैद्य, डॉक्टर
खामियाज़ा = नुकसान
अंततः = अंत में
मसलन = उदाहरण के तौर पर
संरक्षण = हिफ़ाज़त
स्वैच्छिक = अपनी इच्छा से
हनन = चोट पहुँचना, आघात
शिकायतकर्त्ता = शिकायत करने वाला

तथ्य	= सच, यथार्थ	**शुल्क**	= फ़ीस
दस्तावेज़	= विविध लेख्य	**आकर्षक**	= लुभावना
हरजाना	= नुकसान	**भ्रामक विज्ञापन**	= भ्रम में डालने वाला इश्तिहार
राहत	= आराम, चैन		

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) उत्पादक किस तरह ग्राहकों को प्रभावित करते हैं ?

(*ii*) उपभोक्ताओं के अधिकारों के संरक्षण के लिए सरकार ने 1986 में कौन-सा कानून लागू किया ?

(*iii*) ग्राहकों को किस तरह अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाता है ?

(*iv*) कितने रुपये तक के क्लेम के लिए उपभोक्ता ज़िला स्तर पर न्याय की गुहार लगा सकता है ?

(*v*) 20 लाख रुपये से अधिक के क्लेम के लिए उपभोक्ता को अपनी शिकायत कहाँ दर्ज करवानी चाहिए ?

(*vi*) एक करोड़ रुपये से अधिक के क्लेम के लिए उपभोक्ता को अपनी शिकायत कहाँ दर्ज करवानी चाहिए ?

(*vii*) उपभोक्ता को अपने अधिकारों के हनन की शिकायत कितने वर्षों के भीतर करनी चाहिए ?

(*viii*) क्या ग़रीबी रेखा से नीचे के कार्डधारक उपभोक्ता को शिकायत दर्ज करवाने के लिए फ़ीस अदा करनी पड़ती है ?

(*ix*) उपभोक्ता अधिकांश तौर पर सामान खरीदते समय बिल क्यों नहीं लेते ?

(*x*) नेशनल कंज्यूमर हेल्पलाइन नम्बर क्या है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) उपभोक्ता किसे कहते हैं ?

(*ii*) उपभोक्ता संरक्षण कानून-1986 के अनुसार उपभोक्ता के कौन-कौन से अधिकार हैं ?

(*iii*) उपभोक्ता से यदि नियत की गई कीमत से ज़्यादा कीमत वसूली जाती है तो उसे क्या करना चाहिए ?

(*iv*) उपभोक्ता अपनी शिकायत ऑनलाइन किस तरह दर्ज करवा सकता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) आयोग के पास उपभोक्ता के अधिकारों के उल्लंघन के किस-किस तरह के मामले आते हैं ?

(*ii*) उपभोक्ता को सामान खरीदते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(ख) भाषा बोध

1. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
दूकान	____________	गराहक	____________
व्यकती	____________	विगयापन	____________
नाममातर	____________	पीड़त	____________
अरोप	____________	उलंघन	____________

2. **निम्नलिखित शब्दों का वर्णविच्छेद कीजिए—**

शब्द	**वर्णविच्छेद**
उपभोक्ता	______________________
चिकित्सक	______________________
विज्ञापन	______________________
शिकायत	______________________
ग्राहक	______________________
उत्पादक	______________________
आकर्षक	______________________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. आप यह पाठ पढ़ने से पूर्व उपभोक्ता के अधिकारों के संरक्षण के बारे में क्या जानते थे ? अपने शब्दों में लिखें।
2. क्या कभी आपके अधिकारों का हनन/उल्लंघन हुआ है ? यदि हाँ, तो आपने उस स्थिति में क्या किया ?

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. स्कूल में खोले गए लीगल लिटरेसी क्लब के सदस्य बनें एवं कानून से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करें।
2. मैगज़ीनों/अखबारों में आए उपभोक्ता जागरूकता सम्बन्धी लेख/विज्ञापन पढ़ें। जब भी आप कोई ऐसा लेख पढ़ें जिसमें उपभोक्ता को शिकायत के बाद उचित न्याय व मुआवज़ा मिला हो तथा उत्पादक/दुकानदार आदि को उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन के लिए दंडित किया गया हो तो ऐसी खबर को कॉपी में चिपकायें और यदि संभव हो तो संक्षेप में स्कूल की प्रार्थना सभा में सुनाएँ।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस :** भारत सरकार ने 24 दिसम्बर को राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस घोषित किया है क्योंकि भारत के राष्ट्रपति द्वारा इसी दिन ऐतिहासिक उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम-1986 को स्वीकार किया गया था। इस नियम में बाद में वर्ष 1993, 2002 व 2004 में संशोधन भी किये गए। इन संशोधनों के बाद यह अधिनियम और भी सशक्त हो गया।

2. **विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस :** उपभोक्ता आन्दोलन की शुरूआत अमेरिका के कानूनविद् और अधिवक्ता राल्फ नैडर द्वारा की गयी। नैडर के आन्दोलन के फलस्वरूप 15 मार्च, 1962 को अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति जॉन०एफ० कैनेडी द्वारा उपभोक्ता संरक्षण पर पेश किए विधेयक को अनुमोदित किया गया। इसीलिए 15 मार्च को विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है।

   भारत में हर वर्ष 15 मार्च को 'उपभोक्ता संरक्षण दिवस' मनाया जाता है।

3. **एम०आर०पी० (मैक्सिमम रिटेल प्राइस) :** हिंदी में इसके लिए 'अधिकतम खुदरा मूल्य' शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अधिकतम खुदरा मूल्य की संकल्पना को उपभोक्ता प्रायः समझ नहीं पाते। अधिकतर मामलों में एम०आर०पी० का प्रयोग उस कीमत में किया जाने लगा है जिस पर खुदरा व्यापारी वस्तुओं को बेचता है। लेकिन यह भी ध्यान दें कि कुछ खुदरा व्यापारी एम०आर०पी० में कुछ डिस्काऊंट भी दे देते हैं। अतः हमें सजग रहना चाहिए। कुछ उपभोक्ता यह समझते हैं कि एम०आर०पी० का निर्धारण सरकार करती है जबकि सत्य यह है कि एम०आर०पी० का निर्धारण निर्माता द्वारा किया जाता है न कि सरकार द्वारा। यह भी देखने में आता है कि कुछ मामलों में एम०आर०पी० के साथ स्थानीय कर लगा दिये जाते हैं जो कि पूरी तरह से ग़ैर-कानूनी है।

4. **उपभोक्ता न्याय एजेन्सियाँ :** उपभोक्ताओं की शिकायत निवारण के लिए निम्नलिखित एजेन्सियाँ हैं—

   (*i*) **ज़िला उपभोक्ता फोरम :** उपभोक्ता जब कोई सामान खरीदता है या किराये पर लेता है और वह सामान खराब निकलता है या सेवा में कमी रहती है तो उसकी शिकायत सबसे पहले ज़िला उपभोक्ता फोरम में की जाती है। हर राज्य में ज़िला उपभोक्ताओं का गठन किया गया है।

   (*ii*) **राज्य उपभोक्ता आयोग :** ज़िला उपभोक्ता फोरम के निर्णय के खिलाफ संबंधित राज्य उपभोक्ता आयोग में अपील की जा सकती है।

   (*iii*) **राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग :** राष्ट्रीय स्तर पर गठित की गई सर्वोच्च संस्था दिल्ली में है। राज्य उपभोक्ता आयोग के निर्णय के खिलाफ राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग में शिकायत की जा सकती है।

   (*iv*) **टोल फ्री नम्बर-1800-11-4000 :** (समय सुबह 9.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक (सभी कार्य दिवसों-सोमवार से शनिवार)।

5. **उपभोक्ता जागरूकता सम्बन्धी मैगज़ीनें :** कंस्यूमर वॉयस, कंस्यूमर वर्ल्ड, मानकदूत (भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित)।

******

एकाँकी भाग

सेठ गोबिन्द दास

(जन्म-सन् 1896)

सेठ जी साहित्य और राजनीति का संगम थे। देश प्रेम इन्हें संस्कारों में मिला था। यही उनके जीवन और साहित्य का प्रखर स्वर रहा है। हिंदी के प्रचार और प्रसार में इन्होंने विशेष रचनात्मक योग दिया है। एक लम्बे समय तक ये लोकसभा के सम्माननीय सदस्य रहे हैं। भारत सरकार ने इन्हें पद्‌मविभूषण से सम्मानित भी किया है।

वैसे तो सेठ जी ने साहित्य के सभी क्षेत्रों में लेखन-कार्य किया है, परन्तु नाटक-एकांकी के क्षेत्र में इन्होंने महान् ख्याति प्राप्त की है।

रचनाएँ : (नाटक-एकांकी)

'कर्त्तव्य', 'हर्ष', 'प्रकाश', 'कर्ण', 'शशिगुप्त', 'सेवापथ अशोक', 'विकास', 'शाप और वर', 'सच्चा जीवन', 'अलबेला'।

इनके नाटकों-एकांकियों में ऐतिहासिक, सामाजिक पृष्ठभूमि पर हमारे जीवन की अनेक समस्याओं को उठाया गया है। इनमें भारतीय संस्कृति, राष्ट्र-प्रेम और गांधी-दर्शन का आलोक फैला है।

हिंदी-नाटक और एकांकी के विकास में डॉ० सेठ की सेवाओं का ऐतिहासिक महत्व है।

पाठ-परिचय : शिवाजी हमारे राष्ट्रीय गौरव का महान ध्वज हैं। वे अपराजेय शक्ति, शौर्य और पराक्रम का साक्षात रूप थे। धर्मान्ध विदेशी शासन के अमानुषिक अत्याचारों से उन्होंने निरन्तर लोहा लिया। देश की शक्तियों को संगठित कर ''हिंदवी' स्वराज्य'' की स्थापना की। ऐसा स्वराज्य जो सर्वथा धर्मनिरपेक्ष था। मानव-मूल्यों की आधार- शिलाओं पर

उसकी रचना हुई थी। उसमें प्रत्येक नागरिक को सम्मान–पूर्ण जीवन-यापन के पूर्ण अधिकार प्राप्त थे।

शिवाजी का यही शुचि चरित्र प्रस्तुत एकांकी में सामने आया है। शत्रु–पत्नी उन्हें माँ से भी अधिक वंदनीय है। अन्य धर्मों को मानने वाले उन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं। उनके स्वराज्य में न कहीं मस्जिद-कुरान का अपमान हुआ और न कहीं किसी मुसलमान से द्‌वितीय श्रेणी के नागरिक का व्यवहार ही। उनकी सेना में वे भी महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त थे।

वस्तुतः शिवाजी के नेतृत्व में यहाँ की सम्पूर्ण प्रजा ने एक प्राण होकर अत्याचार के विरुद्‌ध संघर्ष किया था।

शिवाजी का सच्चा स्वरूप

एकाँकी के पात्र

शिवाजी : प्रसिद्ध मराठा वीर

मोरोपंत : पेशवा

आवाजी सोनदेव : शिवाजी का एक सेनापति

स्थान

राजगढ़ दुर्ग का एक दालान

काल

सन् 1648 ई०, संध्या

(दाहिनी ओर दालान का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। दालान के सामने किले का खुला मैदान है। मैदान के इस ऊंचे स्तम्भ पर भगवा रंग का मराठा झंडा फहरा रहा है। दालान में जाजम बिछी है, उस पर कमख्वाब की गद्दी पर मसनद के सहारे शिवाजी वीरासन में बैठें हैं। दालान के द्वार पर शस्त्रों से सुसज्जित दो मावली शरीर रक्षक खड़े हुए हैं। बायीं ओर से मोरोपंत पिंगले का प्रवेश)।

मोरोपंत : (अभिवादन कर) श्रीमंत सरकार, सेनापति आवाजी सोनदेव कल्याण प्रांत की जीत, वहाँ का सारा खज़ाना लूटकर आ गये हैं।

शिवाजी : (चौंककर) अच्छा। (मोरोपंत की ओर देखकर) बैठो पेशवा, बड़ा शुभ संवाद लाए। आवाजी सोनदेव है कहाँ ?

मोरोपंत : (वीरासन से बैठकर) श्रीमंत की सेवा में अभी उपस्थित हो रहे हैं।

(कुछ देर निस्तब्धता। शिवाजी और मोरोपंत दोनों उत्सुकता से बाईं ओर देखते हैं। कुछ ही देर में आवाजी सोनदेव बाईं ओर आता हुआ दिखाई देता है। उसके पीछे हम्मालों का एक बड़ा भारी झुंड है। हर हम्माल के सिर पर एक हारा (बड़ा भारी टोकना) है। हम्मालों के झुंड के पीछे पालकी। पालकी बन्द है। आवाजी सोनदेव भी अधेड़ अवस्था का ऊँचा-पूरा मनुष्य है। वेश-भूषा मोरोपंत के सदृश है। आवाजी सोनदेव दालान में आकर शिवाजी का अभिवादन करता है। हम्मालों का झुंड और पालकी दालान के बाहर रहते हैं।)

शिवाजी : बैठो आवाजी, कल्याण-विजय पर तुम्हें बधाई है।

आवाजी सोनदेव : (बैठते हुए) बधाई है श्रीमंत सरकार को।

शिवाजी : कहो, पैदल मावलियों ने अधिक वीरता दिखाई या हेटकरियों ने ?

आवाजी सोनदेव : इनमें भी दोनों ने ही, श्रीमंत।

शिवाजी : सेना के अधिपति कैसे रहे ?

आवाजी सोनदेव : पैदल के अधिपति-नायक, हवालदार, जुमलादार और एकहज़ारी, तथा घुड़सवारों के अधिपति-हवालदार, जुमलदार और सूबेदार, सभी का काम प्रशंसनीय रहा, श्रीमंत सरकार।

शिवाजी : (हम्माल की ओर देखकर मुस्कराते हुए) कल्याण का खज़ाना भी लूट लाए; बहुत माल मिला ?

आवाजी सोनदेव : हां श्रीमंत, सारा खज़ाना लूट लिया गया है और इतना माल मिला जितना अब तक की किसी लूट में न मिला था। चाँदी, सोना, जवाहरात न जाने क्या-क्या मिला। मैं तो समझता हूँ, श्रीमंत, केवल दक्षिण ही नहीं उत्तर की भी विजय इस संपदा से हो सकेगी।

शिवाजी : (हम्मालों के पीछे पालकी को देखकर) और उस मेणा में क्या है ?

आवाजी सोनदेव : (मुस्कराते हुए) उस मेणा ... उस मेणा में, श्रीमंत, इस विजय का सबसे बड़ा तोहफा है।

शिवाजी : (उत्सुकता से आवाजी सोनदेव की ओर देखते हुए) अर्थात्?

आवाजी सोनदेव : श्रीमंत, कल्याण सूबेदार अहमद की पुत्र-वधू के सौंदर्य का वृत्त कौन नहीं जानता ? उसे भी श्रीमंत की सेवा के लिए बंद करके लाया हूँ।

(शिवाजी की सारी प्रसन्नता एकाएक लुप्त हो जाती है। उनकी भृकुटी चढ़ जाती है और नीचे का होंठ ऊपर के दांतों के नीचे आ जाता है। आवाजी सोनदेव शिवाजी की परिवर्तित मुद्रा देखकर घबरा-सा जाता है। मोरोपंत एकाएक शिवाजी की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।)

शिवाजी : (भर्राए हुए स्वर में) मेणा को तत्काल इस पड़वी में लाओ। (आवाजी सोनदेव जल्दी दालान के बाहर जाता है। शिवाजी एकटक पालकी की ओर देखते हैं; मोरोपंत शिवाजी की तरफ। कुछ ही

क्षणों में पालकी दालान में आती है। ज्योंही पालकी दालान में रखी जाती है त्योंही शिवाजी जल्दी से पालकी के निकट पहुँचते हैं। मोरोपंत शिवाजी के पीछे जाता है।)

शिवाजी : (आवाजी सोनदेव से) खोल दो मेणा, आवाजी।

(आवाजी सोनदेव मेणा के दरवाज़े खोलता है। दरवाज़े खुलते ही अहमद की पुत्र-वधू उस में से निकल चुपचाप एक ओर सिकुड़कर खड़ी हो जाती है। वह परम सुन्दरी युवती है। वेश-भूषा मुग़ल स्त्रियों के सदृश।)

शिवाजी : (अहमद की पुत्र-वधू से) माँ, शिवा अपने सिपहसालार की नामाकूल हरकत पर आपसे मुआफी चाहता है। आह ! कैसी अजीबो-गरीब खूबसूरती है आपकी। आपको देखकर मेरे दिल में एक-सिर्फ एक बात उठ रही है—कहीं मेरी माँ में आपकी सी खूबसूरती होती तो मैं भी बदसूरत न होकर एक खूबसूरत शख्स होता। माँ, आपकी खूबसूरती को मैं एक ... सिर्फ एक काम में ला सकता हूँ—उसका हिंदू विधि से पूजन करूं; उसकी इस्लामी तरीके से इबादत करूं। आप ज़रा भी परेशान न हों। माँ, आपको आराम, इज्ज़त, हिफाज़त और खबरदारी के साथ आपके शौहर के पास पहुँचा दिया जायेगा; बिना देरी के, फौरन। (आवाजी सोनदेव की ओर घूमकर) आवाजी, तुमने ऐसा काम किया है जो कदाचित् क्षमा नहीं किया जा सकता। शिवा को जानते हुए, निकट से जानते हुए

भी तुम्हारा साहस ऐसा घृणित कार्य करने के लिए कैसे हुआ ? शिवा ने आज तक किसी मस्जिद की दीवार में बाल बराबर दरार भी न आने दी। शिवा को यदि कुरान की पुस्तक मिली तो उसने उसे सिर पर चढ़ा, उसके एक पन्ने को भी किसी प्रकार की क्षति पहुँचाए बिना, मौलवी साहब की सेवा में भेज दिया। हिन्दू होते हुए भी शिवा के लिए इस्लाम धर्म पूज्य है। इस्लाम के पवित्र स्थान, उसके पवित्र ग्रन्थ सम्मान की वस्तुएँ हैं। शिवा, हिन्दू और मुसलमान प्रजा में कोई भेद नहीं समझता। अरे ! उसकी सेना में मुस्लिम सैनिक तक हैं। वह देश में हिंदू-राज्य नहीं, सच्चे स्वराज्य की स्थापना चाहता है। आततायियों से सत्ता का अपहरण कर उदारचेताओं के हाथों में अधिकार देना चाहता है। फिर पर-स्त्री-अरे ! पर-स्त्री तो हरेक के लिए माता के समान है। जो अधिकार-प्राप्त जन हैं, जो सरदार हैं, या राजा ... उन्हें तो इस सम्बन्ध में विवेक, सबसे अधिक विवेक रखना आवश्यक है। (कुछ रुककर) आवाजी, क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे ? इसलिए तो तुमने यह कार्य नहीं किया ? शिवा ये लड़ाई-झगड़े, ये लूट-पाट व्यक्तिगत सुखों के लिए कर रहा है ? क्या स्वयं चैन उड़ाना उसका उद्देश्य है ? तब ... तब तो ये रक्तपात, ये लूटमार घृणित कृतियाँ हैं। शिवा में यदि शील नहीं तो उसके सेनापतियों, सरदारों को शील का स्पर्श तक नहीं हो सकता। फिर तो हममें और इन्द्रिय-लोलुप लुटेरों तथा डाकुओं में कोई

अन्तर ही नहीं रह जाता। अरे ! तब तो हमारे जीवन से हमारी मृत्यु, हमारी विजय से हमारी पराजय, कहीं श्रेयस्कर है। (मोरोपंत से) आह। पेशवा, यह...यह मेरे .... मेरे एक सेनापति ने...मेरे एक सेनापति ने क्या...क्या कर डाला। लज्जा से मेरा सिर आज पृथ्वी में नहीं, पाताल में घुसा जाता है। इस पाप का न जाने मुझे कैसा...कैसा प्रायश्चित करना पड़ेगा ? (कुछ रुक कर) पेशवा, इस समय तो मैं केवल एक घोषणा करता हूँ—भविष्य में अगर कोई ऐसा कार्य करेगा जो उसका सिर उसी समय धड़ से अलग कर दिया जाएगा।

(शिवाजी का सिर नीचे झुक जाता है। अहमद की पुत्रवधू कनखियों से शिवाजी की ओर देखती है। उसकी आंखों में आँसू छलछला आते हैं। मोरोपंत शिवाजी की ओर देखता है और आवाजी सोनदेव घबराहट-भरी दृष्टि से मोरोपंत की ओर।)

शब्दार्थ

दालान = बरामदा

स्तम्भ = खंभा

जाजम = फर्श आदि पर बिछाई जाने वाली छपी हुई चादर, कालीन

कमख्वाब = रंगीन-बूटीधार रेशमी कपड़ा

दुर्ग = क़िला

पेशवा = सरदार, नेता

मसनद = गोल लंबोतरा तथा बड़ा तकिया

वीरासन = बैठने का एक ढंग जो प्राय: प्राचीन योद्धाओं, योगियों तांत्रिकों आदि द्वारा अपनाया जाता है ।

मावली = शिवाजी के खास सैनिक
निस्तब्धता = चुप्पी
हम्माल = मज़दूर, कुली
मेणा = बंद पालकी
वृत्त = इतिहास, वृत्तांत
भृकुटि = भौंह
तोहफा = भेंट, उपहार
सिपहसालार = सेनापति
नामाकूल हरकत = अनुचित व्यवहार, मूर्खतापूर्ण व्यवहार बेहूदा शरारत
इबादत = पूजा
अभिवादन = सत्कार
सदृश = समान
हिफाज़त = सुरक्षा
ख़बरदारी = सावधानीपूर्ण, होशियारी से
शौहर = पति
कदाचित् = शायद, कभी
घृणित = घृणा के योग्य
आततायी = सताने वाले
क्षति = नुकसान
रक्तपात = खून बहाना
उदारचेता = खुले विचारों वाला
शील = चरित्र
श्रेयस्कर = कल्याणकारी
इन्द्रियलोलुप = भोग-विलास की इच्छा रखने वाला
प्रायश्चित्त = पछतावा
कनखी = तिरछी नज़र
अजीबो गरीब = विचित्र
सत्ता का अपहरण = राज्य छीनना

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) शिवाजी कौन थे ?

(*ii*) मोरोपंत कौन था ?

(*iii*) आवाजी सोनदेव कौन था ?

(*iv*) शिवाजी के सच्चा स्वरूप को दर्शाती इस पाठ की घटना किस समय की है ?

(*v*) मोरोपंत शिवाजी को आकर क्या शुभ समाचार देता है ?

(*vi*) आवाजी सोनदेव ने शिवाजी को सबसे बड़े तोहफे के बारे में क्या बताया ?

(*vii*) शिवाजी की प्रसन्नता एकाएक लुप्त क्यों हो गयी थी ?

(*viii*) शिवाजी ने सूबेदार की पुत्र-वधू की सुरक्षा करते हुए उसे क्या आश्वासन दिया ?

(*ix*) शिवाजी पर-स्त्री को किसके समान मानते थे ?

(*x*) शिवाजी ने अंत में क्या घोषणा की ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) शिवाजी ने अपने सेनापति की ग़लती पर सूबेदार की पुत्र-वधू से किस प्रकार मुआफी माँगी ?

(*ii*) शिवाजी ने अपने सेनापति को किस प्रकार डाँट फटकार लगायी ?

(*iii*) शिवाजी किस तरह के सच्चे स्वराज्य की स्थापना करना चाहते थे ?

(*iv*) शिवाजी शील अर्थात् सच्चरित्र को जीवन का आवश्यक अंग क्यों मानते थे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' पाठ के आधार पर शिवाजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(*ii*) इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

(*iii*) 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' एकांकी के नाम की सार्थकता अपने शब्दों में लिखिए।

(*iv*) निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—

- आवाजी, क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे ? इसलिए तो तुमने यह कार्य नहीं किया ?
- पेशवा, यह ... यह मेरे .... मेरे एक सेनापति ने ... मेरे एक सेनापति ने क्या ... क्या कर डाला। लज्जा से मेरा सिर आज पृथ्वी में नहीं, पाताल में घुसा जाता है। इस पाप का न जाने मुझे कैसा ... कैसा प्रायश्चित्त करना पड़ेगा ?

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दलान –	______	सेनापती –	______
सुसजित –	______	उपसथित –	______
वेषभूशा –	______	मुसकुराना –	______
गबराहट –	______	खुबसूरती –	______
हिंदु –	______	सुराजय –	______
मसजिद –	______	घृणीत –	______
श्रेसकर –	______	प्राशचित –	______

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
• **भृकुटि चढ़ना**	—क्रोध आना	______
• **(नीचे का) होंठ (ऊपर के) दाँतों के नीचे आना**	—क्रोध आना	______

• **सिर पर चढ़ाना**	— सम्मान करना, आदर-भाव से ग्रहण करना	______ ______ ______
• **बाल बराबर दरार न आने देना**	— ज़रा भी नुकसान न होने देना, एक समान भाव रखना, समानता रखना	______ ______ ______ ______

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' पाठ में लेखक क्या कहना चाहता है ? क्या लेखक अपनी बात कहने में पूरी तरह सफल हुआ है ? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

2. यदि आप शिवाजी की जगह होते तो सेनापति आवाजी सोनदेव को उसकी नामाकूल हरकत के लिए क्या सज़ा देते ?

3. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः अर्थात् जहाँ नारी की पूजा (सम्मान) होती है वहाँ देवता निवास करते हैं—क्या आप इस बात से सहमत हैं। स्पष्ट कीजिए।

4. स्त्री को छेड़ने/अपहरण आदि करतूत करने में बहादुरी नहीं होती। असली बहादुरी तो स्त्री रक्षा/सुरक्षा में है। क्या आप इस बात से सहमत हैं ? स्पष्ट करें।

5. नारी के उत्थान के लिए अनेक समाज सुधारकों/कवियों/लेखकों/ महापुरुषों ने कार्य किये हैं। आप किससे प्रभावित हुए हैं ? नारी-उत्थान में उनके योगदान को उजागर करते हुए स्पष्ट करें।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' एकांकी को अपने स्कूल के मंच पर खेलिए।

2. अपने स्कूल/शहर/गाँव के पुस्तकालय से शिवाजी से सम्बन्धित पुस्तक लेकर उनके अन्य जीवन प्रसंग पढ़िए। प्रेरक प्रसंगों की जानकारी इंटरनेट से भी प्राप्त हो सकती है।

3. 'नारी अबला नहीं, सबला है'—इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद आयोजित करें।

(**नोट :** कक्षा में सभी विद्यार्थियों को इस विषय के पक्ष या विपक्ष में बोलने के लिए 2 मिनट का समय दिया जाए।)

(ङ) ज्ञान-विस्तार

शिवाजी के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें जानिए—

- **पूरा नाम** : शिवाजी राजे भोंसले
- **जन्म तिथि** : 19 फरवरी, 1630
- **जन्म भूमि** : शिवनेरी (महाराष्ट्र)
- **पिता** : शाह जी भोंसले
- **माता** : जीजाबाई
- **पत्नी** : साइबाई निम्बालकर
- **सन्तान** : शम्भा जी
- **उपाधि** : छत्रपति
- **युद्ध** : मुग़लों के विरुद्ध अनेक युद्ध
- **निर्माण** : अनेक क़िलों का निर्माण व पुनरुद्धार
- **सुधार परिवर्तन** : हिन्दू राज्य की स्थापना
- **राजघराना** : मराठा साम्राज्य
- **वंश** : भोंसले
- **मृत्यु** : 3 अप्रैल, 1680

******

श्रीपाद विष्णु कानाडे

अपनी अद्भुत प्रतिभा से साहित्य का उत्तरोत्तर विकास करने में श्रीपाद विष्णु कानाडे का महत्वपूर्ण स्थान है। ये आधुनिक साहित्यकार हैं। एकाँकी के क्षेत्र में इनकी विशिष्ट पहचान है। एकाँकी के प्रमुख तत्वों— कथानक, पात्र तथा चरित्र चित्रण, संकलनत्रय, संवाद, वातावरण, उद्देश्य व अभिनेयशीलता का इनके एकाँकी में सफलतापूर्वक निर्वहण होता है। इनके द्वारा रचित 'प्रकृति का अभिशाप' अत्यंत प्रभावशाली व लोकप्रिय एकाँकी है।

पाठ-परिचय : पर्यावरण शब्द 'परि' + 'आवरण' के योग से बना है। 'परि' का अर्थ है 'चारों ओर' तथा 'आवरण' का अर्थ है 'ढकने वाला' अर्थात जो हमें चारों ओर फैल कर ढके हुए है। हमारी चारों ओर से रक्षा कर रहा है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश— इन पाँचों के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारी संस्कृति में इन्हें देवता की संज्ञा दी गयी है क्योंकि ये हमें जीवन देने वाले हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति ने हमारे लिए एक स्वस्थ तथा सुखकारी आवरण अर्थात कवच का निर्माण किया था किंतु आज मनुष्य अपने सुखों व स्वार्थों की पूर्ति के लिए इन्हें दूषित करता जा रहा है। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने सूर्यदेव, रश्मिदेवी, वनदेवी, जलदेवी, पवनदेवी, बुद्धिदेवी व प्रदूषण (दैत्य) पात्रों के माध्यम से मानव को सावधान किया है कि यदि मानव प्राकृतिक साधनों के प्रयोग में सावधानी नहीं बरतेगा तो इसके घातक परिणामों से मनुष्य का विनाश भी निश्चित है।

प्रकृति का अभिशाप

पात्र-परिचय		वेश-भूषा
सूर्यदेव	—	सूर्यदेव चमकदार पीले वस्त्र और चमचमाता सुनहरा मुकुट पहने हुए हैं।
रश्मिदेवी	—	रश्मिदेवी भी चमकदार पीला लहँगा और वैसी ही चुन्नी ओढ़े हैं।
वनदेवी	—	वनदेवी फूल और पत्तों से चित्रित हरी साड़ी में हैं, सिर पर पत्तों का मुकुट है।
जलदेवी	—	जलदेवी मछलियों आदि जलीय जंतुओं से चित्रित नीली साड़ी और नीले रंग के मुकुट में हैं।
पवनदेव	—	पवनदेव सफ़ेद वस्त्र पहने हैं।
बुद्धिदेवी	—	बुद्धिदेवी रुपहली किनारी लगी हुई सफ़ेद साड़ी और रुपहले झिलमिलाते मुकुट में हैं।
प्रदूषण दैत्य	—	प्रदूषण दैत्य नेपथ्य में है अतः वेशभूषा की आवश्यकता नहीं है।

पहला दृश्य

(पार्श्वभूमि को पूरी तरह से घेरता हुआ सौरमंडल का रंगीन चित्र। मंच के बीचोंबीच एक विशाल सुनहरा सिंहासन, जिस पर सूर्यदेव विराजमान हैं। रश्मिदेवी सिंहासन के पीछे खड़ी हैं।)

सूर्यदेव : (चिंतित मुद्रा में) इस सौर जगत में मेरे विशाल कुटुंब में, जितने भी ग्रह हैं, उनमें से एक के विषय में मुझे कुछ चिंता हो चली है। वह है मेरी प्रिय पुत्री- पृथ्वी। अपने इस कुटुंब में मैंने पृथ्वी को ही अधिक योग्य बनाया है।

पृथ्वी की गोद में अनेक प्रकार के जीव-जंतु और पेड़-पौधे पनप सकते हैं, यहाँ तक कि सबसे अधिक आश्चर्यजनक अनोखा जीव भी...।

रश्मिदेवी : अर्थात मानव, यही न स्वामी!

सूर्यदेव : (चौंककर) कौन? रश्मि तुम मेरी बातें सुन रही थीं! हाँ, तुमने ठीक पहचाना। सबसे अनोखा जीव मानव है और उसके अनोखे होने का कारण है, उसका मस्तिष्क।

रश्मिदेवी : स्वामी! जब आपने अपनी लाड़ली पृथ्वी को सौर जगत में इतना अच्छा स्थान दिया है और मानव जैसा अनोखा उपहार दिया है, तब आपको चिंता कैसी? और मैं तो अभी पृथ्वी का भ्रमण करके ही आ रही हूँ। मुझे तो पूरे सौर जगत में पृथ्वी एक नंदनवन जैसी लगती है।

सूर्यदेव : (आतुरता से) क्या तुम पृथ्वी का भ्रमण करके आ रही हो? तो फिर बताओ, मेरी प्रिय पुत्री का क्या हाल है?

रश्मिदेवी : उसका हाल बहुत अच्छा है। मानव ने अपने मस्तिष्क के सहारे प्रगति की है। जंगल और गुफाओं में रहने वाला मानव आज नगरों में बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं में रहता है। उसने प्रकृति पर काफ़ी सीमा तक विजय प्राप्त कर ली है। वह उन्नति के शिखर...।

(पवनदेव का प्रवेश)

पवनदेव : (बात काटकर) नहीं भगवन्! उन्नति नहीं, पतन के गर्त में गिरने वाला है।

(जलदेवी का प्रवेश)

जलदेवी : (क्रोधित स्वर में) लेकिन ऐसी उन्नति भी भला किस काम की, जिससे उसे अशुद्ध जल पीकर अनेक बीमारियों

का शिकार होना पड़ता है। (सूर्यदेव तथा रश्मिदेवी और अधिक आश्चर्यचकित होते हैं।)

(वनदेवी का प्रवेश)

वनदेव : यही नहीं, असाधारण प्रगति के कारण मानव के समक्ष विषाक्त भोजन खाकर आत्मघात करने के सिवाय कोई चारा नहीं रहेगा, भगवन्!

सूर्यदेव : (एक-एक चेहरे को देखते हुए) आखिर आप लोग हैं कौन और क्या कह रहे हैं?

पवनदेव : (*हाथ जोड़कर*) सौर जगत के अधिपति भगवान सूर्य हमें क्षमा करें। देवी रश्मि के असत्य कथन से कि मानव उन्नति के शिखर पर पहुँच रहा है, हम लोग क्षुब्ध हो उठे और बीच में ही बोल उठे। क्षमा करें भगवन्!

(सूर्यदेव अभी भी चकित मुद्रा में)

पवनदेव : (*सिर झुकाकर*) देव! आपकी लाड़ली पुत्री पृथ्वी का तुच्छ सेवक पवनदेव आपको नमन करता है।

जलदेवी : (*सिर झुकाकर*) उसी पृथ्वी की सेविका इस जलदेवी का प्रणाम स्वीकार करें।

वनदेवी : (*सिर झुकाकर*) भगवन्! आपकी पुत्री पृथ्वी की एक और सेविका वनदेवी का कोटि-कोटि प्रणाम!

सूर्यदेव : (*हाथ उठाकर*) अपनी पुत्री की सेविकाओं से मिलकर मुझे प्रसन्नता हो रही है परंतु आप लोगों के इस अनायास आगमन का कारण क्या है?

पवनदेव : (*खिन्न स्वर में*) भगवन्! क्षमा करें परंतु हमारी स्वामिनी पृथ्वी इस समय बड़े संकट में है और अपने दु:ख की गाथा सुनाने ही उन्होंने हमें यहाँ भेजा है।

सूर्यदेव : (*तेज़ स्वर में)* क्या कहा? हमारे रहते हमारी पुत्री संकट में है? असंभव! (रश्मि की ओर मुड़कर) रश्मि! तुम तो अभी पृथ्वी का भ्रमण करके आई हो। तुमने अभी बताया कि पृथ्वी नंदनवन–सी लगती है!

रश्मिदेवी : (*मुस्कराकर*) मैंने तो अपने भ्रमण में ऐसा ही पाया। हर जगह मानव की प्रगति हो रही है।

जलदेवी : (*दो कदम आगे बढ़कर*) भगवन्! क्षमा करें। रश्मिदेवी ने प्रकाश की तीव्र गति से पृथ्वी का भ्रमण किया इसलिए उन्हें केवल ऊपरी–ऊपरी बातें ही नज़र आई होंगी।

सूर्यदेव : (*सिंहासन से उठकर*) आखिर बात क्या है? कौन–सा ऐसा बड़ा संकट पृथ्वी पर मंडरा रहा है?

वनदेवी : (*घबराए स्वर में*) देव! एक महादैत्य हम लोगों के पीछे लगा हुआ है।

रश्मिदेवी : (*डरी हुई मुद्रा में)* क...क...क... क्या कहा? महादैत्य! (सूर्य से चिपककर) मुझे बचाइए!

सूर्यदेव : डरती क्यों हो? क्या तुमने अपने भ्रमण के दौरान उस महादैत्य को देखा?

रश्मिदेवी : (*वीरता के भाव से*) मैंने कोई दैत्य नहीं देखा। मैं किसी से डरने वाली नहीं।

सूर्यदेव : (*क्रोधित होकर*) तुमने नहीं देखा, तो फिर ये लोग क्या कह रहे हैं? बोलो!

पवनदेव : (*मंच पर एक चक्कर काटते हुए*) रश्मिदेवी ठीक कह रही हैं। यह दैत्य ऐसा ही है जो दिखाई नहीं देता परंतु धीरे–धीरे पृथ्वी के वातावरण को विषाक्त बना रहा है।

सूर्यदेव : क्या नाम है उस दैत्य का?

जलदेवी : उसका नाम है—प्रदूषण!

रश्मिदेवी : खर-दूषण का नाम तो मैंने सुना है किंतु उसे तो प्रभु रामचंद्र जी ने त्रेतायुग में समाप्त कर दिया था।

पवनदेव : (हँसी रोकने की मुद्रा में) देवी जी, खर-दूषण नहीं ! प्रदूषण! प्रदूषण!

रश्मिदेवी : (*सिर हिलाकर*) हाँ, तो यह राक्षस अवश्य ही खर-दूषण के कुल में जन्मा होगा।

वनदेवी : (*अपने स्थान से एक कदम आगे बढ़कर*) जी नहीं। इस राक्षस का प्रादुर्भाव गत शताब्दी में हुआ, जब से संसार में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हुई। इस शताब्दी के अंत तक तो यह न मालूम क्या गज़ब ढाएगा!

सूर्यदेव : (*सिंहासन पर बैठ जाते हैं*) देखो, तुम लोग ज़रा स्पष्ट रूप से सब समझाओ। पवन! पहले तुम बताओ।

पवनदेव : (*सूर्य के आगे नत होकर*) भगवन्, आप जानते ही हैं कि यह तुच्छ सेवक पवन, आपकी पुत्री पृथ्वी के वातावरण का एक मुख्य घटक है। वायुमंडल के रूप में मैंने पृथ्वी को आच्छादित कर रखा है।

सूर्यदेव : हाँ, मैंने अपने अन्य किसी पुत्र को इतना अच्छा वातावरण नहीं दिया। वायुमंडल के कारण एक तो पृथ्वी के प्राणी जीवित रह पाते हैं, दूसरा यह कई प्रकार के संकटों से पृथ्वी की रक्षा भी करता है।

रश्मिदेवी : (*डरकर*) वह कैसे ?

सूर्यदेव : अंतरिक्ष में अनेक उल्काएँ हर पल पृथ्वी की ओर आकृष्ट होती हैं। वायुमंडल से घर्षण के कारण वे मार्ग में ही भस्म हो जाती हैं। यदि वायुमंडल न होता, तो उल्काएँ पृथ्वी पर विनाश करतीं। पृथ्वी का धरातल भी चंद्रमा के समान बड़े-बड़े गड्ढों से युक्त होता।

पवनदेव : जी हाँ! मेरे अस्तित्व के कारण ही पृथ्वी पर जीवन संभव है।

सूर्यदेव : मनुष्य के लिए शुद्ध हवा की कमी न रहे इसीलिए मैंने पृथ्वी को हवा के अथाह समुद्र में डुबो दिया है।

पवनदेव : (*उदास होकर*) इस हवा के अथाह समुद्र का केवल 1/5 भाग, जिसे ऑक्सीजन कहते हैं, मानव के लिए प्रत्यक्षतः उपयोग का है और मुझमें इसका तीव्रता से ह्रास होता जा रहा है।

सूर्यदेव : क्या इस ह्रास को रोका नहीं जा सकता?

पवनदेव : प्रत्येक जीव ऑक्सीजन का उपयोग करता है और कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ता है। यही नहीं, असंख्य कारखानों, इंजनों में आग का उपयोग हो रहा है जिससे कार्बन डाइऑक्साइड अत्यधिक उत्पन्न हो रही है। मुझमें ऑक्सीजन कम होने का यह प्रमुख कारण है।

सूर्यदेव : इस दूषित कार्बन डाइऑक्साइड से पुनः ऑक्सीजन प्राप्त करने के लिए ही तो मैंने वनस्पति जैसी सेविका पृथ्वी को प्रदान की है।

वनदेवी : प्रभु, आपका कहना ठीक है! आपके तीव्र प्रकाश की सहायता से मेरी हरी पत्तियाँ कार्बन डाइऑक्साइड को, प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया से कार्बन और ऑक्सीजन में विश्लेषित करती हैं। मैं स्वयं के पोषण के लिए कार्बन

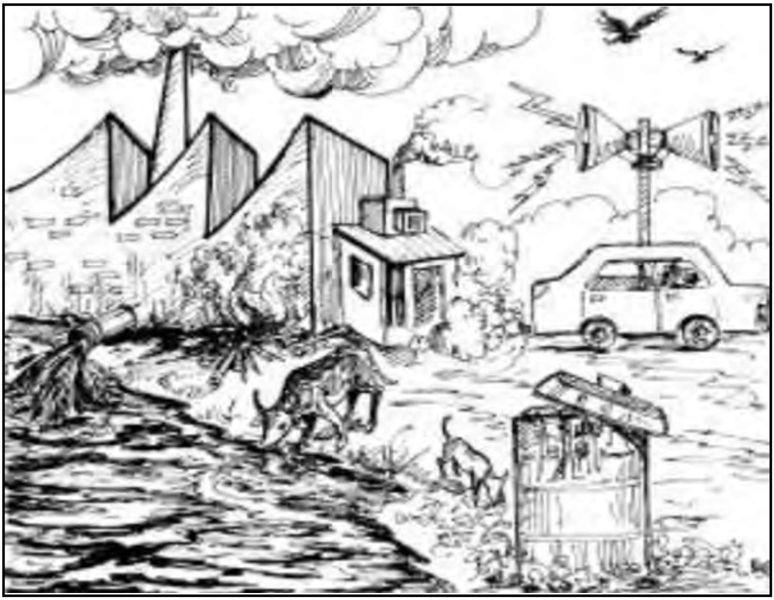

रख लेती हूँ और प्राणदायिनी ऑक्सीजन को पुनः वायु में भेज देती हूँ। मेरी प्रत्येक हरी पत्ती एक अनोखा कारखाना है जो भोजन और ऑक्सीजन बनाती है। इस कारखाने में कभी कोई हड़ताल नहीं होती है।

रश्मिदेवी : (*मुँह बनाकर*) इतना अच्छा काम तुम्हारा, फिर भी यह रोनी सूरत!

वनदेवी : प्रभु, आपने अपनी प्रकृति को संतुलित बनाया था परंतु अब कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ती जा रही है और मैं घटती जा रही हूँ।

रश्मिदेवी : नहीं...नहीं.... वनस्पतियाँ पैदा भी होती हैं।

वनदेवी : (*गुस्से से*) ज़रा सोच-समझकर बात किया करो! मानव की आधुनिक प्रगति और औद्योगिक वृद्धि के कारण हरे-भरे जंगल नष्ट हो रहे हैं। विवेकहीन मनुष्य जंगल

की लकड़ी अंधाधुंध काट रहा है। नई बस्तियाँ, नए शहर बसाने के लिए और कागज़ बनाने के लिए उपयोगी जंगल काट लिए जाते हैं। फलस्वरूप न केवल वायु को शुद्ध करने की मेरी क्षमता नष्ट हो रही है, अपितु...।

रश्मिदेवी : अब बंद भी करो अपना रोना!

वनदेवी : इसे मज़ाक न समझो। जंगलों के नष्ट होने से दो नुकसान और भी होते हैं। इनका प्रभाव मानव के जीवन पर भी पड़ता है।

सूर्यदेव : ये कौन-से नुकसान हैं ?

वनदेवी : वन वर्षा लाते हैं। वनों की कमी से वर्षा नहीं होती। वर्षा न होने से वनस्पतियाँ नहीं उगतीं और वनस्पतियों के अभाव में वायु अशुद्ध रह जाती है, फिर वन अन्य वन्यप्राणियों के निवास-स्थान भी हैं। प्रकृति में इन प्राणियों का अपना अलग-अलग उपयोग और महत्व है।

पवनदेव : मेरे दूषित होने के और भी अनेक कारण हैं जिनके मूल में हैं, आधुनिक औद्योगिक प्रगति!

रश्मिदेवी : (*आश्चर्य से*) प्रगति प्रदूषण का कारण कैसे हो सकती है ?

पवनदेव : अनेक आधुनिक उद्योगों के कारण वायुमंडल में विविध प्रकार की गैसें आ जाती हैं। इन गैसों का प्रभाव मानव-जीवन पर भी पड़ता रहता है।

रश्मिदेवी : मानती हूँ! वायुमंडल में गैसें बहुत बढ़ गई हैं किंतु मानव पर भला इनका क्या असर होता है ?

पवनदेव : गंधकयुक्त औषधियाँ मानव में आँतों की बीमारियाँ उत्पन्न करती हैं और तपेदिक जैसे रोगों को बढ़ावा देती हैं।

वनदेवी : गंधकयुक्त औषधियों के कारण मेरे पनपने में भी रुकावट आती है। मेरी हरी पत्ती के कारखाने ठीक से काम नहीं कर पाते।

पवनदेव : मेरे दूषित होने के दूसरे गंभीर कारण हैं– इन कारखानों के इंजन आदि से आने वाले असंख्य सूक्ष्म कण।

रश्मिदेवी : कार्बन डाइऑक्साइड और गंधकयुक्त औषधियाँ तुम्हें दूषित करती हैं, माना, पर ये सूक्ष्म कण तुम्हारा क्या बिगाड़ सकते हैं ?

पवनदेव : (*सूर्यदेव की ओर मुड़कर*) देव! इन कणों के मुझमें मिल जाने से पृथ्वी को आपकी किरणों का पूरा–पूरा लाभ नहीं मिल पाता। ये कण कीटाणुओं से मिलकर जल और वनस्पतियों को भी दूषित करते हैं। इन असंख्य कारखानों, इंजनों आदि में जलने वाला पेट्रोल तो मुझे कहीं का नहीं छोड़ता!

सूर्यदेव : ऐसा क्यों ?

पवनदेव : पेट्रोल को सक्षम बनाने के लिए उसमें सीसा मिलाया जाता है और यह सीसा तो मेरे अस्तित्व को अत्यधिक विषाक्त बना डालता है। बड़े शहरों का वातावरण तो इस पेट्रोल के कारण बहुत अधिक विषाक्त बन गया है, भगवन्!

रश्मिदेवी : इससे अच्छा तो यह होता कि लोग बड़े–बड़े शहरों में न रहकर छोटे–छोटे गाँवों में ही रहते!

पवनदेव : तुम्हारा कहना ठीक है, दैत्य प्रदूषण के लंबे हाथ अभी गाँवों तक नहीं पहुँचे हैं, और लोगों का गाँवों में रहना ही अच्छा है। इस सीसा मिश्रित पेट्रोल के कारण पृथ्वी पर एक और संकट मंडरा रहा है, प्रभु! आप तो जानते हैं कि वायुमंडल में ओज़ोन की परत है जो आपके द्वारा विसर्जित पराबैंगनी किरणों के दुष्प्रभाव से पृथ्वी के जीवों की रक्षा करती है।

सूर्यदेव : पराबैंगनी किरणों का थोड़ा-सा सेवन प्राणियों के लिए अत्यंत आवश्यक है पर इनकी मात्रा बढ़ जाने से तो सभी मर जाएँगे। ओज़ोन की परत इन पराबैंगनी किरणों के कुछ भाग को ही आर-पार होने देती है।

पवनदेव : ऊपरी वायुमंडल में पेट्रोल से चलनेवाले जैट जैसे विशालकाय हवाई जहाज़ इस ओज़ोन की परत को नष्ट कर रहे हैं।

वनदेवी : (*आँसू पोंछकर*) प्रभो, अब कुछ मेरी भी सुनिए! दैत्य प्रदूषण तो मुझे परेशान कर ही रहा है परंतु इन कीटनाशक रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग भी मुझे बहुत अधिक क्षति पहुँचा रहा है। अनाजों को बचाने के लिए कीटनाशक रसायनों का यथोचित प्रयोग ठीक हो सकता है परंतु अत्यधिक प्रयोग अनेक उपयोगी वनस्पतियों को भी नष्ट कर देता है। अनाजों को विषाक्त बनाता है, सो अलग!

जलदेवी : यही नहीं, ये कीटनाशक रसायन, वर्षा के जल में घुलकर नदियों और तालाबों को दूषित कर देते हैं जिससे जलीय वनस्पतियों और जीवों को काफ़ी नुकसान पहुँचता है।

रश्मिदेवी : इतना अधिक कीटनाशक बहकर आता है?

जलदेवी : एक बात और है, अनेक कारखाने अपना दूषित तेल और विषैले पदार्थ नदियों में बहा देते हैं जिससे जीव-जंतुओं को काफ़ी नुकसान पहुँचता है।

सूर्यदेव : यह सब तो बहुत खराब है।

जलदेवी : ऐसा तब और अधिक होता है, जब पेट्रोल से भरे विशाल टैंकर समुद्रों में टूट जाते हैं। समुद्र के किनारे ऐसे स्थान भी हैं जहाँ कास्टिक सोडे की अशुद्धियाँ बहाई जाती हैं।

इनमें ज़हरीला पारा होता है। इस ज़हरीले पारे से मछलियाँ प्रभावित होती हैं और उन्हें खाकर मनुष्य!

सूर्यदेव : (*माथे पर हाथ रखकर*) यह सब तो अत्यंत घातक है!

रश्मिदेवी : स्वामी! अब मैं तो इस ज़हरीली पृथ्वी का भ्रमण करने ही नहीं जाऊँगी।

सूर्यदेव : रश्मि! यह असंभव है, पृथ्वी पर तो तुम्हें जाना ही होगा। तुम तो मानव-जीवन का सहारा हो।

(नेपथ्य से प्रदूषण दैत्य की आवाज़ आती है)

दैत्य प्रदूषण : (*डरावनी हँसी में*) हा...हा...हा..., आज मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। मैंने वायु, जल और वनस्पति की नाक में दम कर दिया। है। देखी मेरी करामात! हा...हा...हा...!

सूर्यदेव : (*चौंककर सिंहासन से उठ जाते हैं।*) कौन है, जो इस तरह बोल रहा है?

पवनदेव : आसपास तो कोई दिखाई नहीं देता!

दैत्य प्रदूषण : दिखाई दूँगा भी कैसे! मैं तो अदृश्य रहकर ही सबको सताता हूँ।

रश्मिदेवी : आवाज़ तो बड़ी डरावनी मालूम पड़ रही है।

दैत्य प्रदूषण : (*चीखकर*) मुझसे डरना ही पड़ेगा। मैं मनुष्य के विनाश का कारण बनने वाला हूँ।

वनदेवी : आखिर तुम हो कौन?

दैत्य प्रदूषण : (*फिर चीखकर*) मैं हूँ मानव का महाकाल, प्रगति का अभिशाप, औद्योगिक प्रगति का विष-वृक्ष, मैं हूँ मानव का अदृश्य शत्रु-प्रदूषण दैत्य! समझे... प्रदूषण दैत्य!

रश्मिदेवी : (*डरते हुए*) क...क... क्या कहा? प्रदूषण दैत्य! स्वामी, मेरी रक्षा कीजिए!

दैत्य प्रदूषण : मैं तुझे क्षति नहीं पहुँचाऊँगा रश्मि, मैं तो पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों एवं अन्य जीवों का विनाश करना चाहता हूँ। मैं उन्हें घुला-घुलाकर मारूँगा।

पवनदेव : देव! सुन लिया आपने, अब आप ही अपनी लाड़ली पुत्री पृथ्वी को बचाइए!

जलदेवी : (*वायु के पास सिमटकर*) भगवन्, मुझे भी इस दैत्य से बचाने की कृपा करें ताकि पृथ्वी का जल शुद्ध रह सके।

वनदेवी : (*जलदेवी के पास आकर*) यह दैत्य मनमानी करता रहा, तो मैं प्राणियों को भोजन कैसे दे सकूँगी?

(*सूर्यदेव चिंतामग्न हो जाते हैं।*)

(*नेपथ्य में मधुर संगीत के साथ बुद्धिदेवी का प्रवेश होता है।*)

बुद्धिदेवी : भगवन्! इस दैत्य से पृथ्वी को बचाने के लिए आपको कष्ट करने की ज़रूरत नहीं है। पृथ्वीवासियों के जीवन को सुखी बनाने वाली जल, वायु और वनस्पति देवियों की रक्षा मैं करूँगी।

जलदेवी : हे देवी, आप कौन हैं? आपकी बातों से अपार बुद्धिमत्ता झलक रही है।

बुद्धिदेवी : मैं हूँ बुद्धि और मेरे बल पर ही मानव अनादिकाल से प्रगति करता रहा है।

दैत्य प्रदूषण : क्या तुम मुझ प्रदूषण दैत्य से लोहा लोगी? मानव को मेरे चंगुल से छुड़ाओगी? असंभव! हा...हा...हा...।

बुद्धिदेवी : निःसंदेह, ज़रा मानव इतिहास पर दृष्टि डालो। आज मानव मेरे ही बलबूते पर महान बना है।

दैत्य प्रदूषण : तुम्हारे कहने का मतलब?

बुद्धिदेवी : सब यही समझते थे कि जंगली जीव-जंतु मानव को पनपने नहीं देंगे। मनुष्य ठंड से मर जाएगा, गुफ़ाओं में रहने वाला मानव भला कितने दिन जीवित रह सकेगा? तुम दैत्य भले ही हो परंतु मेरे लिए तुम तिनके के समान हो।

दैत्य प्रदूषण : क्या कहा? तिनके के समान! मैं दिखाई नहीं देता हूँ परंतु मै अदृश्य रहकर ही मनुष्य के गले में फंदा कसता जा रहा हूँ।

बुद्धिदेवी : अपने अदृश्य होने का घमंड न करो। मानव ने हमेशा अपने शत्रुओं पर विजय पाई है।

दैत्य प्रदूषण : ठीक है! पर मेरे अनेक सहायक हैं। एक नवीनतम सहायक है, रेडियोधर्मिता।

रश्मिदेवी : यह क्या बला है?

वनदेवी : प्रभो, मैं तो आपको बताना ही भूल गई थी। जब से मानव ने यूरेनियम जैसे रेडियोधर्मी तत्वों का परमाणु-परीक्षण किया है, तब से मैं, जल और वायु इस विनाशकारी विकिरण से दूषित हो गए हैं।

रश्मिदेवी : यह किस तरह हानिकारक है?

दैत्य प्रदूषण : मैं बताता हूँ! रेडियोधर्मिता से पीड़ित मानव स्वयं तो घुल-घुलकर मरेगा ही, वह एक ऐसी पीढ़ी को भी जन्म देगा जिसे विकृतियों के कारण मानव के रूप में पहचानना भी संभव नहीं होगा। शर्त यह है कि वह, बस परमाणु-परीक्षण करता रहे। उसके अलावा मेरा एक और साथी ध्वनि प्रदूषण तो है ही न!

रश्मिदेवी : ध्वनि प्रदूषण?

दैत्य प्रदूषण : हाँ, बड़े-बड़े शहरों में विशालकाय हवाई जहाज़ों, वाहनों, लाउडस्पीकरों आदि अन्य स्त्रोतों से इतनी अधिक ध्वनि उत्पन्न होती है कि मुझे विश्वास है कि वह लाखों लोगों को बहरा बना देगी। सुना, मेरा प्रताप! क्यों बुद्धि, क्या तुम अब भी मनुष्य को मेरे चंगुल से छुड़ाने का साहस करोगी?

बुद्धिदेवी : अवश्य! मुझे तुम्हारी चुनौती स्वीकार है।

दैत्य प्रदूषण : ठीक है, अभी तो मैं जाता हूँ अपना विनाश कार्य करने।

बुद्धिदेवी : आप लोग चिंता न करें, मुझ पर भरोसा रखें। आदि मानव विनाशकारी अग्नि से भयभीत हो गया था। फिर उसने इसी अग्नि को अपने अधीन कर लिया और आज अग्नि मानव के लिए बड़ी देन है। मैं इस प्रदूषण दैत्य को ही जड़ से समाप्त कर दूँगी। संसार से इसका उन्मूलन करना परमावश्यक है।

सूर्यदेव : धन्य हो बुद्धिदेवी! तुम धन्य हो!

बुद्धिदेवी : मुझे आशीर्वाद दीजिए, शक्ति दीजिए कि मैं लोग-कल्याण के इस कार्य को करने में सफल होऊँ।

सूर्यदेव : तथास्तु।

(*सभी के चेहरे पर प्रसन्नता दिखलाई देती है। परदा गिरता है।*)

शब्दार्थ

रश्मि = किरण

पार्श्वभूमि = आस-पास की ज़मीन

कुटुंब = परिवार

अट्टालिका = महल, पक्की इमारत

गर्त = गड्ढा

आत्मघात = अपनी हत्या

क्षुब्ध = क्रोध मिश्रित दुःख
अनायास = अचानक
महादैत्य = महाराक्षस
औद्योगिक = उद्योग सम्बन्धी
अंतरिक्ष = आकाश
धरातल = पृथ्वी की सतह
विसर्जित = छोड़ना
यथोचित = जैसा चाहिए वैसा, समुचित
अथाह = गहरा
विश्लेषित = अलग–अलग किया हुआ
अपार = अत्यधिक, जिसका पार न पाया जा सके।
चंगुल = पकड़, अधिकार
निःसंदेह = बेशक, बिना शक के
बला = मुसीबत
विकृति = विकार, खराबी (विकार के बाद प्राप्त रूप)
नेपथ्य = परदे के पीछे
सौरमंडल = सूर्य और उसके ग्रहों का समूह
मस्तिष्क = दिमाग
समक्ष = सामने
विषाक्त = ज़हरीला
अधिपति = स्वामी, मालिक
कोटि–कोटि = करोड़ों
खिन्न = दुःखी, उदास
प्रादुर्भाव = प्रकट होना, उत्पत्ति
आच्छादित = ढका हुआ
उल्काएँ = लौह मिश्रित पत्थर के टुकड़े जो अंतरिक्ष से पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते हैं।
अस्तित्व = हस्ती, सत्ता, विद्यमान होना
ह्रास = कमी, गिरावट
जलीय = जल सम्बन्धी
प्रत्यक्षतः = प्रत्यक्ष रूप से
वायुमंडल = वातावरण
अनादिकाल = आरम्भ से ही
बलबूते = ताक़त, ज़ोर
उन्मूलन = उखाड़ फेंकना, जड़ से ख़त्म कर देना।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए—

(*i*) सूर्यदेव को किस ग्रह की चिंता थी ?

(*ii*) जलदेवी के अनुसार पृथ्वी के वातावरण को कौन विषाक्त बना रहा है ?

(*iii*) पवनदेव ने ऑक्सीजन कम होने का क्या कारण बताया ?

(*iv*) वनदेवी ने अपने घटने का क्या कारण बताया ?

(*v*) गंधकयुक्त औषधियाँ मनुष्य के स्वास्थ्य पर क्या प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं ?

(*vi*) ओज़ोन परत क्या है ?

(*vii*) ओज़ोन की परत को कौन नष्ट कर रहा है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*viii*) प्रदूषण से मुक्ति दिलाने की बात किसने सूर्यदेव से की ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) यदि वायुमंडल न होता तो पृथ्वी का क्या हाल होता ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*ii*) वनदेवी ने हरी पत्तियों को 'ऑक्सीजन का कारखाना' क्यों कहा ?

(*iii*) वनदेवी ने गुस्से में आकर रश्मिदेवी को क्या कहा ?

(*iv*) वन किस प्रकार हमारे लिए लाभकारी हैं ?

(*v*) रेडियोधर्मिता क्या है ? मनुष्य पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ?

(*vi*) बुद्धिदेवी ने मानव-रक्षा के लिए सूर्यदेव को क्या भरोसा दिलाया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(*i*) लेखक ने प्रदूषण को महादैत्य कहा है। आप लेखक की बात से कहाँ तक सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) जल, वायु और ध्वनि-प्रदूषण हमारे लिए बहुत ही घातक है—स्पष्ट कीजिए।

(*iii*) **निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए—**

- यह दैत्य ऐसा ही है जो दिखाई नहीं देता परंतु धीरे-धीरे पृथ्वी के वातावरण को विषाक्त बना रहा है।
- मैं हूँ मानव का महाकाल, प्रगाति का अभिशाप, औद्योगिक प्रगति का विष-वृक्ष, मैं हूँ मानव का अदृश्य शत्रु-प्रदूषण दैत्य। समझे.......प्रदूषण दैत्य!
- आप लोग चिंता न करें, मुझ पर भरोसा रखें। आदि मानव विनाशकारी अग्नि से भयभीत हो गया था। फिर उसने इसी अग्नि को अपने अधीन कर लिया और आज अग्नि मानव के लिए बड़ी देन है। मैं इस प्रदूषण दैत्य को ही जड़ से समाप्त कर दूँगी। संसार में इसका उन्मूलन करना परमावश्यक है।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

एकवचन	–	**बहुवचन**	**एकवचन**	–	**बहुवचन**
पत्ता	–	____________	नज़र	–	____________
पुत्री	–	____________	गड्ढा	–	____________
आँत	–	____________	पृथ्वी	–	____________
बहरा	–	____________	किरण	–	____________
साड़ी	–	____________	पीला	–	____________
परत	–	____________	लकड़ी	–	____________
नीला	–	____________	गैस	–	____________
पत्ती	–	____________	देवी	–	____________

2. **निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—**

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**शब्द**	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
उन्नति	________	________	आगमन	________	________
असत्य	________	________	प्रदूषण	________	________
प्रगति	________	________	अत्यधिक	________	________
प्रत्येक	________	________	दुष्प्रभाव	________	________

3. **निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—**

शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**	**शब्द**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
प्रसन्नता	________	________	तीव्रता	________	________
उपयोग	________	________	विषैला	________	________
उपहार	________	________	ज़हरीला	________	________

4. **निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—**

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
• **चारा न रहना**	—उपाय न होना	________________________
• **गज़ब ढाना**	—ज़ुल्म करना	________________________
• **नाक में दम करना**	—तंग करना	________________________
• **घुला घुला कर मारना**	—धीरे-धीरे कष्ट पहुँचाकर मारना	________________________
• **लोहा लेना**	—युद्ध करना	________________________
• **तिनके के समान**	—बहुत कमज़ोर	________________________

5. निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

तद्भव	—	तत्सम	तद्भव	—	तत्सम
सफेद	—	________	सूरज	—	________
पीला	—	________	करोड़	—	________
चाँद	—	________	समुन्दर	—	________

6. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए—

(*i*) वह है मेरी प्रिय पुत्री पृथ्वी

(*ii*) कौन रश्मि तुम मेरी बातें सुन रही थीं

(*iii*) हाँ तुमने ठीक पहचाना

(*iv*) सिंहासन से उठकर आखिर बात क्या है

(*v*) मुझे आशीर्वाद दीजिए शक्ति दीजिए कि मैं लोग कल्याण के इस कार्य को करने में सफल होऊँ

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. प्रदूषण की रोकथाम के लिए आप क्या सुझाव देंगे ?
2. क्या सचमुच बुद्धिदेवी प्रदूषण जैसे महादैत्य से छुटकारा दिला सकती है ? स्पष्ट कीजिए।
3. आपकी दृष्टि में प्रदूषण को कम करने में सरकारों की क्या भूमिका होनी चाहिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. प्रदूषण–उन्मूलन सम्बन्धी प्रभावशाली नारे एक चार्ट पर लिखकर कक्षा की दीवार पर लगाइए।
2. तख़्तियाँ बनाकर उन पर सुंदर लिखावट के साथ प्रदूषण– उन्मूलन सम्बन्धी प्रभावशाली नारे लिखें और जब भी स्कूल की ओर से प्रदूषण–उन्मूलन–रैली का आयोजन हो तो इन नारों से समाज को प्रदूषण से मुक्ति के लिए जाग्रत करें।

3. इस एकांकी को स्कूल में उचित अवसर पर मंचित करें।

4. अपने जन्मदिन के अवसर पर एक गमले में बढ़िया-सा पौधा लगाकर उसे स्कूल को भेंट करें।

5. अखबारों, मैगज़ीनों, इंटरनेट आदि से प्रदूषण के भयंकर परिणामों से सम्बन्धित चित्र इकट्ठे करके उनका कोलाज़ बनाइए।

6. 'वैज्ञानिक प्रगति ही प्रदूषण का मुख्य कारण हैं'—
इस विषय पर स्कूल में वाद-विवाद आयोजित कीजिए।
(**नोट :** कक्षा में सभी विद्यार्थियों को इस विषय के पक्ष या विपक्ष में बोलने के लिए 2 मिनट का समय दिया जाए)

7. अपने विज्ञान-अध्यापक की मदद से विज्ञान-प्रयोगशाला में जाकर प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया को समझें।

8. पृथ्वी के पर्यावरण को बचाने हेतु पॉलिथीन का प्रयोग बंद करें, कागज़ का प्रयोग कम करें और रिसाइकल प्रक्रिया को बढ़ावा दें क्योंकि जितनी अधिक खराब सामग्री रिसाइकिल होगी, उतना ही पृथ्वी का कूड़ा कचरा भी कम होगा।

9. स्कूल में आयोजित होने वाले विश्व पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल) तथा विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) में सक्रिय रूप से भाग लें और पर्यावरण स्वच्छता व सुरक्षा सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करें।

10. यदि आप देखें कि किसी फैक्टरी/कारखाने द्वारा किसी भी तरह का प्रदूषण फैलाया जा रहा है तो अपने बड़ों/अध्यापकों आदि की मदद से प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ सम्बन्धित विभाग में शिकायत करें।

11. विश्व जल दिवस, विश्व पृथ्वी दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व ओज़ोन दिवस आदि अवसरों पर लेख, नाटक, कविता, निबन्ध, नारे लेखन, भाषण आदि प्रतियोगिताओं में भाग लें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **खर :** रावण का सौतेला भाई जिसे भगवान राम ने मार गिराया था।
2. **दूषण :** रावण की सेना का नायक जिसे भगवान राम ने मार गिराया था।
3. **त्रेता :** हिन्दू मान्यतानुसार चार युगों (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग तथा कलियुग) में से दूसरा युग।
4. **प्रकाश संश्लेषण :** सजीव कोशिकाओं के द्वारा प्रकाशीय ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में बदलने की क्रिया को प्रकाश संश्लेषण कहते हैं। प्रकाश संश्लेषण वह क्रिया है जिसमें पौधे अपने हरे रंग वाले अंगों जैसे पत्तियों द्वारा सूर्य के प्रकाश की मौजूदगी में हवा से कार्बन डाइऑक्साइड तथा पृथ्वी से जल लेकर जटिल कार्बनिक खाद्य पदार्थों जैसे कार्बोहाइड्रेट्स का निर्माण करते हैं तथा ऑक्सीजन गैस बाहर निकालते हैं।
5. **कार्बन डाइऑक्साइड :** यह एक रासायनिक यौगिक है जिसका निर्माण ऑक्सीजन के दो परमाणु तथा कार्बन के एक परमाणु से मिलकर हुआ है। पृथ्वी के सभी जीव अपनी श्वसन क्रिया में कार्बन डाइऑक्साइड को छोड़ते हैं।
6. **ऑक्सीजन :** यह रंगहीन, स्वादहीन तथा गंधरहित गैस है। जीवित प्राणियों के लिए यह गैस अति आवश्यक है। इसे वे श्वसन द्वारा ग्रहण करते हैं।
7. **सीसा :** सीसा एक धातु एवं तत्त्व है। आयुर्वेद में इसका भस्म कई रोगों में दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग इमारतें बनाने, बंदूक की गोलियाँ तथा वज़न आदि बनाने में भी होता है।

   यह भी जानें कि पेट्रोल और पेंट (रंग) को सक्षम बनाने के लिए जब सीसा का ज़रूरत से ज़्यादा प्रयोग होता है तो इसका स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

8. **रेडियोधर्मिता :** किसी पदार्थ के परमाणु में से अपने आप विकिरणों के कणों का निकलना रेडियोधर्मिता कहलाता है। रेडियम, यूरेनियम तथा थोरियम रेडियोधर्मी पदार्थ हैं। विकिरणों से त्वचा का कैंसर व अन्य रोगाणुजनक रोग हो सकते हैं।

9. **ओज़ोन परत :** पृथ्वी की सतह से 30 किलोमीटर की ऊँचाई पर ओज़ोन की परत है। यह ऊँचाई के साथ-साथ मोटी होती जाती है। यह समतल मंडल में 50 किलोमीटर की ऊँचाई पर सबसे अधिक मोटी है। यह परत पराबैंगनी किरणों को वायुमंडल में प्रवेश करने से रोकने के लिए फिल्टर के रूप में कार्य करती है। इसके न होने अथवा नष्ट होने से हानिकारक पराबैंगनी किरणों द्वारा लोगों में त्वचा के कैंसर का खतरा बढ़ जायेगा।

10. **महत्त्वपूर्ण दिवस**

विश्व जल दिवस	:	22 मार्च
विश्व स्वास्थ्य दिवस	:	07 अप्रैल
विश्व पृथ्वी दिवस	:	22 अप्रैल
विश्व पर्यावरण दिवस	:	05 जून
विश्व ओज़ोन दिवस	:	16 सितम्बर
विश्व प्रकृति दिवस	:	03 अक्टूबर

******